CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

...विध है। ...
...निर्णयकी वैधताको
...ए ब्रिटिश इण्डिया
...लिमिटेडने समादेश
...यर की थी, जिसे
...एन. डी. ओझा तथा
...श्री मुरलीधरने स्वीकार
...
...दयवने अपने निर्णयमें
...दोनों पक्षोंके अधिवक्ता-
...बातपर सहमत हैं कि
...लयके निर्णयको रद्द कर
...सुनवाई करनेके निर्देश
...साथ ही दोनों पक्षों
...साक्ष्य प्रस्तुत करने
...सुलभ कराया जाय।

...सराफा

...१० जनवरी।
...प्रति किलो १५७०)
...प्रतिकिलो १४९०)
...सा १५...)
...प्रति १० ग्राम ८५५)
...प्रति १० ग्राम ८२५)
...
...
फोन—६२८६३

...सराफा बाजार
...भाव

...दिल्ली कार्यालय)
...ली, १० जनवरी।
...ली (प्रतिकिलो)
...ली १४९५)
१४९३)
१४९५)
१४९३)
...

पदम श्री शुक्रवार १२ जनवरीसे
रोजाना ४ शो
रियायती दरपर ★ रंगीन चित्र

हिमालयकी गोदमें

पात्र मनोज कुमार, माला सिन्हा,
शशिकला, डेविड, जयन्त

भारती गुरुवार ११ जनवरीसे
रोजाना १२, ३, ९, बजेरात
रियायती दरपर ★ रंगीन
धार्मिक चित्र

महाभारत

Daily One Show at 6.30 P.M.
CLEOPATRA JONSE

ललिता महान उद्घाटन शुक्रवार
१२ ता० से रोज ४ शो

धर्मेन्द्र, हेमा मालिनी, देवेन वर्मा,
अमरानी एवं शत्रुघ्न सिन्हा, अतिथि

★ नटराजमें ★
कलसे प्रदर्शित होगा
फोन—५५४८९

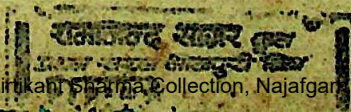

...कल आ...

---

७ वां सप्ताह म...
...म करना और ...
ए. आर. प्रोडक्शन कर्म...

पायल

★ कच्चे ...
पात्र—विनो...
संगीत ★ लक्ष्मी...

गुंजन में ★
दिखाया जा रहा है ★
दिखाया जा रहा है
केवल बालिगोंके लि...

शिवम शुक्रवार
रोजाना...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri

होमें ★ दूसरा शानदार सप्ताह
★ रोजाना ४ शो ★

ीसलाकृत महान चित्र

गे ★ (बिल्कुल नई रंगीन कापी)

मौसमी चटर्जी, कवीर बेदी

ारेलाल ★ गीत ★ आनन्द बख्शी ★

६ घंटे ★ प्रतिदिन प्रातः १० बजे (रंगीन चित्र)

गंजन ★ दूसरा ★ रोजाना ४ शो

Kutikaru Sharma Collection, Nalagarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वर्गीय म० म० श्रीलक्ष्मणशास्त्री तैलङ्गकृत-

सिन्धुवादवृत्तम्

(संस्कृत-व्याख्या एवं हिन्दी अनुवाद सहित)

सम्पादक—

पं० बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

अध्यक्ष-साहित्य विभाग,

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

अनुवादको विषमस्थलटिप्पणीकर्ता च—

पं० जगन्नाथशास्त्री तैलङ्ग

एम. ए., साहित्याचार्य

प्राचीन राजशास्त्र विभाग

सम्पूर्णानन्द संस्कृत-विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रकाशक—

शारदा प्रकाशन संस्थान

वाराणसी

प्रथम संस्करण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशकः—
शारदा प्रकाशन संस्थान,
'शारदा भवन', डी. ३६।४४, अगस्त्यकुण्ड,
वाराणसी—२२१००१
फोन—६७००७

●

संशोधित मूल्य—अजिल्द ५-१०
सजिल्द ६-००

●

प्रथम संस्करण
१९७८

●

(c) सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

●

मुद्रकः—
अनुपम प्रेस,
दुर्गाघाट, वाराणसी-१

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवेदनम्

जयन्ति ते सुकृतनोरससिद्धाः कवीश्वराः।
नाऽस्ति येषां यशःकाये जरामरणजं भयम् ॥

महदिदं सौभाग्यस्थानमस्माकं यदधुना वाराणसेय प्राचीनविद्वत्परम्परा-प्रतिनिधिभूतानां, वश्यवाचां साहित्यविद्यासम्प्रदायाचार्याणां, शिवसायुज्य-मुपेयुषां महाकविमूर्धन्यानां, पूज्यपादश्री६गुरुवरलक्ष्मणशास्त्रितैलङ्गमहानु-भावानां लघुतमां गद्यकथासप्तकसम्मितां सरस-सरलभाषोपनिबद्धां सिन्धुवादवृत्तनामधेयां कृतिं मुद्राप्य सुरभारतीसेवकानामधिकरतलमुपहर्तुं प्रवृत्ताः स्मः।

यद्यपि कृतिरेषा अमरभारत्यां सूर्योदये च यथावसरं प्रकाशिताऽभूत्। परं पुस्तकरूपेण पृथगुपलभ्यमाना नाऽऽसीदिति तत्सङ्कलनमिदं विहितम्। समये समये सुहृद्भिः साहित्यरसिकैश्च पृथगस्या मुद्रणे क्रियमाणोऽनुरोधः सम्प्रति साकारतामाययौ।

पूज्यचरणानां शास्त्रिपादानां विस्तृतपरिचयादिकमत्रैव पृथग् लिखिते हिन्दीभाषामये प्राक्कथने स्फुटीभविष्यति।

इयं साहित्यविद्यापरम्परा काश्यां तेषां पितृचरणैः सुग्रहीतनामधेयैः सुदूरादान्ध्रदेशादागतैर्महाकविकुलशेखरैः श्रीमन्नृसिंहशास्त्रिभिः प्रवर्तिता परिवर्धिता च शिष्येषु फलवती समजायत।

शास्त्रिपादानां द्वौ अग्रजौ भ्रातरौ दिङ्मूलकूलङ्कषयशोविशेषौ म०म० गङ्गाधरशास्त्रि, म०म०रामशास्त्रिणौ स्वग्रन्थनिर्माणादिना शिष्यप्रशिष्य-परम्परया च सर्वत्र विदितानुभावौ समभूताम्। शास्त्रिवराणां सर्वविधासु गद्य-पद्य-रचनासु निरङ्कुशं प्रावीण्यमासीत्। पाश्चात्यभाषाणां मध्ये सहैवांग्ल-भाषया फ्रेंच-जर्मनभाषयोरपि निर्बाधमासीत्तेषां ज्ञानम्। बहुविधाश्च वैदेशिकभाषाप्रबन्धाः सरसया संस्कृतगिरा परिवर्तिताः शास्त्रिवरैः। परं सर्वत्र तेषां संस्कृतभारत्या मौलिकं स्वरूपं, शब्दविन्यासकौशलं, वस्तुवृत्तौप-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निबन्धनशैली, रसानुभवोपपादनं च बलादिव चेतः समावर्जयति परिशीलयतां प्रेक्षावताम् । तेष्वपि 'सिन्धुवादवृत्त'मिदं विशेषतः प्रविविक्षूणां संस्कृत-भाषोद्यानं बालानामुपकाराय नूनं कल्पेत इत्यनुभूय मुद्रापितम् । शास्त्रि-वराणामन्याश्च भूयस्यः कृतयो यथावसरं प्रकाशपदवीमायास्यन्तीति सम्भा-वयामः ।

अस्मिन्निबन्धसप्तके नायकः कथावक्ता सिन्धुवादः, अद्भुतश्च प्रधानो रसः, प्रायः शैली वैदर्भी सर्वत्र वर्तते । नवनवानां शब्दानां विन्यासा व्युत्पत्ति-माधातुं क्षमन्ते । प्रायशो व्यवहारोपयोगिनी परिपाटी च समादृता सर्वत्र । अत्र चतुरमधुरोपन्यासद्वारा पठतां संस्कृतभाषाक्षेत्रे प्रवेशः सुकरः सम्भवतीति प्रत्यक्षानुभवगोचरं भवेदित्येतत् निश्चयेन वक्तुं शक्नुमः ।

शास्त्रिवराणां विषये तेषामेवाऽन्तेवासिभिरस्मत्पितृचरणैर्विद्वच्चरित-पञ्चके समुल्लिखितां सूक्तिमेकामुदाहरमः :—

द्राक्षापाकमुपेयुषीं रसमयीं वाचं यदीयां चिरं,
शृण्वानेव सरस्वती न कुरुते वीणां प्रवीणांकरे ।
विद्वद्वन्द्यनृसिंहशास्त्रिकविताधाटी कुलानुक्रमाद्,
येष्वेवाऽस्ति समाश्रिता कविकुलाचार्येषु सा केवलम् ॥

विद्वच्चरितपञ्चके—म०म० खिस्ते नारायणशास्त्रिणः

एतत्पुस्तकसम्पादने सर्वाङ्गीणं साहाय्यमस्मभ्यं प्रयच्छद्भ्यः श्रीशास्त्रि-पादानां तनयेभ्यः साहित्याचार्यश्रीजगन्नाथशास्त्रितैलङ्गमहोदयेभ्यः परःश-तान् धन्यवादान् निवेदयामः । अस्मत्पूज्यैर्ज्येष्ठसतीर्थ्यैः सम्प्रति वयोवृद्धै-रपि श्रीगौरीनाथपाठकमहोदयैः प्रवर्तिते शारदा-प्रकाशन-संस्थाने चाऽस्य निबन्धसङ्ग्रहस्य प्रकाशनं सम्पद्यत इति परं प्रमोदस्थानम् ।

आशासे गुणगृह्या विपश्चितः सम्भावितान् दोषानपास्य कथासङ्ग्रहममुं दृष्टिदानेन सफलयिष्यन्तीति ।

गुरुपूर्णिमा
संवत् २०३४

विद्वज्जनवशंवदो
बटुकनाथ शास्त्री खिस्ते

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राक्कथन

वंशपरिचय

संस्कृत-साहित्य और उसमें भी काव्य की गरिमा प्राचीन काल से सुप्रसिद्ध है। आचार्यों ने यहाँ तक कहा है कि ऐसा न तो कोई शब्द है या अर्थ, कोई न्याय या कोई कला ही है, जो काव्य के द्वारा अभिव्यक्त न होती हो उनका कथन वास्तव में सत्य है। महाकवि कालिदास, बाण, भवभूति की ख्याति तो सारे संसार में फैली हुई है। परन्तु धन्य है यह भारतभूमि जिसमें विद्या के अंकुर पुनः पुनः प्रस्फुटित और विकसित होकर सहृदयों को रसास्वाद एवं सदुपदेश प्रदान करते हैं।

इसी सन्दर्भ में वाराणसी की विद्वत्प्रसविनी भूमि में आज से डेढ़ सौ वर्ष पूर्व सुदूर आन्ध्र देश से आने वाले महाकवि श्रीनृसिंहशास्त्री मानवल्ली महोदय का नाम संस्मरणीय है। आपका जन्म स्थान बंगलोर के समीप 'यसरगट्टा' नामक ग्राम में था। अठारह वर्ष की अल्प अवस्था में न्याय, वेदान्तादि शास्त्रों के पढ़ने की प्रबल इच्छा से आप काशी आये। इसके पूर्व अपने देश में आपने सम्पूर्ण कृष्ण यजुर्वेद शाखा का अध्ययन तथा व्याकरण, न्याय का साधारण ज्ञान और काव्यशास्त्र तथा काव्यनिर्माण शक्ति का पूरा अभ्यास कर लिया था। यहाँ आकर कुछ ही दिनों में समस्त शास्त्रों का अध्ययन आपने कर लिया एवं काव्यविद्या में तो अपनी असाधारण योग्यता से विद्वत्समाज में प्रमुख स्थान प्राप्त कर लिया।

उस समय के काशिराज श्रीईश्वरीनारायण सिंह जी ने सम्मानपूर्वक आपको अपना सभापण्डित नियुक्त किया। उस समय महाराज के दरबार में हिन्दी के कवियों का बड़ा प्रभाव था, रीतिकालीन रचनाओं की चर्चा अधिक होती थी। महाराज के अनुरोध से आपने हिन्दी का सद्यः अभ्यास कर अठारह हजार छन्दों में 'साहित्य सागर' नामक ग्रन्थ की रचना कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डाली। इसके अतिरिक्त आपके 'काव्यात्म संशोधन' तथा 'शिवभक्ति—विलासटीका' इन दो ग्रन्थों का नाम सुना जाता है।

नृसिंह शास्त्री जी बड़े भाग्यवान् पुरुष थे। उन्हें तीन पुत्ररत्न प्राप्त हुए। तीनों ही लोकोत्तर प्रतिभासंपन्न एवं महाकवि हुए। तथा तीनों को साम्राज्य सम्मान 'महामहोपाध्याय' पदवी प्राप्त हुई थी। प्रथम पुत्र थे जगद्विख्यात् स्वर्गीय महामहोपाध्याय गङ्गाधर शास्त्री सी० आई० ई०, द्वितीय पुत्र थे स्व० महामहोपाध्याय श्रीराम शास्त्री जी तथा तृतीय पुत्र प्रस्तुत निबन्धों के रचयिता स्व० महामहोपाध्याय लक्ष्मण शास्त्री जी थे।

गङ्गाधर शास्त्री जी नित्य प्रातःकाल अपने पिताजी के पूजा के समय नये दो श्लोक बनाकर अर्पण करते थे तभी उन्हें प्रसाद मिलता था, अन्यथा नहीं यह प्रसिद्धि है। श्री गङ्गाधर शास्त्री जी भारतवर्ष के अंगुलिगण्य विद्वानों में अग्रणी थे। आपका चरित्र 'विद्वच्चरितपञ्चकम्' में पूज्य पिताजी ने (म० म० नारायण शास्त्री खिस्ते ने) सविस्तर लिखा है।

द्वितीय पुत्र श्री राम शास्त्री जी भी अपने समय के विशिष्ट विद्वानों में सम्मान्य थे आपने चिरकाल संस्कृत कालेज में अध्यापन कर ख्याति अर्जित की। संस्कृत के छात्रों के अतिरिक्त हिन्दी अंग्रेजी के विद्वान् भी आपसे पढ़ते थे। आचार्य नरेन्द्र देव, पं० केशव प्रसाद मिश्र आदि आपके छात्र थे। आपकी काव्य निर्माण शैली और शब्दार्थों पर अधिकार अद्भुत था। 'सारस्वतीसुषमा' के प्रथम अङ्क में आपका विस्तृत जीवन परिचय दिया गया है।

लेखक और उनकी कृतियाँ

नृसिंह शास्त्री जी के तृतीय पुत्र श्री लक्ष्मण शास्त्री जी का जन्म कार्तिक कृष्ण चतुर्थी वि० सं० १९३७ में हुआ था। आप पिता की सबसे छोटी सन्तान होने के नाते बड़े स्नेहभाजन थे तथा प्राथमिक विद्या का संस्कार पिता से ही आपको मिला। उस समय की परिपाटी के अनुसार आपने यज्ञोपवीत के बाद साङ्ग कृष्णयजुर्वेद का गुरुमुख से अध्ययन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया। आगे का अध्ययन प्रायः आपके ज्येष्ठ भ्राता म० म० गङ्गाधर शास्त्री जी के पास उनके दिवङ्गत पुत्र ढुण्ढिराज शास्त्री जी के साथ संपन्न हुआ। साहित्यशास्त्र के साथ अन्य सभी शास्त्रों में आपने अपनी कुशाग्रबुद्धि से निपुणता प्राप्त की। उस समय आपका घर विद्या का महान् केन्द्र था तथा दूर दूर के प्रतिभावान् छात्र पढ़ने आते थे। आपके सहपाठियों में दार्शनिक सार्वभौम दामोदर लाल गोस्वामी जी, विलक्षण मेधावी म० म० पं० रामवतार शर्मा, म० म० पं० नित्यानन्द पर्वतीय आदि विद्यमान थे। आपकी सबसे बड़ी विशेषता सहजसिद्ध सर्वतोमुखी रचना शक्ति थी। हर शैली में आपकी लेखनी सफलता से चलती थी। गुरुजन भी आपकी रचना की प्रशंसा करते थे। शास्त्री जी ने सन् १९०५ ई० में साहित्याचार्य परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की।

गवर्नमेंट संस्कृत कालेज के ऐंग्लो-संस्कृत विभाग में तथा स्वतंत्र रूप से आपने अंग्रेजी भाषा का अध्ययन किया। साहित्यानुराग तथा बलवती जिज्ञासा से आपने अंग्रेजी, फ्रेंच तथा जर्मन भाषा में पूर्ण ज्ञान एवं नैपुण्य प्राप्त कर लिया। उस समय के 'क्वीन्स कालेज' में जो एम्० ए० तक कालेज था, यूरोप के बड़े बड़े योग्य विद्वान् अध्यापक रहते थे। उनके सम्पर्क में रहकर 'अथवा विद्यया विद्या' इस नीति से उन्हें संस्कृत, पाली, प्राकृत पढ़ाकर उनसे विदेशी साहित्य का ज्ञान आप प्राप्त करते थे। सुप्रसिद्ध विद्वान् प्रो० टर्नर को आपने प्राकृत पढ़ाया था।

शास्त्रीजी की प्रथम नियुक्ति क्वींस कालेज हाई स्कूल में हुई। बाद में क्वीन्स कालेज में आप संस्कृत के प्राध्यापक हुए। आपकी तीव्र बुद्धि, अनेक विषयों का ज्ञान, व्यवहार कुशलता, समय की पाबन्दी तथा असाधारण व्यक्तित्व, इन गुणों से सभी अधिकारी प्रभावित रहते थे। डॉ० वेनिस आदि विद्वान् आपका बहुत सम्मान करते थे। आपके गुणों से आकृष्ट होकर शासन ने चालीस वर्ष की अल्प अवस्था में आपको 'महामहोपाध्याय' पदवी देकर सम्मानित किया। आपकी रचना करते हुए कभी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोचना न पड़ता था। कलम उठाकर आप लगातार पृष्ठ पर पृष्ठ लिखते जाते थे। रचना ऐसी कि जिसमें एक पद भी बदलने की आवश्यकता न हो। जिसे प्राचीन आचार्यों ने काव्य का 'पाक' कहा है—

आवापोद्धरणे तावद् यावद् दोलायते मनः।
पदानां स्थापिते स्थैर्ये हन्त! सिद्धा सरस्वती॥

यह 'रसपाक' आपको स्वभावतः सिद्ध था। आपकी लेखनी आखिरी अवस्था तक चलती रही। कुछ समय तक ज्येष्ठभ्राता के अवकाश काल में संस्कृत कालेज में भी आपने अध्यापन किया था। आपके छात्रों में अनेक बड़े अधिकारी, न्यायाधीश तथा वकील आदि हुए हैं। संस्कृत के विद्वानों में म० म० नारायण शास्त्री खिस्ते, मुकुन्द शास्त्री खिस्ते, जगन्नाथ शास्त्री होशिंग, अनन्त राम शास्त्री वेताल, प्रो० बटुक नाथ शर्मा, प्रो० क्षेत्रेशचन्द्र चट्टोपाध्याय, पं० गौरीनाथ शास्त्री पाठक तथा नेपाल के रामनाथ आचार्य आदि अनेक हुए हैं।

आप प्रसिद्धिपराङ्मुख थे। 'प्लेटफार्म' से यथासंभव दूर रहते थे। तो भी आपकी दूर तक ख्याति थी। बहुत बुलाने पर ही गोष्ठियों में सम्मिलित होते थे। स्वभाव आपका अत्यन्त विनोदप्रिय था हास-परिहास हमेशा चलता था। उत्तम से उत्तम वस्त्रों का परिधान, उत्तम खाद्यपेय की रुचि, स्वच्छता आदि आपके गुण थे। अपने शिष्यों और मित्रों के लिये न जाने कितनी आपने रचनाएं दे दीं। 'गणेशपरिणयम्' नाम का एक नाटक तथा 'गणेशसम्भव' नामक गद्यकाव्य अपने मित्र को पुरस्कारप्राप्ति के लिये आपने लिख दिया था। ऐसे उदार, स्वाभिमानी, यथार्थ महाकवि के लक्षणों से सम्पन्न पुरुष कम ही होते हैं। आपने ७० वर्ष की अवस्था में वै० सं० २००६ के चैत्र शुक्ल प्रतिपत् को काशी में शिवसायुज्य प्राप्त किया। मृत्यु के पूर्व आप केवल दुर्बल हो गये थे तथा आहार की मात्रा कम हो गई थी, कोई रोग विशेष आपको नहीं हुआ। योगी के समान आपने शरीर त्याग किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शास्त्री जी ने समय समय पर अनेक रचनाएं की हैं उनमें अधिकांश पत्र-पत्रिकाओं में मुद्रित हो चुकी हैं, कुछ अमुद्रित भी हैं जो उनके सुपुत्र के पास हैं। 'सूक्तिसुधा' पत्रिका में आपकी निम्नाङ्कित रचनाएँ प्रकाशित हुईं---शरद्-वर्णन, शिशिरदशक (दोनों ऋतु काव्य) सुदर्शनचरित तथा अभिनव वृहत्कथा ये दोनों बड़े काव्य हैं और अपूर्ण हैं। अभिनव-वृहत्कथा में ३६९ आर्याएँ हैं। ये सभी रचनाएँ युवावस्था की हैं। सहस्ररजनी-चरित्र के आधार पर 'सुप्तप्रबुद्धम्' नाम की रचना अयोध्या के संस्कृत कार्यालय से प्रकाशित हुई है।

'अमर भारती' पत्रिका में आपने शेक्सपीयर के नाटकों के श्लोकबद्ध अनुवाद प्रकाशित किये। जिनके नाम हैं---'हेमन्तकुमारः' (हैमलेट्) 'वेतस्वतीसार्थवाहः' (मर्चेंट आफ् वेनिस्) भीमप्रभञ्जनः (दि टेम्पेस्ट) और शिशिरकथा। कालिकादशकम्, रामचन्द्र नक्षत्रमाला, काशिकादण्डकम् रामाश्वधाटी आदि आपकी मनोरम स्तोत्र रचनाएं हैं। इसके अतिरिक्त प्रसूनप्रशंसनम्, निदाघः, उपशल्यशंसनम्, मर्त्येषुभेदः कियान्, आशाविंशतिः, आदि रचनाएँ मानवता के कोमलतम पक्ष का चित्रण करने वाली भावपूर्ण कृतियाँ हैं। 'जगदीश यात्रा' गद्य रचना है। जो काशी से जगन्नाथपुरी तक के गमन का सूक्ष्म मनोरम चित्रण करती है। यह भी अमर भारती में मुद्रित है। आपने 'काव्य प्रकाश' पर टिप्पणी तथा अपने ज्येष्ठभ्राता म० म० गङ्गाधर शास्त्री जी के 'अलिविलासिसंलाप' काव्य के पञ्चम शतक की व्याख्या भी लिखी है। ये दोनों तथा संस्कृत प्रवेशिनी, श्रीमद्-बराऊ वंशप्रशस्ति वर्णन, तर्कभाषा, छान्दोग्य उपनिषद् पर अंग्रेजी नोटस् ये अप्रकाशित हैं। इसके अतिरिक्त समस्यापूर्तियाँ, अनेक पद्यबन्ध तथा स्फुट रचनाएँ हैं।

हमें आशा है कि शास्त्री जी के इस समस्त वाङ्मय का प्रकाशन होगा तथा विद्वानों को यह सुलभ होगा। प्रस्तुत निबन्ध 'सिन्धुवादवृत्तम्' आपके सामने है। इसमें सिन्दबाद की सात समुद्री यात्राओं का सरस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषा में वर्णन किया गया है। साथ में ही नीचे अनुवाद दिया गया है। तथा परिशिष्ट में आवश्यक टिप्पणी भी दी गई है। इसका रचनाकाल सन् १९३६ के मई-जून का समय है। बोल चाल की भाषा में निबद्ध ये कथाएँ छात्रों का व्यावहारिक ज्ञान बढ़ाने मे सहायक होंगी। भाषा ज्ञान के लिये व्यावहारिक-प्रणाली अत्यन्त उपादेय होती है।

शास्त्री जी के वंश में स्व० म० म० गङ्गाधर शास्त्री जी के द्वितीय पुत्र श्री ६ गुरुवर भालचन्द्र शास्त्री जी थे। जिन्होंने राजकीय संस्कृत कालेज में चिरकाल तक सहस्रों छात्रों को पढ़ाया एवं अपनी उज्ज्वल परम्परा को आगे बढ़ाया। आपके पढ़ाये अनेक छात्र आज भी उच्च पदों पर हैं। आपके चरणों के पास बैठकर मुझे भी अध्ययन करने का सुयोग मिला। वर्तमान समय में शास्त्री जी के सुपुत्र पं० जगन्नाथ शास्त्री तैलङ्ग अपनी कुल परम्परा के अनुरूप गौरव की रक्षा कर रहे हैं तथा आनुवंशिक रचनाशक्ति भी आपमें उत्कृष्ट है।

अपने पूज्य पिता जी की इस कृति को पूरी सूचना एवं सामग्री के साथ आपने प्रकाशन हेतु दिया एतदर्थ हम आपके कृतज्ञ हैं।

शारदा-प्रकाशन-संस्थान के संचालक पं० गौरीनाथ पाठक जी संस्कृत ग्रन्थों के उद्धार करने में प्रख्यात हैं। आपने सैकड़ों ग्रन्थों का प्रकाशन-प्रणयन आदि किया है। सम्प्रति आप वयोवृद्ध हैं, आपके आदेश से आपके सुपुत्र श्रीविनोदराव पाठक उत्साह के साथ शारदा प्रकाशन संस्थान को आगे बढ़ाने में तत्पर हैं। भविष्य में इनको सफलता मिले यह शुभकामना है।

अन्त में सुरभारतीसेवकों से प्रार्थना है कि वे इस कृति को स्वीकार कर संस्कृत भाषा के विकास में अपना योगदान देवें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिन्धुवाद की समुद्री यात्राएँ

कथा-संक्षेप

उपक्रम

महाराजा हारीत के शासनकाल में आर्य सिन्धुवाद नामक एक सुख-सम्पन्न ऐश्वर्यशाली व्यक्ति था। उसके दरवार में एक दिन हितवाद नामक एक गरीव पहुँचता है। वह आर्य सिन्धुवाद के अपरिमित ऐश्वर्य को देख-कर आश्चर्य व्यक्त करता है और सोचकर प्रासाद-सेवकों के समक्ष दुःख के साथ कहता है --'एक गरीव दिनभर परिश्रम कर अपने पेट का पालन-पोषण नहीं कर पाता और ये आर्य सिन्धुवाद विना परिश्रम के अपरिमित सुख भोग रहे हैं। आर्य सिन्धुवाद के पास यह चर्चा पहुँचती है। वे हित-वाद को बुलाकर उसका सम्मान करते हैं और अपने वैभव को बनाने में जो उन्होंने कष्ट उठाये हैं उन समुद्री यात्राओं को सभी लोगों को सुनाने का निश्चय करते हैं।

हितवाद का सौ दीनारों से (स्वर्णमुद्रा) स्वागत कर सभी सभासदों के एकत्रित हो जाने पर कथा सुनाना प्रारम्भ करते हैं।

प्रथम यात्रा

आर्य सिन्धुवाद ने वताया कि वे अपनी युवावस्था में पथभ्रष्ट हो गए थे, पैतृक सम्पत्ति नष्ट होती जा रही थी। एक दिन सद्बुद्धि से वृद्धावस्था की चिन्ता हुई और वे उपाय सोचने लगे। तत्पश्चात् उन्होंने समुद्री व्यापारियों के साथ जाकर व्यापार करने का निश्चय किया। अपनी शेष संपत्ति को एकत्रित कर कुछ विक्रेय वस्तुओं को साथ लेकर एक व्यापारी जहाज पर निकल पड़े। मार्ग में एक द्वीप दिखाई देता है और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभी उस पर आनन्द मनाने लगते हैं। अकस्मात् वह द्वीप हिलने लगता है और जल में विलीन हो जाता है। जिसे उन लोगों ने द्वीप समझा था वह एक महाग्राह था। आर्य सिन्धुवाद जल में बहते हुए एक लकड़ी के तख्ते को पकड़कर किसी तरह अपनी जीवन-रक्षा करते हुए एक निर्जन परन्तु कमनीय द्वीप पर पहुँचते हैं। वहाँ पर कुछ लोगों के माध्यम से उनकी भेंट ऐसे लोगों के साथ होती है जो राजा मिहिर की घोड़ियों को सैंधव अश्वों से गर्भधारण कराने के लिए लाये हुए होते हैं। आर्य सिन्धुवाद उन लोगों के साथ राजा मिहिर के दरबार में पहुँचते हैं। राजा भी विपत्ति झेले हुए आर्य सिन्धुवाद का सम्मान करता है। एक दिन वही पुराना जहाज उस तट पर आता है। आर्य सिन्धुवाद अपनी वस्तुओं कोपहचान कर एवं उन्हें प्राप्त कर राजा मिहिर को समर्पित कर देते हैं। राजा मिहिर भी प्रसन्नता से उन्हें यथोचित धनादि से विभूषित कर उसे बिदा देते हैं और आर्य सिन्धुवाद स्वदेश लौटकर सुख-पूर्वक रहने लगते हैं।

दूसरी यात्रा

दूसरे दिन सभी लोगों के एकत्रित हो जाने पर अपनी दूसरी यात्रा की कथा प्रारम्भ करते हैं—वे अकेले बैठे-बैठे ऊब चुके थे इसलिए आर्य सिन्धुवाद सहित सभी यात्री पुनः एक व्यापारी जहाज पर निकल पड़ते हैं। मार्ग में एक निर्जन परन्तु प्रकृतिरम्य द्वीप पर सभी लोग विश्राम करने लगते हैं। आर्य भी एक छायादार वृक्ष के नीचे विश्राम करते हैं। निद्रा-भंग होने पर उन्हें अपना जहाज दूर जाता हुआ दिखाई देता है। वे इस एकाकी द्वीप से निकलने का उपाय सोचने लगे। किसी प्रकार एक जंगली पक्षी के पैरों में अपने को बाँधकर वहाँ से निकलते हैं परन्तु वे एक भयानक अजगरों से भरी घाटी जहाँ हीरे की खानें थीं पहुँच जाते हैं। इस तरह वे एक विपत्ति से दूसरी भीषण विपत्ति में पहुँच जाते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके पास कोई उपाय नहीं था। वे यात्री हीरों को प्राप्त करने की भयानक कथा सुन चुके थे। ऐसे ही कुछ व्यापारी ऊपर की चोटियों से मांस-पिण्डों को फेंक रहे थे। आर्य अपनी बुद्धि का सदुपयोग कर तथा हीरों को समेटकर स्वयं को मांस पिण्डों से लपेट कर पड़े रहे। एक गिद्ध उन्हें उड़ाकर ऊपर की घाटी में ले आया। व्यापारियों ने जब गिद्ध को उड़ा दिया तो आर्य को देखकर सभी आश्चर्य चकित थे। उन्हीं व्यापारियों के साथ घूमते हुए आर्य सिन्धुवाद पुनः वासरपुर पहुँचे और सुखपूर्वक रहने लगे। तीसरी यात्रा सुनाने के लिए सभी लोगों को अगले दिन आमन्त्रित किया और हिंतवाद को भी सौ दीनार देकर पूर्ववत् बिदा किया।

तीसरी यात्रा

सभी लोगों के आ जाने पर आर्य अपनी अगली कथा का वर्णन आरंभ करते हैं। आर्य पुनः निष्क्रिय जीवन से ऊबकर और व्यापारियों के साथ जहाज पर विक्रेय वस्तुएँ लेकर निकल पड़े। मार्ग में जहाज तूफान में फँस जाता है। आसपास के द्वीप सुरक्षारहित थे। वहाँ नरभक्षी वन-मानुषों का निवास था। जहाज को देखते ही तटवर्ती नरभक्षी समुद्र में कूद पड़े। और बलात् जहाज को तट पर ले गए। सभी लोगों को संकेत से जहाज पर से उतार लिया। वहाँ पर अस्थि राशि का पर्वत बना दिखाई दिया। सभी भयभीत थे। वे नरभक्षी प्रत्येक दिन हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति को खाने लगे। आर्य सिन्धुवाद अपने बचाव का उपाय सोच रहे थे। उन्होंने लकड़ी के पटरे की सहायता से अपने शेष नौ सहयात्रियों के साथ निकल भागने की योजना बनाई। रात्रि में उस नरभक्षी की आँखें फोड़कर सभी लोग भाग कर तट पर पहुँचे और भागने में कुछ मरे भी। केवल आर्य सिन्धुवाद अपने दो साथियों के साथ वहाँ से सकुशल निकलकर एक सुन्दर परन्तु निर्जन द्वीप पर पहुँचे। जब वे वहाँ पर विश्राम कर रहे थे उसी समय एक अजगर आकर उनके एक साथी को निगल जाता है। प्राणरक्षार्थ आर्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवं शेष सहयात्री पेड़ पर चढ़ने लगते हैं परन्तु अजगर उस साथी को भी निगल जाता है। अब आर्य अकेले ही रह जाते हैं। उन्हें दूर से जहाज जाता दिखाई देता है। वे कपड़े के संकेत से उसे बुलाते हैं। जहाज पर पहुँचकर वे देखते हैं कि वही पुराना जहाज था जो उन्हें पिछली यात्रा में छोड़ गया था। वे अपनी वस्तुओं का क्रय-विक्रय करते हुए वासरपुर पहुँचते हैं और वैभव-सम्पन्न होकर रहने लगते हैं। वे हितवाद को सौ दीनार देकर दूसरे दिन अगली यात्रा सुनने के लिए आमन्त्रित कर विदा देते हैं।

चौथी यात्रा

सभी सज्जनों के आ जाने पर आर्य सिन्धुवाद अपनी अगली यात्राका वर्णन प्रारम्भ करते हैं। धन प्राप्त करने की प्रबल इच्छा से वे जहाज पर विक्रय वस्तुओं को लेकर निकलते हैं। मार्ग में जहाज पुनः एक तूफान में फँस जाता है और वे लोग एक द्वीप पर आ जाते हैं। वहाँ पर उतरते ही सैकड़ों खड्गधारी पुरुष उन लोगों को घेर कर अपने साथ ले जाते हैं। वे खड्गधारी पुरुष नरभक्षी थे और वे मोटे-ताजे आदमी को मारकर खा जाते थे। आर्य सिन्धुवाद इस भय से कृशकाय हुए जा रहे थे। उन्हें स्वस्थ होने के लिए एक वृद्ध के संरक्षण में रक्खा गया था। एक दिन अवसर पाकर आर्य उस वृद्ध के बार-बार वापस बुलाने पर भी निकल भागे और लगातार सात दिन तक दौड़ने के पश्चात् आठवें दिन समुद्र तट पर जा पहुँचे। वहाँ मिरिच एकत्रित करते हुए कुछ लोगों से उनका परिचय हुआ और वे उन लोगों के साथ राजा के दरबार में पहुँचे और वहाँ पर प्रतिदिन सम्मान एवं धन प्राप्त करते हुए रहने लगे। वहाँ पर आर्य का विवाह एक स्त्री से हो गया। एक दिन एक पड़ोसी की स्त्री मर गई वे उसे सान्त्वना देने गए। पर उन्हें वहाँ एक विचित्र परम्परा मालूम हुई। मरे हुए पुरुष या स्त्री के साथ उसके स्त्री या पुरुष को जीवित गाड़ दिया जाता था। वे अपनी पत्नी के बीमार होते ही मर जाने के भय से भयभीत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहते थे। दुर्भाग्यवश एक दिन उनकी पत्नी मर गई। बार-बार प्रार्थना करने के बाद भी उन्हें पत्नी के साथ गुफा में उतार दिया गया। साथ में थोड़ी भोजन-सामग्री भी थी। इसी प्रकार कई लोग आते रहे। वे जीवित व्यक्ति को मार कर उसका भोजन छीनकर अपना जीवन धारण किए हुए थे। एक दिन उन्हें अपने पास से किसी वस्तु के रेंगकर जाने का आभास हुआ। उस ओर देखा तो दूर से थोड़ा प्रकाश दिखाई दिया। आर्य उसी प्रकाश-छिद्र के पास आए और उसमें से बाहर निकले। वे समुद्र-तट पर थे। एक दिन निकलने का अवसर आया। उन्होंने सभी शवों पर से कीमती वस्त्राभूषण उतार लिये। उन्हे दूर से एक जहाज दिखाई दिया। उन्होंने अपने कपड़े की सहायता से संकेत करके जहाज को रोका। वे एक नाँव की सहायता से जहाज पर पहुँचे। सभी लोग उनके इस प्रकार के धैर्य की प्रशंसा कर रहे थे। इस प्रकार वे घूमते-फिरते स्वदेश वापस पहुँच गए। पूर्व की तरह उन्होंने हितवाद का सौ दीनारों से स्वागत किया और अगले दिन पाँचवीं यात्रा की कथा सुनने को पुनः आमन्त्रित किया।

पाँचवीं यात्रा

पिछली यात्राओं में किराये के जहाज द्वारा उठायी गयी कठिनाइयों के कारण आर्य सिन्धुवाद इस बार स्वनिर्मित जहाज पर कुछ व्यापारियों को लेकर निकले। इस बार पुनः एक निर्जन द्वीप पर पहुँच जाते हैं। वहाँ पर उन लोगों को जंगली पक्षी का एक बड़ा अण्डा दिखाई देता है। उनके साथी उस अण्डे को नष्ट कर देते हैं। थोड़ी देर में उस अण्डे के माता-पिता दूर से आते दिखाई देते हैं। वे करुण क्रन्दन कर रहे थे उसको सुनकर अनेकों पक्षी शोर मचाते आते हुए दिखाई दिये। आर्य सिन्धुवाद एवं उनके साथ के लोग सम्भावित खतरे को देखकर जहाज की ओर भागने लगे। परन्तु उन पक्षियों ने चोंच द्वारा बड़े-बड़े शिलाखण्डों द्वारा प्रहार कर उनका जहाज नष्ट कर दिया। आर्य किसी प्रकार लकड़ी के तख्ते की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहायता से एक दूसरे द्वीप पर पहुँचते हैं। वह स्थान फल-फूलों से परिपूर्ण था। वहाँ उन्हें एक वृद्ध दिखाई देता है। उन्हें देखते ही वृद्ध संकेत से कन्धे पर बैठाकर झील पार कराने के लिए कहता है। वे उसे असहाय समझकर वैसा ही करते हैं। पार पहुँचने पर वह वृद्ध गले पर पैरों का दबाव डालने लगता है। आर्य उसे लेकर कई दिनों तक परेशान हुए। एक दिन उन्होंने अंगूर से शराब बनायी और उसे पीकर अपनी थकान दूर करने लगे। वृद्ध भी माँगता है तो आर्य उसे भी पिला देते हैं जिससे वह आनन्दित होकर पैरों का कसाव ढीला कर देता है। सिन्धुवाद मौका पाकर उसे वहीं पटक देते हैं और छुटकारा पाकर तट पर आ जाते हैं। वहाँ पर पेय जल लेने के लिए रुके हुए यात्रियों के साथ उनकी भेंट होती है और वे उन्हीं लोगों के साथ यात्रा प्रारम्भ करते हैं। रास्ते में नारियल और सीपों का क्रय-विक्रय करते हुए विपुल धन प्राप्त करते हैं और अपने घर पर आकर आनन्द के साथ रहने लगते हैं। पूर्ववत् सभी लोगों के साथ व्यवहार कर अगली यात्रा की कथा सुनने के लिए हितवाद को आमन्त्रण देते हैं।

छठीं यात्रा

आर्य सिन्धुवाद अपनी आगे की कथा में बताते हैं—दुर्भाग्यवश वे पुनः कई लोगों के साथ यात्रा पर निकल पड़ते हैं। जहाज पुनः एक तूफान में फँसकर एक चट्टान से टकरा जाता है और नष्ट हो जाता है। सभी लोग अपनी-अपनी सामग्री लेकर द्वीप पर उतर जाते हैं। इसी प्रकार कुछ दिन बीत जाते हैं और इस शून्य स्थान में भोजन के अभाव में एक एक कर लोग काल-कवलित होने लगे। आर्य अत्यन्त त्रस्त हो गए थे। उन्हें बचने का कोई मार्ग दिखाई न दे रहा था। वे जिस द्वीप में फँसे थे वह बहुत कीमती हीरे-मोतियों से भरा हुआ था। वहीं पर एक नदी चक्कर काटती हुई एक गुफा में विलीन होती दिखाई दे रही थी। आर्य ने कुछ कीमती हीरे-मोतियों को बटोरकर लकड़ी के तख्ते से स्वयं को बाँधकर उस नदी में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाग्य के अधीन करके छोड़ दिया। कई दिनों तक बहते रहने से वे अचेत हो गए और होश आया तो अपने को काले पुरुषों से घिरा पाया। वे घबड़ा गए पर उनसे आश्वस्त होकर और प्रार्थना किए जाने पर उन्होंने अपनी सारी कथा उन्हें सुनाई। वे काले पुरुष आर्य को अपने राजा के पास ले गए। राजा भी सिन्धुवाद के साहस एवं पराक्रम को देखकर अत्यन्त प्रभावित हुआ। आर्य ने अपने साथ लाई बहुमूल्य सामग्री राजा को भेंट देनी चाही परन्तु राजा ने उसे स्वीकार न कर अपनी ओर से प्रचुर धन उपहारस्वरूप दिया। आर्य सिन्धुवाद ने राजा से स्वदेश लौटने की प्रार्थना की। राजा ने भी सहर्ष आर्य सिन्धुवाद को राजा हारीत के नाम पत्र एवं धन सम्पति देकर विदा कियां। आर्य सिन्धुवाद स्वदेश लौटकर अपने साथ लाई हुई सामग्री महाराज हारीत को समर्पित कर आनन्द के साथ रहने लगे। सिन्धुवाद ने अगले दिन अपनी अन्तिम यात्रा सुनाने के लिए सभी लोगों को आमन्त्रित किया।

सातवीं यात्रा

आर्य सिन्धुवाद ने अपने जीवन की अन्तिम यात्रा सुनाना प्रारम्भ किया। आर्य सिन्धुवाद अब वृद्ध हो गए थे। एक दिन महाराज हारीत ने उन्हें बुलाया और कहा—जिस राजा ने मेरे लिए इतना उपहार भेजा है उसे मेरी ओर से कुछ उपहार पहुँचना चाहिए। सिन्धुवाद ने समुद्री यात्रा में होनेवाले कष्टों एवं शरीर सामर्थ्य के अभाव में न जाने के लिए महाराज से क्षमा माँगनी चाही। परन्तु महाराज के अत्यधिक आग्रहवश आर्य सिन्धवाद यात्रा पर निकल पड़े। वे पुनः राजा के दरबार में पहुँचते हैं। महाराज हारीत का पत्र एवं सामग्री उपहार में देकर वापस लौटने लगते हैं। मार्ग में सिन्धुवाद के जहाज को दासों का विक्रय करनेवाले पकड़ लेते हैं और आर्य सिन्धुवाद को एक व्यापारी के हाथ बेच देते हैं। वह व्यापारी सिन्धुवाद से धनुष-बाण की सहायता से हाथियों का शिकार कराता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आर्य सिन्धुवाद के इस प्रकार दो मास बीत जाते हैं। एक दिन वे शिकार के लिए एक सामान्य वृक्ष पर चढ़ जाते हैं। दुर्भाग्यवश उस वृक्ष को जंगली हाथी घेर लेते हैं और उस पेड़ को जड़ से उखाड़ देते हैं। एक हाथी सिन्धुवाद को सूँड़ में उठाकर मरा हुआ जानकर एक घाटी में फेंक देता है। संयोगवश आर्य जीवित बच जाते हैं। वहाँ पर हाथियों की अस्थि का पर्वत उन्हें दिखाई देता है। वे किसी प्रकार दो दिनों में अपने स्वामी के पास पहुँचते हैं। स्वामी आर्य को देखकर बहुत प्रसन्न होता है और उनकी विपदा सुनकर आश्चर्य-चकित होता है। वह आर्य सिन्धुवाद को दासता से मुक्त कर, प्रचुर मात्रा में हाथी दाँत उपहारस्वरूप देकर बिदा देता है। आर्य सिन्धुवाद भी हाथी-दाँत का विक्रय कर विदामपुर पहुँचते हैं और महराज हारीत को अपना वृत्त सुनाते हैं। महाराज आर्य सिन्धुवाद के चरित को स्वर्णाक्षरों में लिखवाकर सुरक्षित रखवाते हैं।

उपसंहार

अपनी यात्रा-कथा को समाप्त करने के पश्चात् आर्य सिन्धुवाद हितवाद से पूछते हैं—मित्र! इतने कष्टों एवं विपदाओं को पार करने के पश्चात् मैंने यह सुख का दिन प्राप्त किया है। क्या तुम अभी भी मेरे इस वैभव को अन्यायपूर्ण समझते हो? हितवाद अपने वचनों के लिए आर्य सिन्धुवाद से क्षमा माँगता है और आर्य प्रसन्न होकर उसे अपने यहाँ द्वारपाल पद पर नियुक्त कर लेते हैं।

—:o:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लाचमणरङ्गम्

सिन्दूरचारुरुचिभि-
जंनयन्नाकालिकीं सन्ध्याम् ।
दलयतु भवतां देवो-
गणेश्वरः सोऽन्तरायौघान् ॥१॥

यत्पादपद्मयुगलीरजः प्रसरमेदूराः ।
शुष्यन्ति विघ्नाम्बुधयः स गणेशोऽस्तु सिद्धिदः ॥२॥

—एतन्निबन्धलेखकस्य

—सिन्दूर के सदृश अरुण वर्ण की प्रभा से असामयिक सन्ध्या काल की सुषमा बनानेवाले भगवान् श्रीगणेश्वर आप लोगों के विघ्नों का निवारण करें ॥ १ ॥

—विघ्नरूपी समुद्र जिनके चरण-कमलों की धूलियों से भर जाने पर सूख जाते हैं । वे भगवान् श्रीगणेश भक्तों के लिए सिद्धिदायक रहें ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिन्धुवादवृत्तम्

उपोद्घातः

श्रीमद्विदामपुरपुरन्दरस्य महाराजाधिराजस्य श्रीहारीतमहीपतेराधिराज्ये वसन् हितवादो नाम कश्चन भारवहनवृत्तिरकिञ्चन एकस्मिन् निदाघदिवसे महान्तं भारं शिरसा वहन् मार्गान्मार्गान्तरं भ्रमन् परिश्रमातिशयक्लान्तघर्मसलिलार्द्रगात्रो विनिःश्वसन् मार्गमेकं सम्मार्जितं प्रस्तरनिबद्धं गन्धजलावसेकसम्भवामोदमेदुरीकृतासन्नवसुमतीपरिसरं समाससाद। तेन च परिमलोद्गारेण किञ्चिदपनीतश्रमोभारं स्वकीयं शिरसोऽवरोप्य सविधस्थितस्यातिरम्यस्यैकस्य हर्म्यस्याधस्तात् विशिश्रमिषुः क्षणं तस्थौ।

उपक्रम

विदामपुर के नरेश महाराजाधिराज श्रीमान् हारीत के शासनकाल में हितवाद नाम का एक गरीब कुली रहता था, जो बोझा उठा कर अपनी जीविका चलाता था। गर्मी में वह एक दिन सिर पर बड़ा बोझा रखकर एक रास्ते से दूसरे रास्ते पर घूमते हुए थकावट के मारे लथपथ हो गया और हाँफते हुए सड़क पर पहुँचा। वह सड़क साफ-सुथरी और साफ पत्थरों से बनी हुई थी। सुगन्धित जल का छिड़काव होने से उसके आस-पास की धरती मन्द सुगन्ध से महक रही थी। उस भीनी महक से उसकी थकावट थोड़ी दूर हो गयी, और अपने बोझ को सिर से उतारकर पास के अत्यन्त सुन्दर एक महल के नीचे विश्राम करने की इच्छा से वह एक क्षण ठहर गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्य च हर्म्योत्तमस्य गवाक्षजालादुदीर्णं श्रोत्रपीयूषायमाणं पिकशुकसारिकामुखखगगणविरुतं मृदङ्गनिनादमिश्रं च सङ्गीतध्वनिमाकर्ण्यान्तःपरिपच्यमानानां भोज्यान्नानामभिनवामोदं चोपाघ्राय सोऽयं 'नूनमिह कश्चित् महान् भोजनोत्सवः प्रचलती'ति मनसाऽऽकलयन् गृहस्वामिजिज्ञासाकुतूहलपरिगृहीतचेता उपसृत्य द्वारदेशमशून्यतां नयतो महार्हवेषान् सेवकपुरुषानेवमप्राक्षीत्—

"भद्राः! कस्य नाम सुकृतिनः सदनमेतत्?" इति।

ते तु साश्चर्यमेनमवलोक्य 'अये! पुरमिदमधिवसन्नपि सकलमहासिन्धुयात्राप्रथितयशसोऽमितवैभवभरस्यार्यसिन्धुवादस्यापि सदनं न जानासि?' इति तमुपजहसुः।

हितवादस्तु मनसि तदीयया भाग्यसम्पदा स्वां शोचनीयतमां दशां तुलयन् खिन्नान्तरङ्ग ऊर्ध्वं विलोक्य सनिःश्वसितं 'विधे,

---

उस श्रेष्ठ महल की खिड़कियों से आनेवाली अमृत के समान शुक, सारिका आदि के चहचहाने की और मृदङ्ग-ध्वनि से मिश्रित सङ्गीत को सुनकर तथा भीतर पकनेवाले खाद्यान्नों की ताजी सुगन्धि को पाकर वह सोचने लगा—'यहाँ निश्चय ही कोई बड़ा भोजनोत्सव चल रहा होगा।' यह सोचकर गृहस्वामी के विषय में जानने की उत्सुकता मन में रखते हुए द्वार पर पहरा देनेवाले बहुमूल्य वेशभूषा धारण करनेवाले सेवकों के पास आकर उसने उनसे पूछा—'सज्जनों यह किस पुण्यात्मा का महल है?'

वे आश्चर्य से उसे देखकर इस प्रकार उसका उपहास करने लगे—"अरे, इस शहर में रहते हुए भी तुम आर्य सिन्धुवाद के महल को नहीं जानते। जिसने सम्पूर्ण सागरों की यात्रा कर खूब यश और अपरमित वैभव अर्जित किया है।"

हितवाद ने मन में उसके ऐश्वर्य से अपनी शोचनीय अवस्था की तुलना करते हुए खिन्न मन से ऊपर की ओर देखकर ठंडी साँस ली और निराशा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कीदृशी सेयं तव वैषम्यप्रवणता ? आप्रभातादादिनान्तं कृतमहा-परिश्रमोऽपि सोऽहं परिवारपोषणमात्रपर्याप्तमपि धनं सम्पादयितु-मक्षमः। यावदयं सिन्धुवादोऽक्लेशलेशमेवमानन्दसम्पदोः परां काष्ठामारोपितः। किं नाम महासुकृतमनेन समनुष्ठितम् ? दुर्भगेन मया वा किमपराद्धम् ? इति नैराश्यनिगीर्ण उच्चैरघोषयत्।

सपदि च हर्म्यान्तरात् समुपेत्य भृत्य एकस्तमेवमब्रवीत्—'भद्र ! किमपि विवक्षुरस्मत्प्रभुरार्यः सिन्धुवादो भवन्तं द्रष्टु-मिच्छति। अनुयाहि माम्' इति।

स तु 'नूनं मदविनयाय भर्त्सयितुमेष समाहूतोऽस्मि' इति मनसा शङ्कमानो 'ननु भारोऽयं मदीयो रथ्यास्थो मय्यभ्यन्तरं गते केनाप्यपह्रियेत' इत्यवदत्। सोऽपि विज्ञाततदभिप्रायस्तस्य रक्षां कर्तुं प्रतिज्ञाय सानुरोधवचनैस्तमन्तः प्रवेष्टुमभिमुखीचकार।

से वह कह उठा—"विधाता, तुम्हारी यह कैसी असमानता है ? जो मैं सुबह से लेकर शाम तक खूब परिश्रम करते हुए इतना भी धन नहीं जुटा सकता जिससे परिवार का पोषण हो और यह सिन्धुवाद जरा भी परिश्रम के बिना आनन्द और वैभव की पराकाष्ठा का उपभोग कर रहा है। इसने कौन सा महापुण्य किया है अथवा अभागे मैंने कौन सा महापाप किया है।"

इतने में महल के भीतर से आकर एक नौकर उससे बोला—'महाशय ! हमारे स्वामी आर्य सिन्धुवाद आपसे मिलने के लिए इच्छुक हैं। आप मेरा अनुसरण करें।"

वह मन में यह सन्देह करने लगा "निश्चय ही मुझे अपनी उद्दण्डता के लिए बुलाया गया है। मेरे भीतर चले जाने पर कहीं सड़क पर रखा हुआ यह बोझा कोई उठा न ले।" सेवक ने उसके इस अभिप्राय को समझते हुए उसके रक्षा की प्रतिज्ञा कर अनुनयपूर्ण वचनों से उसे अन्दर प्रवेश करने के लिए प्रेरित किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तेन प्रदर्श्यमानमार्गो महाभवनमेकं समृद्धभोजनोत्सव-प्रवृत्तभद्रजनं, मध्ये चावस्थितं गभीरमधुराकारमावक्षःस्थललम्ब-मानोच्चकूर्चसञ्चयं तद्गेहाधिपतिं सिन्धुवादं, परिवेषणसंरम्भव्यग्र-परःशतभृत्यवर्गञ्च साश्चर्यं विलोक्य सम्भ्रमाक्रान्तः ससाध्वसकम्पं सिन्धुवादं प्रणनाम। स तु सप्रणयस्मितं तं स्वपार्श्वं उपवेश्य भोजनाय भृशमनुरुरोध।

अथ विरते भोजनप्रसंगे सिन्धुवादो हितवादमुद्दिश्यैवमावभाषे:—

"भद्र! सेयं परमेश्वरस्य पराऽनुकम्पा यदहमिदमनन्यसुलभं सम्पत्सुखमनुभवामि। यत् पुनरुक्तवानसि तदेतदक्लेशलेशं मया-ऽधिगतमिति, तदेतदन्याय्यम्। एतस्याः किलोपार्जनेऽशक्यकल्पना संख्यातिगा विपदोऽनुभूता मया, याः स्मर्यमाणा अपि तनुमुत्पुल-कयन्ति" इति।

वह सेवक उसका मार्ग-प्रदर्शन कर रहा था। उसके सम्मुख एक विशाल प्रासाद था। जहाँ प्रतिष्ठित व्यक्ति शाही भोजनोत्सव में व्यस्त थे। उनके बीच उनके गृहस्वामी सिन्धुवाद बैठे हुए थे। उनकी आकृति गंभीर और आकर्षक थी। उनकी लम्बी दाढ़ी छाती तक लटक रही थी। सैकड़ों नौकर भोजन परोस रहे थे। यह सब आश्चर्यपूर्वक देखकर घबराहट के मारे उसका अन्तःकरण काँप गया और शीघ्रता में उसने सिन्धुवाद को प्रणाम किया। उसने प्रेमपूर्वक मुस्कुराते हुए अपने पास बैठाकर उससे भोजन के लिए अत्यन्त आग्रह किया।

भोजन समाप्त होने पर सिन्धुवाद ने हितवाद से कहा—"महोदय! यह भगवान् की असीम अनुकम्पा है कि मैं दुर्लभ ऐश्वर्य-सुख का अनुभव कर रहा हूँ। परन्तु तुम्हारा यह कहना न्यायोचित नहीं है कि "मैंने यह सुख विना परिश्रम के प्राप्त किया है" इसके अर्जन करने में मैंने उन असंख्य विपदाओं को भोगा है जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। उनके स्मरणमात्र से शरीर काँप उठता है।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथासौ समुपस्थितमतिथिगणं संबोध्यैवमवादीत् ।

"आर्याः ! एषोऽहं साम्प्रतं युष्मन्मनोविनोदनाय श्रमापनोदनाय च मदीयाः सप्तमहांसिन्धुयात्रा असह्यदुःखसन्तानसम्पाता उपवर्णयिष्यामि । शृण्वन्तु भवन्तः" इत्येवमुक्त्वा स स्वां प्रथमां सिन्धुयात्रां वर्णयितुमित्थमुपाक्रमत—

प्रथमा सिन्धुयात्रा

"एषोऽहं यौवनावतारे नानाव्यसनलम्पटतया हापितात्मपित्र्यसम्पदधिकभागः सहसोन्मीलितलोचन ईदृशेष्वकार्येषु धनकालयोर्व्ययेनानुतप्यमानो, वार्द्धके निर्धनतया संभाव्यमानानि तानि तानि दुःखान्यालोचयन् व्यग्रमानसोऽभवम् ।

"श्रेयो निधनं न निर्धनते"ति पितुरुपदेशमसकृत् स्मरन्, तस्य च याथार्थ्यमन्तर्विभावयन्नवशिष्टं गृहतत्परिकरादि सर्वं

और उसने उपस्थित अतिथियों को संम्बोधित करते हुए कहा— "सज्जनो ! मैं इस समय आपके सम्मुख आपका मनोरञ्जन करने के लिए और श्रम दूर करने के लिए अपनी सात समुद्री-यात्राओं को सुनाता हूँ । जिसमें मैंने असह्य दुःख-परम्पराओं को भोगा है । उन्हें आप सुनें" । यह कहकर वह अपनी पहली समुद्री-यात्रा का वर्णन इस प्रकार करने लगा—

पहली समुद्रीयात्रा

मैं जवानी के आरम्भ में अनेक व्यसनों में आसक्त रहने के कारण अपनी पैत्रिक सम्पत्ति का अधिकांश खर्च कर चुका था । अचानक मेरी आँखें खुलीं और इस प्रकार के दुष्कर्मों में धन और समय का अपव्यय करने से मैं पश्चात्ताप करने लगा तथा वृद्धावस्था में निर्धनता के कारण सम्भावित नाना दुःखों की कल्पना करते हुए व्यग्र हो गया । "मरण श्रेयस्कर है किन्तु निर्धनता नहीं" । इस पिताजी के उपदेश को वारंवार स्मरण करते हुए और उसकी वास्तविकता का मन में अनुभव करते हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वस्तुजातं विक्रीय सञ्चितकिञ्चिद्धननिचयस्तेन च क्रीतनानाविधपण्यगणः, सांयात्रिकैः सह कृतपरिचयः, समुद्रयात्राप्रवणमानसो, वासरपुरं नाम सिन्धुरोधःस्थितं नगरवरं गत्वा, वणिग्जनैः संभूय स्वधनव्ययेन सकलोपकरणैः सज्जीकृतं प्रवहणमेकं समधिरूढः सिन्धुयात्रायै प्राचलम्। प्रस्थितमात्र एव समुद्रयात्रापरायणजनसुलभाऽस्वास्थ्यं गतः, किञ्चित्सचिन्तोऽपि कियता कालेन स्वस्थतनुरनेकान्यन्तरीपाणि संप्राप्य वस्त्वन्तरविनिमयेन सहानीतं वस्तुजातं विक्रीय किञ्चिद्धनमुपार्जयम्।

एकस्मिन्नहनि सवेगं वहति पोते तदधिरूढाः सर्वे वयं जलमध्यादुद्गतं हरितवर्णेन तुलितनवशाद्वलस्थलं नातिविशालं द्वीपमेकमद्राक्ष्म। पोताध्यक्षे च पोतगतिं समवरुद्धय तं द्वीपमवरुरुक्षून् काँश्चित् प्रवहणाधिरुढांस्तथा कर्तुं कृतानुमतौ तैः सार्धमहमपि

बचे-खुचे घर और उससे सम्बद्ध चल-अचल सम्पत्ति को बेचकर मैंने उससे कुछ धन एकत्र किया और उसके द्वारा कुछ विक्रेय वस्तुएँ खरीदीं और जहाजी यात्रियों से परिचय बढ़ाते हुए समुद्री-यात्रा करने की इच्छा से उनके साथ वासरपुर नाम के समुद्र तटवर्ती नगर में पहुँचा। व्यापारियों के साथ अपना धन खर्च करके सम्पूर्ण सामग्रियों से सुसज्जित एक जहाज पर सवार होकर समुद्र-यात्रा के लिए चल पड़ा। प्रस्थान के उपरान्त ही यद्यपि समुद्री-यात्रियों को होनेवाली अस्वस्थता का अनुभव कर रहा था और कुछ चिन्तामग्न था तथापि कुछ समय के बाद स्वस्थता का अनुभव करते हुए मैं अनेक द्वीपों में पहुँचा और वस्तु-विनिमय प्रणाली द्वारा प्राप्त सामग्री को बेचकर मैंने कुछ धनोपार्जन किया।

एक दिन जल-प्रवाह के साथ जब हमारा जहाज आगे बढ़ रहा था हम लोगों ने जल के बीच में से निकले हुए एक द्वीप को देखा जो हरे रङ्ग का होने के कारण हरे-भरे चरागाह के समान प्रतीत हो रहा था। जहाज के मालिक के द्वारा उसकी गति रोके जाने पर सभी यात्री उस द्वीप पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्रावतरम् । अथास्मासु भोजनपानादिभिर्विनोदैः सिन्धुयात्राक्लम-मपनयत्सु सहसा विचलन् स द्वीपः कमप्यनुत्प्रेक्षणीयं महाभयसम्भ्रमं जनयामास ।

पोतस्था जनाश्च तं भूमिकम्पमवलोक्य सपदि प्रवहणमारो-ढुमस्मानुच्चैराह्वयन् । स चास्माभिरन्तरीपतया गृहीतो वस्तुतो-ऽनेकगव्यूतिपरिणाहो महाग्राह आसीत् तत्र च केचिच्चपलाः पोत-संप्राप्तये सपदि प्लवानारुरुहुः । परे चात्मानं सिन्धौ निक्षिप्य बाहुभ्यां तरणे तत्परा बभूवुः । अहं तु तत्रैव द्वीपत्वेनाध्यवसिते महाग्राहे स्थितः क्षणात्तस्मिन् सिन्धुतलविमग्ने दैवादधिगतं काष्ठ-फलकमेकमवलम्ब्योत्तालकल्लोलमालाभिरुपर्यधश्च क्षिप्यमाणो दैव-माक्रोशन्नन्यशरणोऽभवम् ।

अत्रान्तरे पोताध्यक्षः पवनमनुकूलमुपलभ्य पोतोपस्थितैः

उतरना चाहने लगे । ऐसा करने की अनुमति मिलते ही उनके साथ मैं भी उस द्वीप पर उतर पड़ा । हम लोग भोजन, जलपान आदि सैर-सपाटों द्वारा जहाजी यात्रा की थकावट को दूर कर ही रहे थे कि अकस्मात् वह द्वीप हिलने-डुलने लगा और उससे कल्पनातीत भयावह स्थिति उत्पन्न हुई ।

जहाज पर सवार लोग उस भूकम्प को देखकर तत्काल जहाज पर सवार होने के लिए हम लोगों को जोर-जोर से पुकारने लगे । जिसे हम लोगों ने द्वीप समझा था वह वस्तुतः अनेकों कोसों (गव्यूति) में फैला हुआ महाग्राह था । उस पर सवार कुछ फुर्तीले लोग जहाज पर पहुँचने के लिए तत्काल नौकाओं पर सवार हुए और दूसरे समुद्र में कूदकर बाहुओं के सहारे तैरने लगे । मैं तो द्वीप के भ्रम में उस महाग्राह पर खड़ा ही था कि इतने में वह महाग्राह समुद्र तल में डूब गया । किन्तु भाग्यवश प्राप्त एक लकड़ी के सहारे उत्ताल तरङ्ग-परम्पराओं से ऊपर-नीचे फेंके जाते हुए अशरण होकर भाग्य को कोसने लगा ।

इसी बीच जहाज के मालिक ने हवा का रुख अनुकूल पाकर जहाज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कतिभिर्जनैः सह मां तस्यामवस्थायामशरणं समुत्सृज्य प्रयाणमकरोत् अहं च तं सकलं दिवसं निशीथिनीं च फलकाश्रयेण प्लवमानो नैर्बल्यनैराश्याभ्यां परिगृहीतः प्रत्यूषे सावशेषतयाऽऽयुषो दुरारोहरोधस्तटं किञ्चिदन्तरीपमासाद्य शाखिप्ररोहावलम्बेन कथङ्कथमपि तीरभूमावात्मानमपातयम् ।

अथोदिते भगवति गभस्तिमालिनि परिश्रमातिशयेन नितान्तं क्लान्तगात्रश्चलितुमप्यक्षमः क्षुत्क्षामकण्ठो मन्दं मन्दं प्रसर्पन् वृक्षावशीर्णानि कानिचित्फलानि जग्ध्वा पीत्वा च दैवात् तत्राधिगतं स्रोतोजलं किञ्चिदुच्छ्वसित इतस्ततो निरूपयन् कञ्चनातिमनोहरं शाद्वलं तत्र च चरन्तीमेकस्यां स्थूणायां संयतां मनोहारिणीं वडवामेकामपश्यम् । सभयकुतूहलं तामुपसृत्य निर्वर्णयन् भूमिगर्भादुत्थितं मनुजशब्दमशृणवम् । एकश्च जनस्तत्क्षणं मामुपेत्य "भद्र !

पर सवार कुछ लोगों के साथ उसी अवस्था में मुझ अनाथ को छोड़कर प्रयाण किया । मैं उस पूरे दिन और रात भर पटरी के सहारे तैरता रहा और दुर्बलता और निराशा ने मुझे घेर लिया । प्रभातकाल में आयुष्य बचा होने के कारण ऐसे द्वीप पर पहुँचा, जिसके तट पर चढ़ना कठिन था किन्तु वृक्षों के जड़ों के सहारे मैंने किसी प्रकार उसके तट पर अपने को पहुँचाया ।

भगवान् सूर्य नारायण के उदय होने पर यद्यपि अत्यन्त परिश्रम के कारण मेरा शरीर खूब चकनाचूर था, मैं चल भी नहीं सकता था । भूख-प्यास के कारण मेरा कण्ठ अवरुद्ध था, ऐसी स्थिति में धीरे-धीरे सरकते हुए पेड़ के नीचे गिरे हुए कुछ फलों को खाकर और दैववश वहाँ प्रवाहित झरने के जल को पीकर मेरे प्राण में प्राण आये । और मैं इधर-उधर निहारने लगा । वहाँ मैंने एक सुन्दर चरागाह को देखा जहाँ एक खूँटी से बँधी सुन्दर घोड़ी चर रही थी । भय और उत्सुकता से उसके पास आकर उसे निहारते हुए मैंने जमीन के अन्दर से आनेवाले मनुष्य के शब्द को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कस्त्वम् ? कुतः समायातः ?" इत्यपृच्छत्। श्रुतमदुदन्तोऽसौ मां हस्तेऽवलम्ब्य कतिपयैरपरैः पुरुषैरधिष्ठितं गह्वरमेकमनयत्। तत्र तेषां सन्दर्शनेनाहमिव तेऽपि मां विलोक्य विस्मितास्तस्थुः।

तदनु तैरुपहृतं किञ्चिदशनं भुक्त्वा मया तत्र निर्जनोद्देशेऽवस्थितिकारणं पृष्टास्त एवमब्रुवन्—

"वयं खलु एतद्द्वीपाधिपस्य महाराजमिहिरस्याश्वपालास्तदीयाः काश्चिद्वडवा गृहीत्वा प्रतिहायनमेतस्मिन् ऋताविहागमनशीलेन सैन्धवेन वाजिना ताः संयोज्याद्भुतनवतुरङ्गोत्पादने नियोजिता इहागच्छामः। आहितगर्भाश्च ता गृहीत्वा भूयस्तं प्रापयामः। एवमुत्पन्ना अभिनवा वाजिनः सैन्धवा नाम कथ्यन्ते। केवलं राजवाह्यतां चोपयान्ति। श्वो वयमितः प्रस्थास्यामहे।

सुना और एक व्यक्ति ने तत्काल ही मेरे पास पहुँच कर पूछा—

"महोदय! आप कौन हैं? और कहाँ से आये हैं।" उसने मेरी कहानी सुनकर मेरा हाथ पकड़कर मुझे ऐसी गुफा में ले गया, जहाँ दूसरे लोग भी थे। वहाँ उन्हें देखकर मैं जिस प्रकार आश्चर्यचकित हुआ उसी प्रकार वे भी मुझे देखकर आश्चर्यचकित हुए। पश्चात् उनके द्वारा लाये हुए भोज्यसामग्री को खाकर जब मैंने उस निर्जन स्थान में रहने का कारण पूछा तब उन्होंने मुझसे इस प्रकार कहा—

"हम लोग इस द्वीप के स्वामी महाराज मिहिर के अश्वपाल हैं और उनकी कुछ घोड़ियों को लेकर प्रतिवर्ष इस ऋतु में यहाँ आनेवाले सैंधव (अरबी) घोड़ों के साथ उनका संयोग कराते हैं। क्योंकि हमलोग अद्भुत नवीन अश्वोत्पादन के लिए नियुक्त किए गए हैं और यहाँ आते हैं। गर्भ धारण के पश्चात् उन्हें लेकर हम पुनः अपने स्वामी के पास पहुँचाते हैं। इस प्रकार उत्पन्न अभिनव अश्व 'सैंधव' कहलाते हैं। ऐसे घोड़े केवल राजा का वाहन ही बन सकते हैं। हम लोग कल यहाँ से प्रयाण करेंगे। भाग्य से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिष्ट्याऽद्य सम्प्राप्तोऽसि। अन्यथा नूनमत्र विजनप्रदेशेऽलब्धजीवन-साधन उपरतोऽभविष्य' इति।

तेषु चैवं वदत्सु सहसा तैरुपवर्णितः स सैन्धवोऽश्वो जलाभ्यन्तरादाविर्भूय ता वडवा आक्रमितुं कृतसंरम्भस्तैरश्वपालैः कोलाहलेन विद्रावितो भूयो जलाभ्यन्तरे न्यमज्जत्।

अन्येद्युर्गृहीतवडवैस्तैः सह तद्द्वीपाधिराजस्य महाराजमिहिरस्य राजधानीं गतोऽहं कृतराजदर्शनः सकुतुकं पृष्टो निखिलं स्वं वृत्तमाख्याय दयार्द्रहृदयेन तेनोदाराशयेन प्रसादीकृतेन द्रविणविसरेण प्रमुदितमनास्तत्रैवाऽवात्सम्। तत्र च वसन् मदेककर्मभिः सार्थवाहैर्विशेषतो वैदेशिकैर्विदामपुरवार्ताजिज्ञासया तदुद्दिश्य गन्तुकामैः कैरपि सह प्रतिजिगमिषया चोपचितपरिचयः सार्द्धः

तुम आज यहाँ पहुँचे हो। अन्यथा निश्चित रूप से बिना जीने के साधन के तुम मर जाते"।

वे इस प्रकार कह ही रहे थे कि इतने में उनके द्वारा वर्णित वह सैंधव अश्व जल के भीतर से निकला और उन घोड़ियों पर आक्रमण करने के लिए प्रयास करने लगा। अश्वपालों के कोलाहल से वह फिर जल के भीतर घुस गया।

दूसरे दिन घोड़ियाँ लेकर वापस जाने वाले उन अश्वपालों के साथ मैं उस द्वीप के महाराज मिहिर की राजधानी पहुँचा और उनका दर्शन किया उत्सुकतापूर्वक पूछे जाने पर मैंने अपनी पूरी कहानी उन्हें सुनाई और उन्होंने दयार्द्र होकर उदार अन्तःकरण से धनराशि उपहारस्वरूप अर्पित की जिससे प्रसन्न होकर मैं वहीं रहने लगा। वहाँ पर रहते हुए मेरे सहकर्मी कतिपय सार्थवाहों के, विशेषतः विदेशी व्यापारियों के साथ जो विदामपुर की खबर जानने की इच्छा से वहाँ जाना चाहते थे उनसे मैंने वापस जाने की इच्छा से परिचय बढ़ाया। तथा सज्जनों का सत्सङ्ग करते हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सङ्गच्छमानस्तद्वार्तालापेनात्मानं विनोदयन् मिहिरराजसभां प्रत्यह-मुपतिष्ठमानस्तत्सामन्तभूमिपालैरधिकारिवर्गैश्च सह परिवर्धित-प्रणयस्तान् स्वदेशवृत्तान्तैर्विनोदयन् कञ्चन कालमयापयम् ।

एवं वहत्यनेहसि सोऽहमेकस्मिन्नहनि पोतावतारसिन्धुरोधसि स्थित आरात् द्वीपमुपसर्पन्तं पोतमेकं दृशोर्विषयतामनैषम् ।

अथावतारितपोतावरोधनकीलेषु पोतवाहेषु पोतगतपण्यराशी-नधितटं प्रापयत्सु वणिग्जनेषु च रोधःस्थितेषु ससम्भ्रमं स्वस्ववस्तु-जातायत्तीकरणप्रवणेषु, विलिखितात्मनामधेयान् समुद्गकान् निरी-क्ष्य त इमे मदीया एव प्रयाणसमये पोतमारोपिताः समुद्गका' इति निश्चित्य प्रत्यभिज्ञाय च तं पोताध्यक्षमहमपृच्छम्—

उन्हीं के साथ वार्तालाप के द्वारा अपना मनोरञ्जन करते हुए मैं प्रतिदिन राजा मिहिर की राजसभा में उपस्थित होने लगा और वहाँ उपस्थित सामन्तों, राजाओं और अधिकारियों के साथ प्रेम बढ़ाते हुए तथा उनका स्वदेश सम्बन्धी वार्ताओं द्वारा मनोरंजन करते हुए मैंने वहाँ कुछ समय बिताया ।

इस प्रकार समय बीत रहा था कि मैंने एक दिन समुद्री बन्दरगाह के तट पर खड़े होकर पास में ही उस द्वीप की ओर आनेवाले एक जहाज को देखा ।

अनन्तर जब जहाज के चलानेवालों ने जहाज को बाँधने वाले लङ्गर (कीलों) को उतार दिया तथा जब जहाज की विक्रेय वस्तुओं को किनारे पहुँचा दिया और उस पर के व्यापारी शीघ्रतापूर्वक उस पर रखी हुई माल की पेटियाँ, जिनपर उनका नाम लिखा हुआ था, उनको लेने लगे । उन्हीं में देखकर मैंने "यह मेरी पेटियाँ है जिन्हें प्रयाण के समय जहाज पर चढ़ाया था" इस प्रकार निश्चयपूर्वक पहचाना तब मैंने उस जहाज के मालिक से पूछा—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"आर्य, कस्यैते समुद्गका ?" इति

स प्रत्युवाच—"एते खलु मत्पोतमधिरूढपूर्वस्य विदामपुर-निवासिन आर्यसिन्धुवादस्य सम्पुटकाः। एकस्मिन्नहनि सिन्धुमध्या-न्निर्गत्यावस्थितं महाग्राहमेकं भ्रमादन्तरीपं मन्वानेष्वस्मासु कतिपये सिन्धुवादसहितास्तत्राऽवतीर्य पाकादिक्रियां कर्तुमारभन्त। तत्ता-पेनोद्विग्नश्च स ग्राहः सहसैव सिन्धुतले न्यमज्जत्। तस्मिन्नतिघोरे सङ्कटे तेषु बहवो जनाः सिन्धुतलं प्रापुः ससिन्धुवादाः। साम्प्रतं तदीयं पण्यराशिमेतत्समुद्गकसन्दोहस्थं विक्रीय तल्लाभरूपमखिलं वसु यः कश्चन तस्य रिक्थहरस्तस्मै प्रतिपाद्य विगतचिन्तो भवितु-मिच्छामि" इति।

अहं तमवदम्—"आर्य! सोऽहं सिन्धुवादो यं भवानुपरतं मन्यते। तदेते मदीयाः संपुटका" इति। स पुनः "अहो अलीक-परतास्वार्थपरस्य जनस्य! ननु साक्षात्कृततद्विनाशेन मया कथङ्कारं

"महोदय, ये किसकी पेटियाँ हैं ?"

उसने उत्तर दिया—"मेरे जहाज पर सवार होनेवाले विदामपुर के निवासी आर्य सिन्धुवाद की ये पेटियाँ हैं। एक दिन समुद्र के बीच से निकले हुए महाग्राह पर जिसे हम लोगों ने भ्रम से द्वीप समझ लिया था उनमें से सिन्धुवाद के साथ कुछ लोग वहाँ उतरकर रसोई आदि बनाने लगे। उसकी गर्मी से घबड़ाकर वह ग्राह अकस्मात् समुद्र की तलहटी में डूब गया। इस भयावह विपत्ति में बहुत से लोग सिन्धुवाद के साथ समुद्र की तलहटी में पहुँच गए। इस समय इन पेटियों में रखे हुए उसकी विक्रेय वस्तुओं को बेचकर उसके लाभ का धन जो कोई उसका उत्तराधिकारी होगा उसे सौंप कर मैं निश्चिंत होना चाहता हूँ।

मैंने उसे कहा—"महोदय! मैं ही वह सिन्धुवाद हूँ। जिसे आप मृत समझते हैं। ये मेरी ही पेटियाँ हैं।"

वह फिर अविश्वासपूर्वक बोला—"अरे, स्वार्थी लोग कितने झूठ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भवान् श्रद्धीयताम्" ? इति सोल्लुण्ठमवदत् ।

"अहं च तं मामेवमश्रद्धधानं सकलं भूतार्थमवर्णयम् । मद्वचनाकर्णनविगतभ्रमोऽसौ मां निर्वर्ण्य प्रत्यभिजानन् सप्रमोदमुवाच—

"दिष्ट्या भवांस्तां प्रतिभयां विपदं समुत्तीर्णः । क्षमस्व मद्विनयम् आयत्तीकुरु च स्वपण्यगणम्" इति । कृतज्ञतया मया प्रदीयमानं किमपि पारितोषिकं सविनयमसौ प्रत्याचख्यौ ।

तेषु च पण्यद्रव्येषु कानिचिन्महार्घाणि मिहिरमहीपतये समुपहृत्य विज्ञाततदागमवृत्तेन प्रसन्नात्मना तेन सादर बहुमानं वितीर्णप्रचुरविभवस्तमामंत्र्य भूयस्तदेव प्रवहणमधिरूढः पण्यविनिमयेन संगृहीतचन्दनकर्पूरमरिचमुखतत्रत्यवस्तुनिचयस्ततः प्रस्थितो वर्त्मनि नैकान् द्वीपान् विलोकयन् वासरनगरमेत्य ततः प्रयातः स्वं

बोलते हैं । मैंने स्वयं उसकी मृत्यु को देखा है । मैं आप पर किस प्रकार विश्वास करूँ ।"

मैंने मेरे ऊपर अविश्वास करनेवाले उसको सम्पूर्ण वास्तविकता समझाई । मेरा वचन सुनकर उसका भ्रम दूर हो गया । और मुझे देख और पहचान कर हर्षपूर्वक बोला—

"भाग्य से आप उस भयावह विपत्ति को पार कर गए हैं । आप मेरे अविनयपूर्ण आचरण को क्षमा करें और अपनी वस्तुएँ अपने अधीन करें।"

कृतज्ञता के कारण मेरे द्वारा दिये हुए स्वल्प पारितोषिक को भी उसने विनय पूर्वक लेना अस्वीकार कर दिया ।

उन विक्रेय वस्तुओं में से कुछ बहुमुल्य वस्तुओं को राजा मिहिर को उपहार के रूप में मैंने समर्पित किया । उन व्यापारियों के आगमन के वृत्तान्त से वे प्रसन्न हो गए और उन्होंने मुझे सादर प्रचुर धन समर्पित किया । मैं उनसे विदा लेकर उस जहाज पर फिर से सवार हो गया और विनिमय प्रणाली से चन्दन, कपूर, मरीच आदि वस्तुओं का संग्रह कर वहाँ से निकल पड़ा । वहाँ से मार्ग में अनेक द्वीपों का अवलोकन करते हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सदनं प्रत्यागमम्। अनया च यात्रया समुपार्जितलक्षाधिकदीनारोह-ऽहमिदं हर्म्यवरं दासान् दासीश्च परःशताः क्रीत्वाऽत्र प्रतिष्ठितो-ऽभवम्। विस्मृत्य चानुभूतपूर्वाः समस्ताः विपदः सुखोपभोगैक-प्रवणोऽवसम्।"

इत्येवमुक्त्वा स सिन्धुवादो भूयः पानभोजनसङ्गीतप्रभृतिभिः कञ्चनकालमात्मानं विनोद्य सर्वांस्तान् समेतानतिथिवरान् विसृज्य शतं दीनारान् हितवादाय प्रदाय "भद्र! गृहाणेतत्किमप्यस्मत्प्रणय-चिह्नम्। श्वः पुनरागम्यताम्। अहं भूयोऽप्यात्मवृत्तं श्रावयि-तास्मि" इत्युक्त्वा तं स्वगृहं गन्तुं समनुमेने।

सानन्दो हितवादोऽन्येद्युर्विधृतविमलनववेषः पुनस्तद्गृहं गतस्तेन स्निग्धया दृशा स्वागतीकृतः कृतकृत्यमात्मानममन्यत।

अथ समुपस्थितेष्वन्येषु सभ्यजनेषु सिन्धुवादोऽब्रवीत्—अद्याहं

वासर नगर आया। वहाँ से प्रस्थान कर अपने घर पहुँचा। इस यात्रा से मैंने लाखों दीनार (गिन्नी) अर्जित किए और उनके द्वारा इस महाप्रासाद तथा सैकड़ों दास-दासियों को खरीद कर यहाँ प्रतिष्ठापूर्वक रहने लगा। इस समय पूर्वानुभूत समस्त आपत्तियों को भूलकर मैं अत्यन्त सुख का उप-भोग कर रहा हूँ।"

यह कहकर सिन्धुवाद ने पुनः पान, भोजन, सङ्गीत आदि के द्वारा कुछ समय तक अपना मनोरंजन कर उन अतिथियों को बिदा कर सौ दीनार हित-वाद को देते हुए उससे कहा—"महोदय! हमारा यह स्वल्प प्रेमोपहार आप स्वीकार करें। कल पुनः आइये। मैं पुनः आपको अपनी कहानी सुनाऊँगा। ऐसा कहकर उन्होंने उसे अपने घर जाने की अनुमति दी।

दूसरे दिन हितवाद आनन्द के साथ स्वच्छ वेशभूषा में पुनः उसके घर गया। स्नेहमयी दृष्टि से उसके द्वारा स्वागत किये जाने पर अपने को कृतकृत्य समझा।

पश्चात् सभासदों के उपस्थित होने पर सिन्धुवाद ने उनसे कहा—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मामकीं द्वितीयसिन्धुयात्रां प्रथमयात्राया अप्यधिकं चमत्कारिणी-मुपवर्णयिष्यामि। श्रूयताम्—

द्वितीया सिन्धुयात्रा

"प्रथमयात्रोत्तरमिह विदामपुरेऽवशिष्टमायुः सानन्दं यापयितुं कृतसङ्कल्पोऽपि कैश्चिद्दिनैर्निरुद्यमावस्थानेन परिक्लान्तो भूयोऽपि सिन्धुयात्रोत्सुकः पण्यवस्तूनि संगृह्य एकस्मिन् दिवसे प्रामाणिकैः कैश्चित् सार्थवाहैः सह प्रवहणमारुह्य यात्रायै निरगमम्।

द्वीपाद् द्वीपं परिभ्रमन्तः सलाभं विनिमयेन पण्यजातं विक्रीणानां वयमेकस्मिन् दिने द्वीपमेकं फलभारावनमितैर्महीरुहैः समाच्छन्नमपि नितरां निर्जनं संप्राप्नुम। अथास्मत्सहचरेषु वन-स्थल्यां फलकुसुमावचयपरेषु सहानीतं किञ्चिदशनजातं गृहीत्वा

"आज मैं आपको अपनी दूसरी समुद्री यात्रा की कहानी सुना रहा हूँ जो पहली यात्रा से भी आश्चर्यकारक है। सुनिये·····

दूसरी सिन्धुयात्रा

मैंने यद्यपि पहली यात्रा के बाद ही विदामपुर में अवशिष्ट आयुष्य आनंद-पूर्वक बिताने का संकल्प किया था तथापि कुछ दिनों में ही बेकार खाली बैठने के कारण थक गया और फिर से समुद्री यात्रा करने के लिए इच्छुक होकर विक्रेय वस्तुओं का संग्रह कर एक दिन कुछ प्रामाणिक समुद्री यात्रियों के साथ जहाज पर सवार होकर यात्रा के लिये निकल पड़ा।

एक द्वीप से दूसरे द्वीप घूमते हुए लाभ के साथ विनिमय द्वारा विक्रेय वस्तुओं को बेचते हुए हम लोग एक दिन ऐसे प्रदेश में आ पहुँचे जो फलों के बोझ से झुके हुए वृक्षों से घिरा होनेपर भी अत्यन्त निर्जन था। पश्चात् जब मेरे मित्र उस अरण्य-भूमि में फलफूल आदि बटोरने में लगे उस समय साथ में लाई हुई कुछ खाद्यसामग्री को लेकर एक छायादार झरने के किनारे बैठा हुआ मैं खा-पीकर अपनी थकावट दूर करते हुए वहाँ सो गया। जागने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घनच्छायस्य कस्यचित् स्रोतसस्तटभूमौ स्थितोऽहं भुक्त्वा पीत्वा चापनीतश्रमो निद्रापरवशोऽभवम्। प्रबुद्धश्च प्रवहणमनालोकयन् विस्मयाक्रान्तः सहचरवर्गमन्विष्यंस्तानप्राप्येतस्ततः परिपश्यन् विदूरे महता वेगेनापसर्पत्तत्प्रवहणमद्राक्षम्। क्रमशश्चैतददृश्यतां गतमभिवीक्ष्य निराशतामगच्छम्।

ईदृशीं विषमां दशामनुप्रपन्नोऽवसितजीविताशः शुचा तारस्वरेण क्रन्दन् शिरस्ताडयन् शङ्काशताकुल आत्मानं मुहुर्मुहुरेतद्यात्राचापलाय विनिन्दन् कर्तव्यमूढः कञ्चन वृक्षमारुह्य सर्वतः पश्यन्नुपरि महाकाशमधश्च महासिन्धुमन्तरेण न किमपि दृष्टिपथं नयन् आराद्रोधसि स्थितं किमप्यवदातं वस्तु निरीक्ष्य तरोरवतीर्णो गृहीताशनजातशेषः किमेतदिति बुभुत्सुस्तत्सकाशमुपासरम्। उपसृत्य च हस्तशतप्रमाणमतिमसृणतया दुरारोहं किमपि वस्तु समालोकयम्।

के बाद उस जहाज को न देखकर आश्चर्य चकित होकर अपने सहयात्रियों को खोजने लगा और उन्हें न पाकर इधर-उधर देखते हुए मैंने बहुत दूर अत्यन्त वेग से बहने वाले उस जहाज को देखा। क्रमशः उस जहाज को आँखों से ओझल होता देखकर मैं निराश हो गया।

इस कठिन परिस्थिति में पहुँचकर मैं जीवन से निराश हो गया और शोक से उच्च स्वर में आक्रोश करते हुए सिर पटकने लगा। उस समय मैं सैकड़ों शंकाओं से घिरा हुआ था और बारंबार मैं इस यात्रा की चपलता के लिए अपने को कोस रहा था। किंकर्तव्यविमूढ़ होकर मैं एक वृक्ष पर चढ़कर चारों ओर देखते हुए ऊपर की ओर विशाल आकाश और नीचे की ओर महासमुद्र को छोड़कर कुछ भी नहीं देख सका। पास में ही किनारे पर कुछ सफेद वस्तु को देखकर वृक्ष से उतरते हुए अवशिष्ट खाद्य सामग्री खा कर 'यह कौन सी वस्तु है' इस प्रकार उसे देखने की इच्छा से उसके पास पहुँचा। पहुँचकर एक ऐसी वस्तु देखी जो सौ हाथ की थी तथा फिसलनभरी होने के कारण उस पर चढ़ना कठिन था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथास्ताभिमुखे भगवति भास्वति दुर्दिन इव सहसा तमोव्याप्ता दिशो भयमुदपादयन्। अकस्माच्च मदभिमुखं सवेगमापतन्तमतिमहापरिणाहं पक्षिविशेषमवलोक्य विस्मितोऽभवम्। पूर्वं पोतवाहेभ्यः श्रुतैतादृशमहाशकुन्तवृत्तान्तोऽहं तद्भवदातं वस्तु तस्यैवाण्डं निरधारयम्। कियत्या च कालकलया विटपिस्कन्धविशङ्कटनखपञ्जरः स महाशकुन्तस्तस्मिन्नण्डे समुपाविशत्। क्षणाच्च निद्रयाऽपाह्रियत। अहं शनैस्तमुपगत्य स्वशिरस्थचीरपट्टिकयाऽऽत्मानं तन्नखपंजरेऽबध्नाम्। 'कदाचित् प्रभात आहारान्वेषणायोत्पतिष्यतोऽस्य साहाय्येनास्मादतिनिर्जनात् स्थानाद्विनिर्मुक्तो भवेयम्' इति चेतसाऽऽशाज्ञानः प्रभातं प्रतीक्षमाणो निशीथिनीं तां तथैवाऽस्थाम्। प्रत्यूषे च वस्तुतस्तेन शकुन्तप्रकाण्डेन सवेगमदृष्टभूमिभागे नभसि समुह्यमानो निश्चेतन इवाभवम्। अथावतीर्णमात्रः

पश्चात् जब सूर्यनारायण अस्ताचल चले गए तब दुर्दिन के समान अकस्मात् अन्धकार से भरी हुई दिशाएँ भय उत्पन्न करने लगीं। अकस्मात् मेरी ओर वेगपूर्वक आनेवाले एक अत्यन्त विशाल पक्षी को देख कर मैं आश्चर्यचकित हो गया। पहले मैंने नाविकों से इस प्रकार के विशाल पक्षी की कहानी सुनी थी। अतः मैंने यह निर्णय कर लिया कि यह सफेद वस्तु उसी का अण्डा है। कुछ क्षण में वह विशाल पक्षी वृक्षशाखाओं के समान विशाल नख-पञ्जर रखते हुए उस अण्डे पर बैठ गया और थोड़ी देर में वह सो गया। मैंने धीरे-धीरे उसके पास आकर अपनी पगड़ी के वस्त्र खण्ड द्वारा स्वयं को उसके नखपञ्जर में बाँधा कि कदाचित् प्रातःकाल में भोजन खोजने के लिए उड़नेवाले उसकी सहायता से "इस निर्जनस्थान से छुटकारा पाऊँ।" मन में यह आशा रखते हुए प्रातःकाल की प्रतीक्षा करते हुए मैंने उस रात्रि को उसी प्रकार बिताया। प्रभात के समय वस्तुतः वह पक्षी वेगपूर्वक आकाश-मार्ग से अदृश्य प्रदेश की ओर मुझे ले जाने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स सपदि कर्तितात्मबन्धने मयि सहसा दृष्टमाशीविषमेकमत्यायतं समाक्रम्य चञ्चूपुटेनोद्वहन्नदृश्यतामयासीत् ।

अहं तु क्वचिदुपत्यकायामभितो गगनभेदिभृङ्गैर्दुरधिरोहैः शिलोच्चयैः परिवृतायामशक्यनिर्गमनायामेकाकी पतितस्तया देशान्तरपरिवृत्त्या न मनाक् प्रसन्नः केवलं भागधेयमात्मीयमाक्रोशन् कञ्चित्कालं स्तम्भितमतिरतिष्ठम् ।

अथोत्थितोऽहमितस्ततः परिक्रामँस्तं प्रदेशमतिस्थूलप्रमाणैरसमसुषमैर्हीरकनिकरैर्व्याकीर्णं साश्चर्यमवालोकयम् । तांश्च सकौतुकं निर्वर्णयन्नदूरे दन्तावलनिगरणपर्याप्तायाभिमुखकन्दरानप्तिपृथून् परःशतानजगरान् विलोक्य साध्वसाधीनोऽभवम् । ते ह्यजगराः पूर्वोपवर्णिततत्सहजवैरिपतत्रिभयविह्वला दिवसं गिरिकन्दरासु निगूढा

लगा और मैं अचेतन हो गया । उतरते बराबर ही जब मैंने अपने बन्धन तत्काल काट लिये उस समय अकस्मात् उसने एक विशाल सर्प को अपनी चोंच से पकड़ा और उड़ चला ।

मैं तो अकेले ऐसे घाटी में पड़ा हुआ था जो चारों ओर से कठिनता से आरोहण योग्य गगनचुम्बी शिखरों और चट्टानों से घिरी हुई थी तथा उसमें से निकलना कठिन था । मैं उस यात्रा से जरा भी प्रसन्न नहीं था और अपने भाग्य को कोस रहा था । कुछ समय तक मेरी बुद्धि कुण्ठित हो गई थी ।

पश्चात् उठकर मैंने इधर-उधर घूमते हुए आश्चर्यपूर्वक देखा कि वह प्रदेश अत्यन्त सुन्दर बड़े-बड़े हीरों के समूहों से पटा हुआ है । उनको आश्चर्यपूर्वक देखते हुए पास में ही सैकड़ों विशाल अजगरों को देखकर मैं भयपरवश हो गया । गुफाओं के समान जिनके जबड़े इतने लम्बे-चौड़े थे जिनमें हाँथी निगलने के बाद भी पर्याप्त स्थान रहता था ।

वे अजगर पूर्ववर्णित उनके सहज शत्रु (गरुड़) पक्षियों के भय से आकुल होकर दिन में पहाड़ी गुफाओं में छिपे रहते थे और अन्धेरा होने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्धकारावतारे ततो निष्क्रामन्ति। अहं तस्यामुपत्यकायां भ्रमन् यथावसरं विश्राम्यन् सकलं तं दिवसमयापयम्। अस्तङ्गते च रवौ किञ्चिद्देवखातमुपलभ्य शिलयैकया पिहिततत्सङ्कुचितद्वारः सर्पभयात् कथञ्चिदात्मानं सुरक्षितं मन्यमानः सहानीतं किञ्चिद्भोज्यं भुक्त्वाऽऽशीविषफूत्कारजनितसाध्वसोद्वेगो जाग्रदेव कथमपि तां निशामनैषम्। उदिते च भगवति दिनकृति विनिर्गतेषु च तेषु कालसर्पेषु सातङ्को हीरकखण्डेषु परिभ्रमन्नपि तानि ग्रहीतुमनुदितोत्साहलेशा रात्रिजागरेण भृश क्लान्त एकस्यां शिलायां पतित्वा निद्रितो मत्सविधे पततो महतो मांसखण्डस्य तारशब्देन प्रबुद्धो गिरितटेभ्यः पतन्ति बहून्यपराणि मांसखण्डानि पश्यन् विस्मित आसम्।

पूर्वं नाविकगणैर्वर्णितायां हीरकोपत्यकायामत्र च वणिग्जनैर्हीरकसम्पादनाया श्रीयमाणे चित्रेभ्युपायेऽश्रद्धालुरभवम्। स-

---

पर वहाँ से बाहर निकलते थे। मैंने उस घाटी में घूमते हुए और अवसर पाकर विश्राम करते हुए पूरा एक दिन बिताया। सूर्य के अस्ताचल चले जाने पर एक गुफा देखी। एक चट्टान से उस (गुफा) के द्वार को ढँकते हुए, अजगरों के भय से किसी प्रकार अपने को सुरक्षित समझते हुए, साथ में लायी हुई भोज्य-सामग्री को खाकर अजगरों के फुँकार से उद्विग्न होकर मैंने जागते हुए वह रात किसी प्रकार बितायी। सूर्योदय होने पर और उन काल-सर्पों के चले जाने पर भयभीत होकर उन हीरे की चट्टानों पर घूमते हुए भी मेरे मन में उन्हें उठाने का जरा भी उत्साह नहीं था। रात में जागने के कारण मैं खुद थक गया था। अतः एक चट्टान पर चढ़कर मैं सो गया और पास में ही विशाल मांसखण्ड के गिरने के शब्द से मैं जाग गया। पहाड़ी चट्टानों से दूसरे मांसखण्डों को भी गिरते हुए देखकर मैं आश्चर्यचकित हो गया।

पहले जहाजी यात्रियों ने इस हीरे की घाटी का वर्णन किया था

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपायो यथा वणिजो हि साहसिनोऽभितो गिरीन् समधिरुह्य ततो मांसखण्डान्यध उपत्यकायां निपात्य संसक्तानेकहीरकखण्डेभ्यस्तेभ्यो महागृध्रैः सन्निपत्य गिरितटस्थान् कुलायान् नीतेभ्यस्तान् कोलाहलेन ततो विद्राव्य हीरकखण्डान्यात्मसात् कुर्वन्ति। तदेतत्सर्वमविश्वसन्नहं साम्प्रतं प्रत्यक्षीकुर्वन् संगृहीतस्थूलतमहीरकनिचय आत्मत्राणाय कैश्चिदतिपृथुलैर्मांसखण्डैरात्मानमावेष्ट्य गृध्रपातं प्रतीक्षमाणो निश्चेष्टोऽपतम्।

अथापतिते तत्र गृध्रगण एकस्तेषु स्थविष्ठो मांसखण्डसमावेष्टितं मां चञ्च्वा विधृत्योपरि गिरिगतं स्वं नीडमनैषीत्। वणिजश्च कोलाहलं विदधुः। विद्राव्य च तं गृध्रं तत्र समेतास्ते मां तथाविधं विलोक्य चकिता बभूवुः। मत्तश्च श्रुतनिखिलवृत्तान्तास्ते मद्धैर्यसाहसाध्यवसायांश्चिरं प्रशशंसुः।

और व्यापारियों द्वारा हीरों को प्राप्त करने के लिए किया जानेवाला विचित्र उपाय मैं सुन चुका था। उसके प्रति मेरे मन में जरा भी विश्वास नहीं था। वह उपाय यह है कि साहसी व्यापारी चारों ओर से पहाड़ों पर चढ़कर वहाँ से इस घाटी में मांसखण्डों को गिराते थे। उन मांसखण्डों में अनेक हीरे चिपक जाते थे। उन्हें विशालगिद्ध उड़कर पहाड़ी किनारों के घोसलों की ओर ले जाते थे। उन्हें बीच से ही शोरगुलद्वारा उड़ाकर वे उन हीरों को आत्मसात् करते थे। इन सब बातों पर मैं जरा भी विश्वास नहीं करता था। परन्तु इस समय मैं उन्हें प्रत्यक्ष देख रहा था। मैंने आत्मरक्षा के लिए पहले कुछ बड़े हीरों को बटोरकर उन एकत्रित विशालतम हीरों की राशि में अत्यन्त विशाल मांसखण्डों के द्वारा अपने को लपेट लिया तथा गिद्धों के आने की प्रतीक्षा करता हुआ वहाँ निश्चेष्ट पड़ा रहा।

अनन्तर गिद्धों के झुण्ड के वहाँ आने पर उनमें से एक स्थूलकाय गिद्ध मांस खण्डों से लिपटे हुए मुझे चोंच द्वारा पकड़कर ऊपर पहाड़ में स्थित अपने घोंसले में ले गया। व्यापारियों ने वहाँ कोलाहल किया। उस गिद्ध

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तैर्वणिग्जनैः स्वशिविरं नीत्वाऽऽतिथ्येन सम्भावितस्तां क्षपां तैः सार्धमतिवाह्य मदीयपृथुलहीरकैर्विस्मितान्तरङ्गास्तान् कैश्चन हीरकोपहारैः परितोष्य तादृशातिघोरविपदोऽभिमुक्तये भगवन्तमन्तःस्तुवन् सूर्योदये तैः सह ततः सम्प्रस्थितः सकुशलमासन्नस्थितां पोतावतारभुवं सम्प्राप्तः पोतमेकमारुह्य कर्पूरतरुभिः पूरितं, घोणाग्रवर्तिपृथुशृङ्गबलात्करीन्द्रविदारणक्षेपणसमर्थैरनल्पैर्गण्डकैः समाकीर्णं रोहणं नाम द्वीपविशेषं पश्यन् कैश्चिद्धीरकाल्पखण्डैस्तद्द्वीपसुलभं वस्तुजातं संगृह्य कतिपयैर्दिवसैर्वासरपुरं ततश्च स्वनिवासभुवं विदामपुरं प्रत्यासदम्।

एवं सिन्धुवादः स्वां द्वितीयां सिन्धुयात्रामुपवर्ण्य हितवादाय

को उड़ाकर जब वे वहाँ एकत्र हुए तो उस अवस्था में मुझे देखकर उन्हें आश्चर्य हुआ। मेरे द्वारा समस्त कहानी सुनकर उन्होंने मेरे धैर्य, साहस और उद्यम की बार-बार प्रशंसा की।

अनन्तर वे व्यापारी मुझे अपने शिविर ले गए और मेरा यथोचित अतिथि सत्कार किया। मैंने वह रात उन यात्रियों के साथ बिताई। वे मेरे विशाल हीरों को देखकर आश्चर्यचकित हुए। उन्हें कुछ हीरे उपहार में देकर सन्तुष्ट करते हुए उस भयानक विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए मन ही मन भगवान् की स्तुति करते हुए मैंने सूर्योदय होने पर उन व्यापारियों के साथ प्रस्थान किया और सकुशल निकट स्थित बन्दरगाह पहुँच गया। एक जहाज पर आरूढ़ होकर मैं वहाँ से रोहण द्वीप पहुँचा जो कपूर के वृक्षों तथा उन बड़े-बड़े शिलाखण्डों से घिरा हुआ था तथा ऐसे गेंडों से भरा हुआ था जो अपने नाक की ओर रहनेवाले विशाल सींग की ताकत से हाथियों तक को चीर सकते थे। वहाँ से छोटे-छोटे हीरों से उस द्वीप में मिलनेवाली वस्तुओं को एकत्र कर थोड़े ही दिनों में वासरपुर पहुँचा और वहाँ से अपने निवास-स्थान विदामपुर पहुँचा। इस प्रकार सिन्धुवाद ने हितवाद को अपनी दूसरी सिन्धुयात्रा सुनाकर पूर्ववत् सौ दीनार देकर उसे पुनः दूसरे दिन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्ववच्छतं दीनारान् प्रदाय भूयोऽपि परेऽह्नि भोक्तुं तृतीययात्रा-वर्णनश्रवणेनात्मानं विनोदयितुञ्च निमन्त्र्य सर्वैरतिथिभिः सह विससर्ज।

अन्येद्युश्च यथासमयं समुपस्थितेषु तेष्वभ्यागतेषु कृतभोजनेषु सिन्धुवाद एवं स्वां तृतीययात्रां वर्णयितुमारेभे।

तृतीया सिन्धुयात्रा

"तदनु सुखेन कालं यापयन् विस्मृतयात्राद्वयक्लेशभरः कुतूहल-प्रचुरतया यौवनस्यालसगृहनिवासान्निर्विण्णोऽविगणितसिन्धुयात्रा-सुलभकष्टातिशयसम्भवः कैश्चिदिभ्यैः सभ्यैर्वणिग्जनैः सह भूयः प्रयातो वासरपुरमवाप्य पोताधिरूढोऽन्तरान्तरा मार्गपतितेषु द्वीपेषु सलाभं पण्यजातं विक्रीणानो दिवसगणसमाप्यां यात्रामुद्दिश्याऽवहम्।

भोजन के लिए तथा तीसरी यात्रा सुनकर अपना मनोरञ्जन करने के लिए निमन्त्रण देकर सब अतिथियों के साथ उसे विदा किया।

दूसरे दिन सब अतिथियों के यथा समय उपस्थित होने पर और भोजन करने पर सिन्धुवाद अपनी तीसरी यात्रा का वृत्तान्त इस प्रकार सुनाने लगा।

तीसरी समुद्रीयात्रा

इसके बाद सुखपूर्वक समय बिताते हुए दोनों समुद्री यात्राओं के क्लेशों को भूलकर यौवनोचित उत्सुकता के कारण घर में निवास से खिन्न होकर समुद्री यात्राओं की विपत्तियों की परवाह न करते हुए मैं कतिपय धनी-मानी सभ्य व्यापारियों के साथ फिर से निकल पड़ा और वासरपुर पहुँचकर जहाज पर सवार हो बीच-बीच में मार्ग में पड़नेवाले द्वीपों में लाभ के साथ विक्रेय वस्तुओं को बेचते हुए अनेक दिनों में समाप्त होनेवाली यात्रा का उद्देश्य लेकर आगे बढ़ चला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकस्मिन् दिवसे सिन्धुमध्ये प्रवहतोऽस्मान् सहसा समुद्भूतः कतिपयदिवसाननुस्यूतो भीष्मः प्रभञ्जन एकत्रान्तरीपे पोताध्यक्षेण परिहर्तुमिष्टेऽपि नियतेर्बलात्सरभसं समक्षिपत्। अथ संविग्नमनाः पोताध्यक्षोऽस्मानवादीत्।

"इदमासन्नानि च कानिचिद् द्वीपान्तराणि हिंस्रवृत्तिभिः कैश्चन कचाचितशरीरैर्वन्यैर्जनैर्नरभक्षकैर्ह्रस्वाकृतिभिरप्यगण्यैरधिष्ठितानि" इति।

तदेतत्तस्य वचनं निशम्य भीता वयं तेन यथाकथितमगणेयं घोराकृति वन्यमानुषव्रजमनुपदमेवास्मानुद्दिश्य त्वरयाऽऽगच्छन्तं दीर्घलोहितलोमसंछन्ननिखिलतनुमपश्याम। ते तु तीरमुपगम्य झटिति सिन्धौ क्षिप्तात्मानस्तरन्त उपसृत्य सर्वतोऽस्मत्प्रवहणं पर्यवेष्टयन्। उच्चैः किमपि भाषमाणा अस्माभिरनवबुध्यमानभाषास्ते

एक दिन समुद्र के बीच में अकस्मात् भयानक बवण्डर आ गया जो कुछ दिनों तक चल रहा था। यद्यपि जहाज का अधिकारी एक द्वीप में हमें ले जाकर बवण्डर से बचाना चाहता था। तथापि उस बवण्डर ने प्रबल भाग्य के कारण आगे बढ़नेवाले हमलोगों को वेगपूर्वक फेंक दिया। अनन्तर उद्विग्न होकर जहाज के अधिकारी ने हमलोगों से कहा—

"यह और निकटस्थ कतिपय अन्य द्वीप उन अगणित हिंस्र जंगली मानवों से भरे हुए हैं, जिनका शरीर रोंएँदार है जो नरभक्षी और बौने हैं।"

उसकी इस बात को सुनकर हमलोग डर गए। और हमलोगों ने देखा कि जैसा उसने वर्णन किया था उसी प्रकार भयानक आकृतिवाले अगणित वनमानुषों का समूह पीछे-पीछे ही हमलोगों की दिशा में वेग से आ रहा है और जिनका समस्त शरीर लम्बे लाल रोओं से ढका हुआ है। वे किनारे पर आकर तत्काल समुद्र में कूद पड़े और तैरते हुए आगे बढ़कर उन्होंने चारों ओर से हमारे जहाज को घेर लिया। वे जोर से कुछ बोल थे जिसे हमलोग समझ नहीं पा रहे थे। [वे जहाज की रस्सियों के सहारे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रवहणे रज्जुनिचयमवलम्ब्य पोतान्तरं प्राविशन्। बलाच्च प्रवहणं तीरमानीयास्माननिच्छतोऽपि रोधस्यवातारयन्।

एवं सिन्धुयात्राकुशलैः कैवर्तैर्दूरतः परिहृतप्रवेशेऽस्मिन् प्रदेशे नियत्या क्षिप्ता आत्मपरित्राणेऽक्षमास्तच्छन्दानुरोधेन ताननुसरन्तो वर्त्मनि सुलभानि कानिचित्फलमूलानि प्राणसन्धारणाय भक्षयन्तश्च वयं कञ्चनाध्वानमतिक्रम्य कञ्चिन्महोत्सेधं विशालतोरणमायत्त-वाह्याङ्गणप्रदेशं प्रासादमद्राक्ष्म। तदन्तश्च बलात्प्रवेशिता एकत्र गिरिकूटोपमं नारास्थिसञ्चयमन्यत्र च मांसक्षपणाय कृता-न्नैकान् गर्तानवलोक्य भयेन कम्पमानाः कञ्चनकालमालेख्यो-ल्लिखिता इव निश्चलाङ्गा अतिष्ठाम। साध्वसावलुप्तधृतयोऽध्व-श्रमपरिखिन्ना वेपथुस्खलच्चरणाश्च वयं निश्चेतना भूमावपताम।

जहाज में घुस पड़े और जबरदस्ती उस जहाज को किनारे लाकर न चाहते हुए भी हमें किनारे पर उतार दिया।

इस प्रकार हमलोग भाग्यवश ऐसे प्रदेश में लाकर फेंके गए, जहाँ कुशल समुद्री नाविक भी दूर तक प्रवेश नहीं करते। वहाँ हमलोग आत्म-रक्षा में असमर्थ थे और उनका अनुसरण करते हुए मार्ग में सुलभ कतिपय कंदमूल फलों को प्राणधारण के लिए खाते हुए हमलोगों ने कुछ मार्ग अतिक्रमण कर ऐसे प्रासाद को देखा जो अत्यन्त विशाल और जिसका मुख्यद्वार बड़ा तथा बाहरी आँगन विस्तृत था। उसके भीतर उन्होंने हमें बलात् प्रवेश कराया। वहाँ हमलोगों ने एक ओर मनुष्यों की अस्थिराशि को देखा जिसकी तुलना पर्वत-शिखर से की जा सकती थी तथा दूसरी ओर मांस पकाने के लिए किए हुए अनेक गड्ढों को देखा। फलस्वरूप हमलोग काँप गए और कुछ समय तक चित्रलिखित से निश्चल बन गए। भय के कारण हमारा धैर्य नष्ट हो गया। मार्ग के परिश्रम से हमलोग थक गए तथा काँपने के कारण हमारे पैर लड़खड़ाने लगे और हमलोग जमीन पर अचेतन होकर गिर पड़े।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अस्तमुपगते च भगवति चण्डदीधितौ समहास्वनं द्वारमुद्घाट्यागतं करालाकृतिं तालोच्छ्रयं भालस्थलज्वलदेकलोहितचक्षुषं घोरघोणं व्यायतदंष्ट्रं तुरङ्गमायतमुखमावक्षःस्थलप्रलम्बमानाधरं दन्तावलश्रवसं कङ्कनिशितनखाग्रं पुरुषतरं पुरुषमेकं निरीक्ष्य गतप्राणा इव वयं निश्चेतनाश्चिरमतिष्ठाम।

अथास्मासु लब्धचेतनेषु साकूतं निर्वर्णयन् स मामुपसृत्य गृहीत्वा च शौनिक इव मेषशावकं सर्वतः परीक्षमाणोऽस्थिचर्मावशेषमुपलभ्यात्यजत्। क्रमेण चास्मत्सहचरेषु प्रत्येकं तथैव परीक्षमाणः पोताध्यक्षं स्थविष्ठं समुपलभ्य कुन्तेन निशितेन सपत्राकृत्य वैश्वानरं प्रज्वाल्य शूलाकृत्याभ्यन्तरं नीत्वा जघास। समाप्तभोजनश्चागत्य वज्रनिर्घोषभीषणेन घर्घररवेण दिशोऽभिपूरयन् सुष्वाप। प्रभाते

सूर्यास्त होने पर जोर की ध्वनि के साथ दरवाजा खोलकर आये हुए उग्रपुरुष को हमलोगों ने देखा। उसकी आकृति भीषण थी। ऊँचाई ताड़ के समान थी। उसके ललाट में लाल नेत्र चमक रहा था। उसकी नासिका भयंकर थी। उसकी दाढ़ी फैली हुई थी। उसका विस्तृत मुख घोड़े की तरह लम्बा था। उसका अधर वक्षःस्थल तक लटक रहा था। उसके कान हाथी के समान थे, उसके नखाग्र कङ्क पक्षी के समान तीखे थे। उसे देख कर हमारे मानों प्राण चले गए और हमलोग बहुत देर तक निश्चेष्ट पड़े रहे।

अनन्तर हमारे होश में आने पर उसने मुझे गौर से देखते हुए पास पहुँच कर जिस प्रकार कसाई भेड़ के बच्चे की चारों ओर से परीक्षा करता है उसी प्रकार मेरी परीक्षा कर मुझे अस्थिचर्मावशेष पाकर छोड़ दिया। इसी प्रकार क्रमशः हमलोगों के प्रत्येक साथियों की परीक्षा करता हुआ वह जहाज के अधिकारी के पास गया। उसे मोटा-ताजा पाकर तीखे भाले से छेदकर शूल द्वारा आग में सेंककर भीतर ले जाकर खा लिया। भोजन के बाद आकर वज्र के समान भयंकर घरघराहट से दिशाओं को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चोत्थितोऽस्मान् भीतिविहतांस्तत्रैव प्रासादे समुत्सृज्य क्वचिदयासीत्।

तस्मिंश्च कियद्दूरं गते तत्प्रबोधनभयेन निखिलां रात्रिं तूष्णीं स्थिता वयं शोकोद्गारैः सकलमेव तं सौधं प्रतिध्वनयन्तोऽस्मत्साधारणवैरिणस्तस्य निबर्हणोपायान् नानाविधान् विचिन्तयन्तोऽपि नैकं समुचितं कर्मण्यमुपलभ्य सचिन्तास्तं निखिलं दिवसं तस्मिन् द्वीपे भ्रमन्तः फलमूलानि यथालाभं भक्षयन्तः परमेश्वरानुग्रहैकशरणाः सायं भूयस्तं प्रासादं प्रत्यावर्तामहि।

स तु नरपिशाचः पूर्ववत् प्रतिनिवृत्यास्मास्वेकं कवलीकृत्याऽऽप्रभातमशेत। एवं जीवितनिराशानस्मान् सिन्धुनिमज्जनमेव शरणं मन्यमानांस्तथाकर्तुं प्रवृत्तान्निरीक्ष्यैकोऽन्धतामिस्रपातकविभीषिकयाऽऽत्मघातान्निरवारयत्।

व्याप्त करते हुए सो गया। प्रातःकाल उठकर हमलोगों को भयभीत अवस्था में उसी महल में छोड़कर कहीं चला गया।

उसके थोड़ी दूर चले जाने पर हम लोग जो उसके जागने के भय से पूरी रात चुपचाप बैठे हुए थे इस समय वहीं अपने शोकमय चीत्कारों से पूरे महल को प्रतिध्वनित कर रहे थे। हम लोगों के शत्रु उसको मारने के लिए अनेक प्रकार के उपायों को सोचते हुए एक भी समुचित उपाय को न पाकर चिन्तामग्न थे। तथा दिन भर उस द्वीप में घूमते हुए सुलभ कन्दमूल फलों को खाते थे। उस समय हम लोग केवल परमेश्वर की कृपा के भरोसे थे तथा सायं पुनः उस महल में लौट आते थे।

वह पिशाच पूर्ववत् लौट कर हम लोगों में से एक को अपना ग्रास बनाकर प्रातःकाल तक सोता था। उस समय हमलोग जीवन के प्रति निराश हो चुके थे तथा समुद्र में डूबने को ही सहारा समझकर उसके लिए उद्यत थे। यह देखकर एक ने "अन्धतामिस्र" नामक नरक में गिरने का भय दिखाकर हमें आत्महत्या से बचा लिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथाहं तान् मत्सहचरानेवमब्रवम् —

'आर्याः ! नन्वयं द्वीपः काष्ठप्रचुरः तत्तेभ्यः फलकानि सम्पाद्य क्वचिद् गूढं निक्षिप्य तदुपयोगौपयिकमवसरं प्रतीक्षेमहि। मया ह्यस्य पुरुषादहतकस्य विनाशायैक उपायश्चिन्तितः। तस्मिन् किल साफल्यमुपगते सधैर्यमत्रैव कमपि पातं सम्भाव्यागमनुपालयन्तः कालं क्षपयेम। अन्यथा तु फलकाश्रयेण समुद्रमाश्रयेम। अपायबहुलमपि फलकाश्रयेण सिन्धुतरणं नूनमेतन्नरपिशाचमुखकन्दराप्रवेशाच्छ्रेय' इति।

ते तु एतमुपायमन्वमन्यन्त। अथ वयं बृहन्ति काष्ठफलकानि प्रत्येकं नरत्रयवहनपर्याप्तावकाशानि पर्यकल्पयाम।

सायं च स्ववसतिं भूयः प्रत्यगच्छाम। सोऽपि नररूपधरोऽन्तको यथासमयमुपेत्यास्मास्वेकं जग्ध्वा निदद्रौ। तं च सघर्घरस्वनं निद्रा-

---

अनन्तर मैंने अपने साथियों से इस प्रकार कहा—"सज्जनो ! यह द्वीप लकड़ियों से भरा हुआ है। अतः उनसे फलकों का निर्माण कर उन्हें गुप्त स्थान में रखकर उनका उपयोग करने के लिए हम अवसर की प्रतीक्षा करें। मैंने इस नरभक्षी पुरुष को मारने के लिए एक उपाय सोच लिया है। उसके सफल होने तक हमें यहीं पर धैर्यपूर्वक किसी जहाज के आने की प्रतीक्षा करते हुए समय बिताना चाहिए। अन्यथा फलकों का आश्रय लेकर समुद्र में तैरना चाहिए। यद्यपि फलकों के सहारे समुद्र में तैरना खतरों से भरा हुआ है तथापि यह उपाय नरपिशाच के मुखरूपी गुफा में जाने से कहीं अधिक श्रेयस्कर है।

उन सभी साथियों ने मेरे इस उपाय का अनुमोदन किया। पश्चात् हमलोगों ने ऐसे विशाल लकड़ी के पटरों का निर्माण किया जिनमें प्रत्येक पर तीन मनुष्य बैठने का पर्याप्त स्थान हो।

और हमलोग फिर से सायंकाल अपने निवास-स्थान लौट आये। वह भी मनुष्य वेशधारी यम यथासमय आकर हम लोगो में से एक को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वशमाकल्यास्मासु धीरधियो नवजना अहं च लोहशूलमग्नौ प्रताप्य तच्चक्षुषि निक्षिप्य तमन्धतामनयाम।

सोऽप्यविषह्यवेदनया भृशं तुद्यमानस्तारमाक्रोशन् दूरे स्थितेष्वस्मासु कञ्चन विधतुं कृतप्रयत्नोऽपि वन्ध्यश्रम इतस्ततः परामृशन् द्वारदेशमवाप्य कुत्रापि प्रययौ।

तस्मिश्चापगतमात्रे वयं सिन्धुरोधो निगूहितं काष्ठफलकसमुदयमवाप्यानाकर्ण्य तद्गर्जनं तं मृतं मत्वा निर्विशङ्काः कस्यचित् प्रवहणस्यागमनं सम्भावयन्त आप्रभातमतिष्ठाम। प्रभातायां च तस्यां युगायमानायां निशायां तमस्मदरातिमात्मतुल्याकारप्रमाणाभ्यामपराभ्यां नरहतकाभ्यां समनुस्रियमाणं सत्वरमापतन्तमद्राक्ष्म।

तांश्चावलोक्य ससम्भ्रमं फलकान्यधिरुह्य तानि क्षेपणीभ्यां

खाकर सो गया। उसको नाक बजाते देखकर और सोता हुआ समझ कर हमलोगों में से नौ धैर्यशील व्यक्तियों ने और मैंने लोहें के शूल को आग में तपाकर उसकी आँख में डालकर उसे अन्धा बना दिया।

वह भी असह्य वेदना से अत्यन्त पीड़ित होकर जोर से आक्रोश करते हुए दूर पर उपस्थित किसी एक को पकड़ने के लिए प्रयत्न करने पर भी निष्फल होकर इधर-उधर टटोलते हुए द्वार पर पहुँच कर कहीं चला गया।

उसके जाते ही समुद्र के किनारे छिपाए हुए लकड़ी के फलकों की राशि को पाकर उसकी गर्जना को न सुनने से उसे मरा हुआ समझ कर निःशङ्क होकर किसी जहाज के आगमन की प्रतीक्षा करते हुए सुबह तक हम लोग वहाँ ठहरे। युग के समान प्रतीत होनेवाली रात्रि जब सुबह में बदल गई, उस समय हमलोगों ने अपने उस शत्रु को जिसके पीछे उसी के आकार एवं प्रकार के दो दुष्ट मनुष्य आ रहे थे, उन्हें देखा।

उन्हें देखकर जल्दी जल्दी उन फलकों पर बैठकर उन्हें डाँडों से

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रेरयन्तः सत्वरं पलायामहि। ते तु नराधमा अस्मान्निरीक्ष्य क्रोधेन दशनान् पेषयन्तो महतीः शिला अस्मत्फलकेषु तरसाऽस्यन्तस्तानि चूर्णीकृत्य सर्वान् सिन्धुतलेऽमज्जयन्। केवलमहमुभाभ्यां सहचराभ्यां सहफलकमेवमधिरूढो नियत्या तस्या विपदोऽभिरक्षितः सिन्धुमध्यमध्यगच्छम्।

तत्र च महोर्मिषु क्वचिन्निमज्जन्तः क्वचिच्चोन्मज्जन्तो वयं दैवैकनाथाः संशयग्रस्तहृदयास्तां क्षपामक्षपयाम। प्रातश्च सुदैववशेन क्वचिद् द्वीपेक्षिप्ताः सानन्दं तत्र समृद्वा मृद्वीका यथेच्छमुपभुज्य किञ्चिच्छ्रममपानयाम।

अवतीर्णायां च निशायां तीरं सम्प्राप्य प्रसुप्ता अत्यायत्प्रमाण स्याजगरस्यैकस्य विसर्पणशब्देनाऽदूरोत्थितेन प्रबुद्धा अभवाम। स चाजगरः क्षणादस्मास्वेकं भुक्तये कृतवृथाप्रयत्नं न्यगिलत्।

चलाते हुए हम जल्दी भागने लगे। उन दुष्टों ने हमें देखकर क्रोध से दाँत पीसते हुए बड़ी चट्टानों को हमारे फलकों की ओर वेग से फेंकते हुए उन्हें चकनाचूर कर सभी मनुष्यों को समुद्र में डुबो दिया। केवल मैं अपने दो साथियों के साथ एक पटरे पर बैठकर भाग्य से उन विपत्तियों से बचता हुआ समुद्र के बीच आ पहुँचा।

वहाँ उन लहरों में कहीं डूबते हुए तो कहीं उतराते हुए हम लोगों ने भाग्य के अधीन और सन्देहग्रस्त होकर उस रात्रि को बिताया। प्रातः सुदैव से हमलोग एक द्वीप में आ पहुँचे और वहाँ पर आनन्दपूर्वक अच्छी तरह फले-फूले अंगूरों को भर पेट खाकर कुछ थकावट दूर की।

रात में सोये हुए हम लोग किनारे पर अतिविशाल अजगर के पास में ही आनेवाले सर-सर ध्वनि से जाग गए। वह अजगर क्षण भर में हम लोगों में से एक को जो छुटकारे के लिए व्यर्थ प्रयत्न कर रहा था, निगल गया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उर्वरितैकसहचरोऽहं "हन्त! दुःखाद्दुःखान्तरं प्राप्तौ स्वः नराशनात्कथञ्चिद्विमुक्तौ साम्प्रतं सर्पमुखमनुप्रविष्टौ" इति जीविते निराश उच्चैराक्रन्दम्।

अथावयोर्निकटवर्तिनं शाखिनमारुह्य स्थितयोरधस्तादुपगतो महाकायोऽजगरः स्वफूत्कारवेगेन मत्तः किञ्चिदधोवर्तिन्यां शाखायां स्थितं तं मदीयमेकाकिनं सहचरं निगीर्य कुत्रापि न्यलीयत।

एवमेकावशेष आत्मनोऽपि तामेव गतिं सम्भावयन् जीवित-निराशः सिन्धौ निमज्य मर्तुकामोऽपि भूयो जीवनाशया प्रणोदितो-रक्षायै परमेश्वरं भूयो भूयः प्रार्थयमानोऽकस्माद् दूरादागच्छत् प्रवहणमेकमपश्यम्। शिरस्थपटेन च कृतसङ्केतस्तत्स्थजनावधान-माकृष्य गृहीतसङ्केतैः पोतवाहैः सपदि सम्प्रेषितां नावमेकामारुह्य पोतं संप्राप्नवम्।

अब मेरा एक ही साथी बचा हुआ था। मैं जीवन के प्रति निराश हो चुका था। जोर-जोर से चिल्लाया—"हाय! हम दोनों एक विपत्ति से छुट कर दूसरी विपत्ति में आ पहुचे। नरभक्षी से किसी प्रकार छुटकारा पाया और सम्प्रति अजगर के मुख में जा पड़े।

पश्चात् हम दोनों में जो निकटवर्ती वृक्ष पर चढ़ कर ठहरे हुए थे, नीचे आने वाले विशालकाय अजगर ने फूँ फूँ करते बैठे हुए मेरे एकाकी मित्र को निगला और कहीं अदृश्य हो गया।

इस प्रकार अकेला बचा हुआ मैं स्वयं उसी प्रकार दुर्गति की कल्पना करते हुए जीवन के प्रति निराश होकर समुद्र से डूबकर मरना चाहते हुए भी फिर से जीवन की आशा से प्रेरित होकर रक्षा-हेतु परमेश्वर की बार-बार प्रार्थना करने लगा और अकस्मात् दूर से आते हुए एक जहाज को देखा। पगड़ी के कपड़े से संकेत करता हुआ मैं उस पर सवार लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर संकेत पानेवाले जहाजी यात्रियों द्वारा तत्काल प्रेषित एक नाव पर बैठ कर उस जहाज पर पहुँचा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विदितमदभुतवृत्तान्ताः पोतवर्तिनो वणिजो मां विपत्सिन्धुतरणायाभिनन्द्य विशीर्णं मन्नेपथ्यं विलोक्य नवेन तेन भोजनोपहारैश्च मामन्वगह्णन्।

तैश्च सहितः कानिचिदहानि द्वोपान्तरेषु वाणिज्यया द्रविणमुपार्जयन् सालहतं नाम चन्दनद्रुमप्रभवं द्वीपमुपगत्य संगृहीतप्रचुरचन्दनस्ततः प्रस्थातुकामः पोताध्यक्षेणैवमुक्तः—

"आर्य! एतानि पण्यवस्तूनि मत्पोतमारूढपूर्वस्य मार्गे दैवान्मृतस्यैकस्य वणिक्श्रेष्ठस्य विक्रीयाखिलं तद्धनं विदामपुरं सम्प्राप्तेन भवता तद्दायादेभ्यो दीयमानमभ्यर्थये।"

इत्युक्त्वा स तत्पण्यजातमदर्शयत्। तथेत्यभ्युपगत्य पश्यन्नहं तेषु स्यूतेपूल्लिखितमात्मनोऽभिधानमवलोक्य पोताध्यक्षं तं द्वितीय-

---

मेरे आश्चर्यकारक वृत्तान्त को सुनकर जहाज में सवार व्यापारियों ने विपत्ति रूपी सागर से बचने के लिए मेरी प्रशंसा कर मेरे वस्त्रों को जोर्ण शीर्ण देखकर उन्होंने नया वस्त्र देकर और भोजन कराते हुए मेरे ऊपर अनुग्रह किया।

और उनके साथ कुछ दिन तक अनेक द्वीपों में व्यापार द्वारा धनोपार्जन करते हुए मैं सालहत नाम के द्वीप पर पहुँचा जहाँ चन्दन वृक्ष होते थे। वहाँ प्रचुर चन्दन एकत्रित कर जब मैं वहाँ से जाने की इच्छा करने लगा, तब जहाज के अधिकारी ने मुझसे कहा—

"आर्य! ये विक्रेय वस्तुएँ उस वणिक् श्रेष्ठ की हैं जो मेरे जहाज पर पहले सवार हुआ था और भाग्यवश मार्ग में मर गया। मैं प्रार्थना करता हूँ कि इन्हें बेचकर इससे प्राप्त समस्त धनराशि जब आप विदामपुर पहुँचे उनके उत्तराधिकारियों को दे दें।"

यह कहकर उसने मुझे सम्पूर्ण वस्तुएँ दिखायीं। 'ठीक है' ऐसा कहकर मैंने उन्हें देखा और उन वस्तुओं पर अपना नाम देखकर मैंने पहचाना कि यह वही जहाज का अधिकारी है जो दूसरी यात्रा में मुझे सोये हुए

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्रायां प्रसुप्तं मामेकाकिनं परित्यज्यापसृतं प्रत्यभिज्ञायापृच्छम्—"आर्य ! किंनामधेयोऽसौ यस्यैतद्वस्तुजातम् ?" इति ।

सोऽब्रवीत्—"भद्र ! एतानि तानि विदामपुरवासिनो वणिगग्रगण्यस्यार्यसिन्धुवादस्य । यः किल द्वीपमेकमवतीर्य सहसाऽदृश्यतां गत इति ।"

"आर्य ! सोऽहं सिन्धुवादो यं भवांस्तस्मिन् द्वीप एकाकिनं सुप्तं परित्याज्यपयात" इति ब्रुवाणं मां क्षणं निर्वर्ण्य प्रत्यभिज्ञाय च प्रहृष्टः "आर्य सिन्धुवाद ! दिष्ट्या भवन्तं तीर्णापदं भूयो विलोकयामि" इति समभिनन्द्य तत्पण्यजातं मदधीनमकरोत् ।

ततश्च प्रस्थितोऽहं मार्गे द्वीपभ्रमाधायिनो महिष्ठान् कमठान् धेनूरिव पयस्विनीश्चित्रवर्णा काश्चिन्मत्स्यीः साश्चर्यं विलोकयन् क्रमेण वासरपुरं सम्प्राप्य समुपार्जितापरिमितवसुविसरो दीनेभ्यो

छोड़कर चला गया था । मैंने उससे पूछा "महोदय ! उस यात्री का नाम क्या था जिसकी ये वस्तुएँ हैं ।"

उसने उत्तर दिया—महोदय ! विदामपुर निवासी वणिक् श्रेष्ठ आर्य सिन्धुवाद की ये वस्तुएँ हैं । जो एक द्वीप पर उतरकर अकस्मात् अदृश्य हो गया था ।"

"आर्य ! वही मैं सिन्धुवाद हूँ जिसे आप उस द्वीप पर अकेले सोये हुए छोड़कर चले गये थे" मैंने कहा ।

वह क्षण भर मुझे देखकर और पहचानकर आनन्दित हुआ—"आर्य सिन्धुवाद ! भाग्य से मैं आपको पुनः देख रहा हूँ, जिन्होंने इतनी आपत्तियों को पार किया है ।" इस प्रकार मेरा अभिनन्दन करते हुए उसने वे समस्त वस्तुएं मेरे अधीन कर दीं ।

और वहीं से प्रस्थान करते हुए मैंने मार्ग में विशाल कछुओं को आश्चर्यपूर्वक देखा जो द्वीपों का भ्रम उत्पन्न कर रहे थे । उसी प्रकार अनेक रंग-बिरंगी मत्स्यांगनाओं को देखा जो दुधारू गायों के समान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऽतिसृष्टविपुलधनो विषयसुखोपभोगैकपरः सानन्दं समयमया-पयम् ।"

इत्येवं तृतीयसिन्धुयात्रावर्णनं परिसमाप्य सिन्धुवादः पूर्व-वद्धितवादाय दत्तशतदीनारः सर्वैरतिथिभिः सहान्येद्युर्भोक्तुं चतुर्थ-यात्रावर्णनमाकर्णयितुं चानुरुध्य तं विससर्ज ।

अन्येद्युश्च स यथासमयं निर्वर्तितभोजनेषु तेषु सहितवादेषु दत्तावधानेष्वित्थं स्वां चतुर्थीं सिन्धुयात्रां वर्णयामास—

चतुर्थी सिन्धुयात्रा

एवं सुखान्यनन्यसुलभानि भुञ्जानोऽपि भूयो व्युत्थितसमुद्रया-त्रोत्कटोत्साहः सम्भाव्यलाभान्युच्चावचानि वस्तूनि संग्रह्य पोतमा-

---

प्रतीत हो रही थी। क्रमशः मैं वासरपुर पहुँचा। वहाँ मैंने अपरिमित सम्पत्ति जो अर्जित की थी, उन्हें दीन-दुखियों को विशाल मात्रा में दान कर दी और खूब मौज करते हुए आनन्दपूर्वक दिन बिताने लगा।

इस प्रकार अपनी तीसरी समुद्री यात्रा का वर्णन समाप्त कर सिन्धुवाद ने हितवाद को सौ दीनार दिये तथा सभी अतिथियों के साथ दूसरे दिन भोजन करने के लिए और चौथी यात्रा का वृत्तान्त सुनने के लिए अनुरोध कर उसे घर जाने की अनुमति दी।

दूसरे दिन हितवाद के साथ यथासमय सभी अतिथियों के भोजन सम्पन्न कर तथा दत्तचित्त होने पर वह अपनी चौथी समुद्री यात्रा इस प्रकार सुनाने लगा।

चौथी सिन्धुयात्रा

इस प्रकार यद्यपि मैं दूसरों के अप्राप्य सुखों का उपभोग कर रहा था तथापि फिर से मेरे मन में समुद्री यात्रा का उत्साह जागा और जिसमें लाभ हो सकता था ऐसे अनेक प्रकार की वस्तुओं को एकत्रित कर जहाज

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रूढः पौरस्त्यान्तरीपानुद्दिश्य प्रायाम्। एकस्मिन् पुनरहनि समुत्थितया भीषणया वात्यया भग्नप्रवहणेष्वस्मासु बहवः सपदि प्राणांस्तत्यजुः।

कतिपयावशिष्टवणिग्जनसहायो दैवात् फलकमेकमारुह्य वीचिवेगेन समुह्यमान एकत्र द्वीपे प्रक्षिप्तः कानिचित् फलानि संभुज्य पीत्वा च प्रस्रवणाम्भः किञ्चित् समुच्छ्वसितः शुचार्तः क्षीणबलतया द्वीपस्थानि वस्तून्यवलोकयितुमप्यनुत्सहमानस्तत्रैव सिन्धुरोधसि निपत्य निद्रितोऽभूवम्। प्रभातायां यामिन्यामुदिते भगवति दिवाकरे प्रबुध्यमानानितस्ततो विचरतः कांश्चिद्वसतो दूराद्विलोक्य शरणाशया तत्रोपसृतानस्मानकस्मादापतिताः परःशता असिताङ्गाः पुरुषाः समुपगम्य बन्दिनोऽकार्षुः। गणशश्चास्मान् विभज्य स्वगृहाभिमुखमभिजग्मुः।

पर सवार होते हुए पूर्वी द्वीपों की ओर चल पड़ा। पुनः एक दिन उठे हुए भयानक बवण्डर से जब हमारे जहाज टूट गए, तो उनमें सवार अनेकों ने तत्काल प्राण छोड़ दिये।

कतिपय बचे हुए व्यापारियों के साथ मैं भाग्यवश एक पटरे पर सवार होकर लहरों के वेग से बहता हुआ एक द्वीप पर फेंका गया। वहाँ कुछ फल खाकर और झरने का पानी पीकर मैं कुछ साँस ले सका। किन्तु शोक से व्याकुल मेरे शक्तिक्षीण होने के कारण द्वीप में स्थित वस्तुओं को देखने का उत्साह मुझमें नहीं रह गया था। अतः वहीं पर समुद्र के किनारे सो गया। रात्रि बीतने तथा प्रातःकाल सूर्योदय होने पर हम लोग जाग गये और इधर-उधर विचरण करनेवाले वहाँ दूर से ही कुछ बस्तियों के लोगों को देखकर सहारे की आशा से उनकी ओर बढ़ने लगे। ऐसी अवस्था में हमें देखकर सैकड़ों खड्गधारी पुरुष अकस्मात् हमारे पास आ पहुँचे और हमें बन्दी बना लिया। हमें अनेक समूहों में विभक्त कर वे अपने घर की ओर ले गये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अहं पञ्चभिरपरैः सहचरैः सहैकं गृहमनायिषि। अथ ते कालपुरुषाः क निचिद् वृक्षमूलानि वितीर्यास्मान् संकेतैस्तानि भक्षयितुं प्रेरयामासुः। स्वयं तान्यनास्वाद्य केवलमस्मांस्तानि भोक्तुं कृतानुरोधांस्तान् वीक्ष्य शङ्काकुला अपि क्षुधाऽऽतुरा मत्सहचरा यथेच्छं तानि जघसुः। अहं तु तान् सन्दिहानस्तानि प्रत्यादिशम्। अचिराच्चास्मत्सहचरास्तानि भुक्त्वा विस्मृतात्मानः किमपि प्रलपितुमारभन्त। तैश्चोपहृतं नारिकेलतैलपाचितमोदनमातृप्तेरभुञ्जत। अनिच्छन्नप्यहं प्राणसन्धारणाय किञ्चिदभ्यवाहरम्।

ते हि कालपुरुषाः पुरुषादापसदा अस्मान् प्रथममोषधिविशेषेण विमोह्य तैलपक्वोदनेन पीवरतां नीत्वा भोक्तुमकामयन्त। एवं पीनतामापादितास्तपस्विनो मम सखायः क्रमेण तेषामामिषतामयासिषुः। अहं तु मृत्योर्भयेन प्रत्यहं क्षीयमाणोऽत्यल्पमश्नन्स्थिपञ्जरा-

---

मैं अन्य पाँच सहयात्रियों के साथ एक कमरे में ले जाया गया। पश्चात् वे कालपुरुष कुछ वृक्षमूलों को देकर हमें संकेतों से खाने के लिए प्रेरित करने लगे। स्वयं उन्हें न खाकर केवल वे उन्हें खाने के लिये हमें ही प्रेरित कर रहे थे। यह देखकर हमारे साथी यद्यपि शंकाकुल थे, तथापि भूख से व्याकुल होकर वे उन्हें यथेच्छ खाने लगे। मैंने तो उनके प्रति सन्देह करते हुए उनका बहिष्कार किया। थोड़ी ही देर में मेरे साथी उन्हें खाकर स्वयं को भूलते हुए कुछ प्रलाप करने लगे। और उनके द्वारा दिये हुये नारियल के तेल में पके हुए चावल का उन्होंने आकण्ठ भोजन किया न चाहते हुए भी मैंने प्राण-रक्षा के लिए कुछ खाया।

वे अधम नरभक्षी हम लोगों को पहले विशेष प्रकार की औषधि से बेहोश कर फिर तेल से पके हुए चावल खिलाकर हृष्ट-पुष्ट करते हुए खाना चाहते थे। इस प्रकार हृष्ट-पुष्ट होकर मेरे बेचारे मित्र क्रम से उनके भक्ष्य बन गये। मैं तो मृत्यु के भय से प्रत्येक दिन दुबला होता हुआ अत्यन्त स्वल्प भोजन करने से अस्थिपंजर मात्र

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वशेषो मत्पीवरतनुतां प्रतीक्षमाणैस्तैः कञ्चनकालं विमुक्तः स्वच्छन्दं चरितुमप्यनुमतः कमपि समयं चिन्तासन्ततमनैषम् ।

एवं लब्धावसर एकस्मिन् वासरे तां वसतिं विहाय पलायने मतिं व्यधाम् । मन्निरीक्षणकार्यनियोजितेनानुमितमत्पलायनाभिप्रायेण स्थविरेणैकेन परावर्तितुं समाहूयमानोऽपि त्वरितगतिस्तस्य दृशोरगोचरोऽभवम् । सप्तवासरान् निरन्तरं प्रधावमानस्तत्रोपलब्धैर्भूरिभिर्नारिकेलफलैः केवलं निवारितक्षुत्पिपासः प्रतिक्षणं मदन्वेषपरायणानां तेषामासत्तिं विशङ्कमानः कथमप्यष्टमे दिवसे सिन्धुतटमुपगतः काँश्चित् सिताङ्गान् जनान् प्रचुरमरिचनिचयावचयव्यापृतान् विलोक्य निर्भयं तानुपासरम् ।

"कुतो भवान् ?" इति मद्देशभाषायां पृच्छतस्तानुदितप्रहर्षो-

रह गया । वे मेरे हृष्ट-पुष्ट होने की प्रतीक्षा कर रहे थे और कुछ समय के लिए मुझे छोड़ दिया गया था तथा स्वच्छन्द विचरण के लिए मुझे अनुमति मिली थी । इस प्रकार मैंने कुछ समय निरन्तर चिन्ता में बिताया ।

एक दिन अवसर मिलने पर मैं वह स्थान छोड़कर भागने का विचार करने लगा । मेरे कार्य के लिए नियुक्त एक वृद्ध जो मेरे भागने के विचार का अनुमान लगा चुका था उसके द्वारा वापस बुलाये जाने पर भी मैं अपनी गति तेज करता हुआ उसकी आँखों से ओझल हो गया । निरन्तर सात दिन तक दौड़ता हुआ मैं वहाँ पर प्रचुर मात्रा में उपलब्ध नारियल के फलों से ही केवल भूख प्यास बुझाता रहा, प्रत्येक क्षण मेरी खोज में लगे हुए उनके मेरे पास में आने की शंका करता हुआ मैं किसी प्रकार आठवें दिन समुद्र के किनारे पहुँचा और वहाँ पर कुछ गौरवर्ण पुरुषों को मिर्च के राशि को प्रचुर मात्रा में एकत्रित करते हुए देखकर निर्भय होकर उनके पास पहुँचा ।

"आप कहाँ से आ रहे हैं ?" इस प्रकार मेरी देशभाषा में पूछनेवाले

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऽहं निखिलं स्वागमप्रकारमकथयम्। नराशनमुखगतस्यापि मम ततो विमुक्तिवृत्तान्तमाकर्ण्य विस्मितास्ते सानन्दं मामभ्यनन्दन्।

अथ तैः सह कानिचिदहानि मरिचसञ्चयकर्मणि तत्रातिवाह्य प्रवहमधिरूढस्तेषां निवासभुवं द्वीपमेकमुपागतस्तैः सकुतुकं तत्रत्यं नरपतिं सम्प्राप्तोऽभवम्। स च परमोदाराशयोऽस्मद्-वृत्तान्तश्रवणविस्मितात्मा मह्यमुपहृतनववसनो मां समाराधयितु-मधिकृतान् समादिदेश। तत्र च समृद्धे द्वीपे महनीये गृहे वसन् प्रत्यहमभिवर्धमानराजप्रसादो राजानुवर्तिभिरधिकारिभिरिभ्यैर्ज-नैश्च सहोपचितस्नेहः सुखेनावात्सम्।

एकदा तत्रत्यान्निखिलान् जनान् नराधिपमपि तुरगानपर्याणान-वल्गानपादग्रहणीकानारोहतोऽवलोक्य विस्मितो राजानमपृच्छम्—

उन लोगों को मैंने प्रसन्न होकर अपने आगमन का सम्पूर्ण वृत्तान्त वे सुनाया। नरभक्षी के मुख में जाने पर भी मेरी छुटकारा पाने की कहानी सुनकर वे आश्चर्यचकित और आनन्दित होकर मेरा अभिनन्दन करने लगे। पश्चात् उनके साथ वहाँ पर कुछ दिन मिर्च को एकत्रित करने में समय बिताकर मैं जहाज पर सवार होकर उनके निवासभूमि के एक द्वीप पर पहुँचा और उनके द्वारा वहाँ के राजा के पास पहुँचाया गया। वह अत्यन्त उदार स्वभाव का था। मेरे वृत्तान्त को सुनकर आश्चर्यचकित होते हुए उसने मुझे नवीन वस्त्र प्रदान किए और मेरी सेवा करने के लिए अधिकारियों को आदेश दिया। उस सम्पन्न द्वीप में विशाल घर में रहते हुए प्रत्येक दिन राजा की कृपा बढ़ने लगी, राजा के अनुचर, अधिकारी और धनिकों के साथ मेरा स्नेह बढ़ने लगा। इस प्रकार मैं वहाँ सुखपूर्वक रहने लगा।

एक बार वहाँ पर मैंने सम्पूर्ण लोगों को तथा राजा को भी ऐसे घोड़ों पर सवार होते हुए देखा जिनपर न तो जीन थी न तो लगाम थी और न तो पावदान था। यह देखकर आश्चर्यचकित होते हुए मैंने राजा से पूछा—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

"देव ! समृद्धेऽत्र भवद्राज्ये कथं तुरङ्गमाः पर्याणवल्गापादग्रहिकाभिरसज्जिताः समारुह्यन्ते ?" इति । स तु तेषां नामाप्यजानन् व्यस्मयत ।

अथाहं लोहचर्मकारानुपेत्य प्रदर्शितादर्शस्तान्यश्वपर्याणादीनि सम्पाद्य नृपाय समुपाहरम् । स च तैः स्ववाह्यं तुरङ्गममलङ्कृत्य तमधिरूढः प्रसन्नमना बहुपारितोषिकं मह्यं व्यतरत् । अथाधिकारिभिरिभ्यजनैश्चान्यैः सम्प्रार्थितस्तानि पर्याणादीनि विरचय्य तेभ्य उपहृत्य तैः प्रसन्नमानसैः प्रदत्तं विपुलं वसु समुपार्जयम् । सर्वेषां च स्नेहपात्रमभवम् ।

प्रत्यहं राजसभामुपासीनं मामेकस्मिन्नहनि भूपतिरुवाच—

"आर्य ! भवन्तं गुणाकरं विलोक्योपस्निह्यतीवास्माकमन्त-

"महाराज ! आपके इस सम्पन्न राज्य में लोग किस प्रकार बिना जीन, लगाम और पादग्राहिका (पावदान) के ही घोड़ों पर सवार होते हैं ?"

वह तो उनका नाम तक नहीं जानता था । यह सुनकर मैं आश्चर्यचकित हो गया ।

पश्चात् मैंने लोहार और चर्मकारों के पास जाकर उन्हें नमूना दिखाते हुए उनके द्वारा जीन आदि बनवाकर राजा को उपहारस्वरूप अर्पित किया । उसने उनसे अपने वाहनयोग्य अश्व को सजाकर और उस पर आरूढ़ होकर प्रसन्नचित्त से मुझे प्रचुर पारितोषिक दिया । अनन्तर अधिकारियों और अन्य धनी-मानी व्यक्तियों द्वारा प्रार्थना किये जाने पर मैंने जीन आदि का निर्माण कराकर उन्हें अर्पित किया तथा प्रसन्नचित्त होकर उनके द्वारा अर्पित विपुल धन अर्जित किया । इस प्रकार मैं सभी का स्नेहभाजन बन गया ।

मैं प्रतिदिन राजसभा में उपस्थित होता था । एक दिन राजा ने मुझसे कहा—

"आर्य ! आप जैसे गुणों की खान को देखकर हमारी अन्तरात्मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रात्मा। सर्वाश्चास्मदीयाः प्रकृतयो भवन्तमनुरक्ताः। अद्यैकस्मिन् विषये भवन्तं किञ्चिदनुरोद्धुमिच्छामि। न तदार्येण प्रत्याख्येयम्" इति।

अहं त प्रत्यवोचम्–"सर्वथा प्रभवति देवोऽस्योपकारभरक्रीतस्य शरीरस्य। तद्यथेच्छमादेशदानेनानुगृह्यतामयञ्जनं इति।"

"आर्य! भवन्तमिह कृतदारपरिग्रहं सुखिनं द्रष्टुमिच्छामि"। इत्येवं वादिनस्तस्य प्रणयप्रार्थनामिमां प्रत्यादेष्टुमसञ्जातसाहसोऽहं 'यथाज्ञापयति देव' इति तदभ्युपागमम्। अथैकया तरुण्या रमण्या कृतोद्वाहस्तया सह गार्हस्थ्यसुखमनुभवन्नपि जन्मभूमिस्नेहेन बलवत्तरेण प्रेरितस्ततोऽपसरणावसरं प्रतीक्षमाणः कालं कञ्चनाक्षपयम्।

एवं मयि ततः पलायनोपायान्वेषणपरायणे कस्यचिदस्मत्प्रण-

अत्यन्त प्रसन्न होती है। हमारी सम्पूर्ण प्रजा आप पर अनुरक्त है। आज मैं एक विषय में आपसे कुछ अनुरोध करना चाहता हूँ। आप उसको अस्वीकार न करें।"

"मैंने उन्हें उत्तर दिया—आपने मेरा यह शरीर उपकारों के भार से खरीद लिया है। महाराज का इस पर पूरा अधिकार है अतः आप इस व्यक्ति पर स्वेच्छापूर्वक आदेश का अनुरोध करते हुए कृपा करें।

"आर्य! मैं चाहता हूँ कि आप विवाह करें और सुखी हों।"

इस प्रकार जब वे मुझसे प्रेमपूर्वक अनुरोध करने लगे, तब मैं उनकी प्रेमपूर्वक प्रार्थना को ठुकरा न सका। "महाराज जैसी आज्ञा दें" ऐसा कहते हुए मैंने उनकी प्रार्थना को स्वीकार किया। अनन्तर एक युवती के साथ मेरा विवाह हुआ। मैं उसके साथ यद्यपि गृहस्थोचित सुख का अनुभव कर रहा था तथापि मैं अपनी जन्मभूमि के उत्कट प्रेम से प्रेरित होकर वहाँ से निकलने के अवसर की प्रतीक्षा करते हुए मैंने वहीं कुछ समय बिताया।

इस प्रकार मेरे वहाँ से भागने का उपाय खोजने के लिए उद्यत

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यिनः प्रातिवेशिकस्य भार्या रुगार्ता सहसाऽम्रियत। तं च शुचा व्याकुलं समाश्वासयितुं गतः 'चिरञ्जीव' इति वदन्नहं तेनोक्तः—

"भद्र! किमिदमसम्बद्धं प्रार्थयसे? ननु घटिकामात्रावशेषो मज्जीवनावधिः, अचिरादेव प्रिययोपरतया सह भूमौ निखातो भविष्यामि। सोऽयमेतद्देशस्याचारो यद्दम्पत्योरेकस्मिन् मृतेऽपरोऽपि तेन सार्धं भूमिसात् क्रियते। सर्वैरपि जनैरनुलङ्घनीयोऽयं नृशंसः समुदाचार" इति।

ईदृशनृशंसाचारश्रवणसञ्जातसाध्वसे मयि तस्य सम्बन्धिनो बान्धवाः सखायः प्रतिवेशिनश्च तदौर्ध्वदैहिककर्मसंविधानाय समाजग्मुः। तां च तस्योपरतां भार्यां महर्घनेपथ्येन संच्छाद्य विभूष्य च समग्रैरलङ्करणैः शवयाने बद्ध्वा शोकोचितनेपथ्येन तद्भर्त्रा सम्बन्धिबान्धवैश्च समनुसृतामदूरवर्तिनोऽत्युच्चस्यैकस्य शिखरिण

होने पर एक दिन मेरे स्नेही किसी पड़ोसी की पत्नी रोगग्रस्त होकर अकस्मात् मर गयी। जब मैं उस दुःखी को आश्वासन देने के लिए गया कि "तुम चिरञ्जीवी रहो" ऐसा कहा तो उसने मुझसे कहा—

"मित्र! तुम यह क्या असंगत बोल रहे हो, अरे मेरे जीवन की तो कुछ ही घड़ियाँ शेष हैं। मैं अतिशीघ्र ही अपनी प्रेयसी के साथ जमीन में गाड़ा जाऊँगा। क्योंकि यह हमारे देश की परम्परा ही है कि पति पत्नी में से एक के मरने पर दूसरे को भी उसके साथ गाड़ा जाता है। इस नृशंस परम्परा का कोई भी उल्लङ्घन नहीं कर सकता"।

इस नृशंस परम्परा को सुनकर मैं घबड़ा गया। उसी समय उसके सम्बन्धी, बान्धव, मित्र और पड़ोसी अन्त्येष्टि क्रिया सम्पन्न करने के लिए आये। उन्होंने उसकी मृत भार्या को अमूल्य वस्त्रों से ढका और समग्र अलङ्कारों से सजाया और शवयान पर बाँधा। उसके पीछे तत्कालोचित वेष में उसका पति एवं उसके सम्बन्धीजन जा रहे थे। वे उस शव को निकटस्थ एक अत्युच्च पर्वत की घाटी पर ले गए और एक बड़ी खाई में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपत्यकां नीत्वाऽपनीतपिधान एकत्र महागर्ते रज्जुभिरवातारयन्। तदनु तस्याः पतिमापृष्टबान्धवगणमविहितप्रतिबन्धलेशं तत्रैव शवयाने पार्श्वनिहिताशनजलपूर्णकलशे निवेश्य तस्मिन्नेवातिगभीरे गर्तेऽवतार्य गर्तमुखञ्च शिलया समाच्छाद्य स्वं स्वं गृहमयासिषुः। ईदृशक्रूराचारनिपत्यपरिचिततया सर्वथाऽनाकुलांस्तांस्तद्बान्धवान् विलोक्य विस्मयोद्वेगशबलस्वान्तोऽहं नितरां कुण्ठितमतिरभवम्। राजानं च तमवोचम्—

"देव! जीवितजननिखननाचारमिमं जगति क्वचिदप्यदृष्टश्रुतपूर्वं भवद्राज्ये प्रचलन्तं वीक्षमाणस्य मम दलतीव हृदयम्। अमानुषः सोऽयं समुदाचार" इति।

सोऽब्रवीत्—"आर्य! किमत्र क्रियतामनुल्लङ्घनीये नियमे? एतेन खलु नियमेन सर्वानप्यधिकुर्वताऽहमपि संयतोऽस्मि। दुर्दैवाद्यदि

उसके ऊपर का ढकना हटाकर रस्सियों से उस शव को नीचे उतार दिया। पश्चात् उसके पति को जब बन्धु-बान्धवों ने बिदा दी तब उस निरीह को उसी शवयान में जिसके निकट भोजन-सामग्री और जलपूर्ण कलश रखा हुआ था, बैठाकर उसी गहरी खाई में उतारकर और उसके मुँह को चट्टान से ढक कर वे लोग अपने-अपने घर चले गए। उसके बन्धु-बान्धव इस प्रकार के क्रूर आचरण से नित्य परिचित होने के कारण जरा भी व्याकुल नहीं थे। उन्हें देखकर मेरा मन विस्मय और उद्वेग से भर गया और मेरी मति कुण्ठित हो गई। मैंने राजा से कहा—

"महाराज! मैंने दुनियाँ में कहीं भी जीवित व्यक्ति को गाड़ने का क्रूर परम्परा न तो देखी थी और न सुनी थी। इसे आपके राज्य में प्रचलित होते हुए देखकर मेरा अन्तःकरण विदीर्ण हो रहा है। यह आचरण अत्यन्त अमानवीय है।" उसने कहा—

"आर्य! इस अलंघ्य नियम के विषय में क्या किया जा सकता है? यह नियम सभी के लिए है। और मैं भी इसके द्वारा बाँधा गया हूँ। दुर्भाग्य-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देवीमतिजोवेयं मयापि सैवेयं गतिर्निर्विवादमनुगन्तव्या" इति।

अहं पुनरवदम्—देव! किमेष नियमो वैदेशिकेष्वपि प्रवर्तते स उवाच ?—"अथ किम् ? नियतमेतद्द्वीपवर्तिसर्वजनसाधारणोऽयं नियमो न केनाप्युल्लङ्घनीय" इति।

एतदाकर्ण्य चिन्ताक्रान्तोऽहं खिन्नमना गृहं परावर्ते। दैवाद् भार्या चेत् प्रथमं म्रियेत हन्त मयाऽपि सानुगन्तव्येति विचारेण दीर्णहृदयः स्वल्पतमेऽपि तस्या अस्वास्थ्ये भृशमुद्विग्नस्तस्या भावि-निधनमुत्प्रेक्ष्यान्तर्वेपमानचेता अतिक्लेशेन कमपि कालमत्य-वाहयम्।

अथैकदा मद्दुर्दैवमहिम्ना वस्तुतः सा मदीया दयिता केनाप्य-साध्येनामयेनाक्रान्ता दिष्टान्तमवाप। अवशश्चाहं तस्याः शवेन

वश यदि महारानी के बाद मैं जीवित रहता हूँ तो मुझे भी निर्विवाद रूप से इसी गति का अनुसरण करना होगा।"

मैंने फिर पूछा—"महाराज! क्या यह नियम विदेशवासियों पर भी लागू है ?" उसने कहा—"और क्या! यह नियम निश्चितरूप से इस द्वीप पर रहनेवाले सभी लोगों के लिए समान है। इसे कोई नहीं टाल सकता।"

यह सुनकर मैं चिन्तित हुआ और खिन्न होकर घर की ओर लौटा, भाग्यवश यदि पत्नी पहले मर जाय तो मुझे भी इसका अनुसरण करना पड़ेगा। इस विचार से विदीर्ण होकर उसके जरा भी बीमार पड़ने पर मैं उद्विग्न होता था और उसके भावी मृत्यु की कल्पना कर मेरा अन्तःकरण काँप उठता था और अत्यन्त क्लेश से मैं वहाँ समय बिताता था।

पश्चात् एक बार मेरे दुर्दैव के कारण वस्तुतः मेरी पत्नी किसी असाध्य रोग से ग्रस्त होकर मर गई। पराधीन अवस्था में मुझे उसके शव के साथ यमपुरी पहुँचाया गया। उस समय मैं अपने दैव को कोस रहा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सह देवमाक्रोशन् सकलैः सभ्यैरिभ्यैश्च मद्गौरवेण स्वयं नरपतिना चानुस्रियमाणः कृतप्राणरक्षणभिक्षः शोकार्तरावभरितदिशावकाशोऽप्यस्पृष्टनिखिलजनहृदयः पितृसदनमनीये। सवेषभूषां मद्योषां प्रथमं समुत्सृज्य मामपि सपाथेयजलं महागर्तेऽधो निधाय पिधाय च तन्मुखं सनृपाः सर्वे ततः प्रातिष्ठन्त।

अहं चाधस्तलं सम्प्राप्तो गुहामेकां निरन्तरविकीर्णशवसहस्रपूतिगन्धामासन्नमरणकतिपयजीवितनिखातजनमन्दनिःश्वासश्रवणसन्दारितहृदयामपश्यम्। एकत्र च स्थितः स्थूलतमैर्वाष्पबिन्दुभिश्चिरमात्मनं समभ्युक्ष्य शोकोद्गारैस्तां गुहां प्रतिध्वनयन् सर्वथा निराशोऽप्यनुत्सृष्टजीविताशः प्राणसन्धारणान्वेषणप्रकारं चिन्तयन् सह सम्प्रेषितं किञ्चित्तत् पाथेयकं भुक्त्वा निश्चेतन इव निशां व्यनै-

---

था। सम्पूर्ण सभासद, धनी मानी तथा मेरे गौरव के अनुसार स्वयं राजा भी मेरा अनुसरण कर रहे थे। मैं अपने प्राणों की रक्षा की भीख माँग रहा था। मेरे शोकपूर्ण आक्रन्दन से समस्त दिशाएँ गूँज उठती थीं। परन्तु उन लोगों पर उसका जरा भी असर नहीं हुआ। उन्होंने सर्वप्रथम वेशभूषा से अलंकृत पत्नी को तथा बाद में भोजन तथा जल के साथ मुझे भी उस विशाल खाई में नीचे रख दिया और उसका मुंह ढककर वे सभी लोग वहाँ से चले गए।

मैं नीचे की ओर पहुँचा और वहाँ एक गुफा देखी। वहाँ चारों ओर निरन्तर बिखरे हुए हजारों शवों की दुर्गन्ध आ रही थी। मरणासन्न कतिपय जीवित गाड़े हुए व्यक्तियों के मन्द निःश्वास को सुनकर हृदय फट रहा था। एक कोने में खड़ा रहकर मैं स्थूलतम अश्रुकणों द्वारा अपने को भिगोते हुए और शोकपूर्ण उद्गारों से उस गुफा को प्रतिध्वनित करता हुआ जीवन के प्रति सर्वथा निराश होकर भी जीवन की आशा को न छोड़ते हुए प्राणधारण के उपाय को खोजने लगा। साथ में भेजा हुआ नाश्ता खाकर मैंने अचेतन के समान वह रात बिताई। मैं पास में रखी हुई खाद्य

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षम्। सविधस्थिते प्रत्यहमत्यल्पं भुज्यमानेऽपि क्रमेण क्षीणतामुपेयुषि मदन्नसंग्रहे नितरां जीवननिराश एकस्मिन्नहनि संस्थितमवतार्यमाणं पुरुषमेकं तमनुगच्छन्तीं जीवन्तीं तद्भार्यां चाऽपश्यम्। जीवितस्नेहेन नृशंसहृदयीकृतो व्यपगतसदसद्विवेकोऽहं पिहिते गर्तमुखे सहसा तां पृष्ठतः समुपेत्य शिलाघातमहनम्। तथा च सहावतारित पाथेयं जलं स्वायत्तीकृत्य कञ्चन कालं जीवितोऽतिष्ठम्। एवं काश्चन जीविताः स्त्रियः कांश्चिच्च पुरुषान् समये समये निहत्य तत्पाथेयापहरणायत्तजीवितः कालमक्षपयम्।

एकस्मिन् दिने सद्यो हतैकयोषिदारान्मन्दं पदशब्दं निःश्वासस्वनं चाश्रृणवम्। तां दिशमनुसृत्य गतोऽहं मत्समीपादपसरादेव किञ्चिद्वस्तु ध्वान्तेनानुपलक्ष्यमाणविशेषमलक्षयम्। सङ्कुचितायां

सामग्री को स्वल्पमात्रा में खा रहा था फिर भी वह क्रमशः कम होती जा रही थी। इससे मैं जीवन के प्रति अत्यन्त निराश हो गया। एक दिन मैंने मरे हुए एक पुरुष को उतारते हुए तथा उसकी जीवित पत्नी को उसका अनुसरण करते देखा। जीवन के प्रति स्नेह होने के कारण मेरा हृदय कठोर बन गया। मेरा सदसद्विवेक नष्ट हो गया था। मैंने ढके हुए उस खाई के मुँह की ओर अकस्मात् पीछे की ओर से आकर चट्टान के प्रहार से उस स्त्री को मार डाला। उसके साथ उतारे हुए पाथेय (अन्न) और जल को अपने अधिकार में लेकर कुछ समय मैं जीवित रहा। इस प्रकार कुछ जीवित स्त्रियों को और पुरुषों को समय-समय पर मार कर उनकी भोजन-सामग्री के अपहरण से अपना समय बिताया।

एक दिन तत्काल मरी हुई एक स्त्री को देखा तथा उसके पास से ही आनेवाली मन्द पदध्वनि और निःश्वास को सुना। उस दिशा की ओर बढ़ते हुए मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि मेरे पास से कोई चीज सरक रही है जो अन्धेरे के कारण दिखाई नहीं पड़ रही थी। उस संकुचित गुफा में नीचे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गुहायां तस्यामवाक्शिरास्तदनुसरन् केनचित्समयेन गुहावसाने छिद्रमेकं मत्प्रवेशपर्याप्तावकाशं प्राप्य सङ्कोचितगात्रो विनिर्गत्य बहिरागतः पुनरपि प्रत्यागतजीविताशः सिन्धुरोधःस्थितमात्मानमवालोकयम्। मयाऽनुस्रियमाणं च कञ्चन जलौकसं शवभक्षणाय तां गुहां प्रविश्य प्रतिनिर्वर्तमानं निरधारयम्।

अथाहं भूयस्तां गुहां प्रविश्य संगृहीतप्रचुरशवालङ्करणरत्नमौक्तिकराशिनिष्क्रमणावसरं प्रतीक्षमाणो द्वित्रैर्दिनैस्तत्रापतन्तं पोतमेकमद्राक्षम्। तदधिरूढैश्च गृहीतमत्सङ्केतैः प्रेषितं प्लवमारुह्य पोतं सम्प्राप्नवम्। तत्र च श्रुतमदद्भुतवार्तैस्तैः प्रशंसितसाहसः कैश्चिद्दिनैर्निरपायं गृहान् सम्प्राप्त आमोदप्रमोदमात्रव्यवसायोऽवसम्।

एवमुक्त्वा सिन्धुवादस्तानतिथिवरान् सहितवादानन्येद्युर्भोज-

की ओर सिर कर उसका अनुसरण करते हुए कुछ समय के बाद गुफा के अन्त में मैंने एक छेद को देखा और मेरे प्रवेशयोग्य पर्याप्त स्थान पाकर अपने शरीर को सिकोड़ते हुए वहाँ से निकलकर मैं बाहर आया। फिर से मेरे मन में जीने की आशा लौट आई। उस समय मैंने अपने को समुद्र के किनारे देखा। मैंने विश्वास किया कि कोई जलचर जन्तु शव-भक्षण के लिए मेरा अनुसरण करते हुए उस गुफा में प्रवेश कर लौट गया है।

पश्चात् मैंने पुनः उस गुफा में प्रवेश कर शवों के प्रचुर अलङ्कार, रत्न और मोतियों की राशि को एकत्र करते हुए निकलने के अवसर की प्रतीक्षा करते हुए दो-तीन दिनों में ही वहाँ आनेवाले एक जहाज को देखा। उस पर सवार व्यक्तियों द्वारा मेरा संकेत पाकर भेजी हुई नौका पर बैठकर जहाज पर पहुँचा। वहाँ पर मेरी आश्चर्यजनक कहानी को सुनकर उन्होंने मेरे साहस की प्रशंसा की। थोड़े ही दिनों में मैं सकुशल घर पहुँचा और आमोद-प्रमोद में मग्न होकर वहाँ रहने लगा।

यह कहकर सिन्धुवाद ने हितवाद के साथ उन अतिथियों को दूसरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाय पञ्चमसिन्धुयात्राकर्णनाय चागन्तुं सम्प्रार्थ्य विससर्ज। हितवादं च पूर्ववद्दीनारशतमर्तिसृज्य समतोषयत्।

अन्येद्युश्च समागतांस्तानुद्दिश्च सिन्धुवाद एवं स्वां पञ्चमीं यात्रां शंसितुमुपचक्रमे।

पञ्चमी सिन्धुयात्रा

एवं मया प्रत्यहमुपभुज्यमानैः सुखैर्मां पुनरपि सिन्धुयात्रासाहसाङ्गीकारान्निवारयितुमपर्याप्तैर्भूयो विचलितहृदयः पञ्चमीं यात्रामुद्दिश्य प्रस्थातुं सन्नद्धोऽभवम्। भृतके पोतेऽविश्वसन् स्वकीयेन व्ययेनाभिनवं पोतं निर्माप्य सर्वोपकरणैः परिकरितं तं सञ्चितवाणिज्योपयोगिवस्तुनिकरः समारुह्यान्यांश्च वणिजः सपण्यजातानधिरोप्यानुकूले वहति वाते प्रस्थितः कैश्चिद्दिनैर्विजनमेकं द्वीपं

दिन भोजन करने के लिए तथा पाँचवीं समुद्री यात्रा को सुनने के लिए आने की प्रार्थना कर छोड़ दिया। और हितवाद को पहले की भाँति सौ दीनार देकर संतुष्ट किया।

दूसरे दिन आये हुए अतिथियों को सिन्धुवाद अपनी पाँचवीं यात्रा इस प्रकार सुनाने लगा।

पाँचवीं सिन्धुयात्रा

इस प्रकार मैं प्रत्येक दिन अनेक सुखों का उपभोग कर रहा था, जो मुझे फिर से समुद्री यात्रा का साहस करने के लिए रोक नहीं सकते थे। इन्हीं सुखों ने मुझे पुनः विचलित किया और मैं पुनः पाँचवीं यात्रा करने के लिए सन्नद्ध हो गया। किराये के जहाज पर विश्वास न रखते हुए मैंने अपने खर्च से नये जहाज का निर्माण कर उसे सभी उपकरणों से सुसज्जित कर उस पर व्यापारोचित वस्तुओं का संग्रह करते हुए सवार होकर तथा विक्रेय वस्तुओं को बेचनेवाले अन्य व्यापारियों को भी सवार कराकर अनुकूल हवा बहने पर मैंने प्रस्थान किया। कुछ ही दिनों में एक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रापम्। तत्र चैकमतिविशालमण्डजाण्डं चञ्चूपुटोद्घाटितमुखान्तर-विनिर्गच्छन्नवशावकमपश्यम्। मया तत् स्प्रष्टुं निषिद्ध्यमाना अपि मत्महचरा मद्वचनमुपेक्ष्य कुठारेण तदण्डं विभिद्य तं शावकं खण्डोशोऽवकृत्य स्वयं विशीर्णशुष्कपर्णसमेधितेऽनले शूलाकृत्य जघसुः।

अवसिताभ्यवहारेषु तेषु नभसि दूरादापतन्तौ तच्छावकपितरौ विलोक्य सम्भ्रमाकुलतां गतेषु पोताध्यक्षो विज्ञातैतच्छकुन्तानुभाव-स्तस्या विपदः समुद्धरणाय त्वरितं प्रवहणमारोढुं सर्वानन्व-बन्धात्।

अथ तौ पक्षिणौ क्रेङ्कारैर्दुःश्रवैर्भग्नाण्डसन्दर्शनेन द्विगुणीकृतैः सकलमेव तं द्वीपमपूरयताम्। वैरनिर्यातनपरौ च क्षणाच्चञ्चूपुट-विधृताभिर्विशालाभिः शिलाभिरभिवर्षन्तावस्मत्प्रवहणं खण्डशः

निर्जन द्वीप में पहुँचा। वहाँ पर एक ऐसे विशाल पक्षी के अण्डे को देखा जिसमें से अपने चोंच को खोलते हुए शिशु निकल रहा था। मैंने यद्यपि उसका स्पर्श न करने के लिए अपने साथियों को रोका तथापि उन्होंने मेरे वचन की उपेक्षा कर कुल्हाड़ी द्वारा उस अण्डे को फोड़ कर और उस शिशु को टुकड़े-टुकड़े काटकर, स्वयं फैले हुए सूखे पत्तों में प्रज्वलित आग में उसे पका कर खाया।

भोजन के पश्चात् वे आकाश में उस शावक के माता-पिता को दूर से आते हुए देखकर जल्दी में घबड़ा गए। इसी समय जहाज के अधिकारी ने उन पक्षियों की चेष्टाओं का अनुमान लगाते हुए उस विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए सभी से शीघ्र जहाज पर सवार होने के लिए अनुरोध किया।

अनन्तर उन नर-मादा पक्षियों ने कर्णकटु चीत्कारों से जो टूटे हुए अण्डे को देखकर द्विगुणित हो गये थे सम्पूर्ण द्वीप को व्याप्त कर दिया। क्षणभर में बदले की भावना से चोंचों द्वारा उठायी गई विशाल शिलाओं को हमारे जहाज पर बरसाने लगे। और उन्होंने उस जहाज को और उस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कृत्वा तत्रस्थान् नाविकान् यात्रार्थिनश्च चूर्णीकृत्य जलधितलं प्रापयामासतुः। अहं तु मग्नोऽपि पुनरुन्मग्नो दैवाद्भग्नप्रवहणस्यैकमपर्यासोपवेशनावकाशं फलकमेकेन बाहुनाऽऽवलम्ब्य परेण सन्तरन्ननुकूलपवनेन कुत्राप्यत्युन्नततटे द्वीपे क्षिप्तः कथमपि तटमारुह्य समस्थलीमुपागम्।

तत्र च नवहरितशाद्वले क्षणं विश्रम्याऽपनीततरणश्रमः समन्तात् सञ्चरन् पल्लवभरैः, शलाटुभिः पक्वैश्च विपुलैः फलैरनेकवर्णसौन्दर्यहृतहृदयैः प्रसूनैश्च नमितान् पादपवरान् सर्वतो विलोकयन् रमणीयारामसमध्यगतमिवात्मानमवेदम्। तानि च पीयूषमधुराणि फलान्यास्वाद्य पीत्वा च प्रास्रवणमम्भो गतक्लमः सम्प्राप्तां निशीथिनीमेकाक्यवस्थानभयपरवशतया विघ्नितप्रगाढनिद्रासुखोऽन्तरान्तरा किञ्चित् स्वपन् भूयो जाग्रदात्मनो भागधेय-

---

पर सवार नाविकों तथा यात्रियों को चकनाचूर कर समुद्र तल में पहुँचा दिया। मैं तो डूबकर भी भाग्यवशात् तैरने लगा और टूटे हुए जहाज के पटरे को जिस पर बैठने के लिए थोड़ा स्थान था एक हाथ से पकड़कर दूसरे हाथ से तैरते हुए अनुकूल हवा द्वारा खूब ऊँचाई पर स्थित द्वीप पर फेंका जाता हुआ अत्यन्त कठिनाई से उसके किनारे चढ़कर समतल मैदान में पहुँचा।

नयी दूब से हरी-भरी उस समतल भूमि में क्षणभर विश्राम कर तैरने की थकान को दूर कर चारों ओर विचरण करते हुए, पल्लवों, अपरिपक्व एवं पक्व विपुल फलों और अनेक रङ्गों की सुषमा से एवं मनोहर फूलों से झुके हुए श्रेष्ठ वृक्षों को चारों ओर देखकर मैंने अपने को मानों एक सुन्दर उद्यान के बीच में उपस्थित-सा अनुभव किया। अमृत के समान मधुर उन फलों को खाकर और झरने के जल को पीकर मेरी थकावट दूर हुई। रात्रि में एकाकी रहना पड़ेगा इस डर से गाढ़ी नींद में बाधा पड़ रही थी। बीच-बीच में मैं सोता था और पुनः जागता था। इस प्रकार मैंने अपने

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेतद्यात्राचापलञ्च विनिन्दन् कथञ्चिदयापयम्। उदिते भगवति गभस्तिमालिनि प्रकाशितासु काष्ठासु प्राभातिकवातप्रसादितचेता इव इतस्ततो व्यचरम्।

विचरंश्च स्थूलकायं परिणतवयसं स्रोतस एकस्य तटे समुपासीनं पुरुषमेकमद्राक्षम्। तं चाऽऽत्मानमिव हृतभाग्यं प्रवहण-भङ्गविपदि पतितमाकलयन्नुपसृत्य प्राणमम्, तत्रावस्थितिकारण-मप्यपृच्छम्। स तु किमप्यभाषमाणः फलावचिचीषयाऽऽत्मानं स्कन्धयोर्निधाय स्रोतस्तरीतुं समकेतयत्।

अहन्तु तं स्थविरं गमनाक्षमतया मत्साहाय्यार्थिनमवगत्य दयापरवशः स्कन्धयोः प्रतिष्ठाप्य तस्य स्रोतसः परं तीरमुपासदम्। अथाऽवरुद्धनिजगतिना मयाऽवरोढुमीरितः स समुपेक्ष्य मदभिप्रायं

भाग्य को और इस यात्रा की चपलता को कोसते हुए रात किसी प्रकार बिताई। सूर्यनारायण के उदित होने तथा समस्त दिशाएँ प्रकाशित होने पर प्रातःकालीन वातावरण से प्रसन्नचित्त होकर मैं इधर-उधर विचरण करने लगा।

विचरण करते हुए मैंने ढलती हुई अवस्था के स्थूलकाय पुरुष को एक झरने के किनारे बैठे हुए देखा। मैंने उसे अपने ही समान अभागा और जहाज टूटने के कारण आपत्ति में पड़ा हुआ समझकर आगे बढ़कर उसे प्रणाम किया। और वहाँ उसके उपस्थिति का कारण पूछा। बिना उत्तर दिये फल बटोरने की इच्छा से अपने कन्धों पर बैठा कर झरना पार करने के लिए उसने इशारा किया।

मैं उस वृद्ध को चलने में असमर्थ होने के कारण मेरी सहायता का अभ्यर्थी समझ दयापरवश हो गया। और उसे अपने कन्धों पर बैठाकर झरने के दूसरे किनारे पहुँचा।

पश्चात् मेरी गति रुकने पर उतरने के लिए प्रेरित किये जाने पर भी वह मेरे कहने की उपेक्षा करते हुए अपने दोनों जंघाओं से मेरे

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जानुभ्यां मद्गलमवष्टभ्य दृढतरनिबद्धासनः समुपाविशत्। एवं तेनोद्बध्यमानगलो भारभुग्नः पादाभ्यामार्षभाजिनकर्कशचर्मावृताभ्यां पार्श्वयोरुदरे च प्रणुद्यमानः कैश्चित् क्षणैर्मूर्छितप्रायोऽभवम्।

एवमप्यविचलासनः स मध्ये मध्ये केवलं श्वसितुं दत्तावकाशः पादबन्धनं किञ्चिच्छिथिलयन् भूयो भूयो नोदयन् पशुमिव चलितुं मां बलात् प्रैरयत्। आदिनान्तमेवं प्रतुद्य सम्प्राप्तायां रात्रौ विश्रमितुकामेन मया तथैव निष्पीड्यमानगलेन सहास्वपत्। प्रभातायां च तस्यां मां पादाघातैर्विबोध्य भूयः परिभ्रमयन्नविश्रमं निष्पीडितगलोऽत्यर्थमदुनोत्।

एकस्मिन्नहनि भूमौ पतिताः काश्चित्तुम्बीरवलोक्य तास्वायततमामेकां गृहीत्वा संशोध्य तत्र प्रचुरोद्भवान् द्राक्षास्तबकानव-

---

गले को कसकर आसन लगाकर बैठ गया। इस प्रकार गला फँसने पर उसके बोझ से दबकर मैं बैल के चमड़े से निर्मित कर्कश जूतों से ढके हुए दोनों पैर बगलों और पेट में चुभोये जाने के कारण कुछ क्षणों में ही बेहोश हो गया।

इस प्रकार अपने आसन से जरा भी च्युत न होते हुए वह बीच-बीच में केवल साँस लेने के लिए समय देता था और पैरों के बन्धन कुछ शिथिल करता हुआ बार-बार मुझे पशु के समान चलने के लिए जबरदस्ती प्रेरित करने लगा। दिन ढलने तक इसी प्रकार कष्ट देकर वह रात्रि आने पर विश्राम के लिए मेरे साथ सो गया। उस समय भी मेरा गला उसी प्रकार दबाया जा रहा था। प्रातःकाल होने पर लातों से मुझे जगाकर वह बार-बार बिना विश्राम चलने के लिए प्रेरित करता हुआ गला दबाकर खूब कष्ट देने लगा।

एक दिन मैंने जमीन पर पड़ी हुई कुछ तुम्बियों को देखा और उनमें से सबसे बड़ी एक तुम्बी लेकर उसे साफ कर उसमें रस भरे अंगूर के गुच्छों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्य निष्पीड्य तद्रसेन तां सम्पूर्यैकत्र प्रदेशेऽवस्थाप्य कैश्चिद्दिनैरासवतां गतं तं रसं किञ्चिद् आस्वाद्य विस्मृतात्मदशो गायन्नृत्यंश्च प्रचलन् विलोकितमदवस्थापरिवर्तनेन तेन जरता सम्प्रार्थितस्तस्मै तां द्राक्षासवसम्भृतां तुम्बीं प्रायच्छम्। तन्माधूर्यहृतहृदयोऽसौ समग्रं तमासवं पीत्वा सञ्जातोन्माद इव मया सह गायन् स्वमसकृदान्दोलयन् शिथिलीकृतमद्गलबन्धनो मयाऽधिशिलं तरसा क्षिप्तस्तत्क्षणं विगतासुरपतत्।

इत्थं तस्मात् स्थविरसङ्कटान्मुक्तः सानन्दोऽहं सिन्धुतीरमागत्य कांश्चित् पेयमधुरजलसञ्जिघृक्षया सन्निरुद्धपोतान् जनानुपगम्य मत्तः श्रुताखिलवृत्तान्तैस्तैरुक्तः—'बहवो जनास्तत्स्थविरोद्बन्धनयातनयाऽत्र मृताः, दिष्ट्या त्वं तद्वशतां गतोऽपि विमुक्तोऽसि। सर्वे हि पोतवाहाः वणिजश्चेहागमनं परिहरन्ति' इति।

को निचोड़ कर उनके रस से भरकर एक स्थान पर रख दिया। कुछ दिनों में उससे बनी शराब को पीकर मैं अपनी दशा भूलकर नाचने, गाने लगा। मेरी अवस्था में परिवर्तन देखकर उस वृद्ध द्वारा प्रार्थना किये जाने पर मैंने उसे अंगूरी शराब से भरी हुई वह तुम्बी दे दी। उसकी मधुरता से आकृष्ट हो उसने पूरी शराब पी डाली और उन्मत्त होकर और मेरे साथ गाते हुए अपने को बार-बार हिलाकर मेरे गले के बन्धन को शिथिल किया।

मेरे द्वारा वेग से चट्टान पर फेंके जाने पर उसने तत्काल ही प्राण त्याग दिये। इस प्रकार उस वृद्ध के संकट से मुक्त होकर आनन्दपूर्वक मैं समुद्र तट पर आकर कुछ लोगों के पास आया, जो मधुर पेय जल का संग्रह करने की इच्छा से जहाज रोककर रुके थे। उनके पास आकर मैंने उन्हें अपनी पूरी कहानी सुनाई। यह सुनकर उन्होंने मुझसे कहा—"बहुत से लोग उस वृद्ध के कण्ठपाश की यातना से मर गए। भाग्य से तुम उसके अधीन होकर भी छूट गए। सभी जहाजी व्यापारी यहाँ आना टालते हैं।"

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवमुक्त्वा ते मां स्वपोतमनैषुः। पोताध्यक्षेण चाऽऽकर्णित-मदुदन्तेन सादरं स्वागतीकृतोऽहं ततः प्रस्थितः समुद्रतीरस्थं किञ्चिन्महत्पत्तनं प्रस्तरमयगृहावलीसङ्कुलं सम्प्राप्नवम्।

पोतस्थितेषु च मयि सविशेषं बद्धप्रणयः कश्चित् सार्थवाहो मां वैदेशिकवणिग्जनशिविरं नीत्वा, दत्वा चैकां महतीं गोणीं तादृशगोणीधारिणः कांश्चिज्जनानुपदर्श्याऽवदत्—'अनुसरैतान्। अनुकुरु चैतत्कृतिम्। नो जातु सङ्गमेषां त्यज। अन्यथा विपदि पतिष्यसि' इति।

अथ वयमभ्रङ्कषैरतिश्लक्ष्णतया दुरारोहस्कन्धैः फलसम्भृतै-र्नारिकेलतरुभिः पूरितं काननमेकं समासीदाम। स्वाश्च गोणीस्तै-र्नारिकेलफलैः पूरयितुकामा बहून् प्लवङ्गमान् नानाप्रमाणानस्मद-वलोकनसम्भ्रमेण चपलतया द्रुतं विद्रुत्य वृक्षाग्राणि समारूढान्

यह कहकर वे मुझे अपने जहाज पर ले गए। जहाज के मालिक द्वारा मेरी कहानी सुनकर आदरपूर्वक स्वागत किए जाने पर मैं वहाँ से चल पड़ा और समुद्री तट पर स्थित ऐसे महानगर में पहुँचा जो प्रस्तरों से निर्मित गृहपंक्तियों से भरा हुआ था।

एक सार्थवाह, जो जहाज पर सवार व्यक्तियों की अपेक्षा विशेषतः मुझ पर स्नेह करता था, उसने मुझे परदेशी श्रेष्ठियों के शिविर में ले जाकर वहाँ पर बोरी (गोणी) देकर उस प्रकार की बोरी लेनेवाले कुछ व्यक्तियों को दिखलाकर कहा—"इनका अनुसरण करो, इनके कार्य का अनुसरण करो, कभी भी साथ छोड़ने की इच्छा मत करो अन्यथा विपत्ति में पड़ोगे।"

पश्चात् हमलोग ऐसे जंगल में पहुँचे जो गगनचुम्बी नारियल के वृक्षों से भरा हुआ था। जिनकी शाखाओं पर फिसलाहट के कारण चढ़ना कठिन था और जो फलों से लदे थे। हमलोगों ने उन बोरियों को नारियल के फलों से भरने की इच्छा रखते हुए बहुत से वन्दरों को देखा, जो अनेक आकार के थे और जो हमें देखकर डर से चञ्चलता से जल्दी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यलोकयाम। सहचराननुकुर्वन्नहं तत्रस्थेषु तेषु प्रस्तरखण्डान् सङ्गृह्य समक्षिपम्। ते तु कपयः किलकिलाशब्दैश्चित्रैश्चेङ्गित-विशेषैः स्वक्रोधमाविष्कुर्वन्तः प्रत्याजिङ्घासया नारिकेलफलान्यस्मान् लक्ष्यीकृत्य प्राक्षिपन्। अनया च प्रक्रियया प्रकारान्तरेण सुदुर्लभै-र्नारिकेलफलैः स्वा गोणीः सम्पूर्य पत्तनमुपेत्य तद्विक्रयेण बहुधन-मुपार्जयम्।

सङ्गृहीतबहुनारिकेलैस्तैर्वणिग्जनैः सह प्रवहणेन ततः सम्प्र-स्थितोऽध्वनि केषुचिद् द्वीपेषु सिन्धुतले निमज्य मौक्तिकभृता अनल्पाः शुक्तीरानीय विक्रीणानेभ्यो वणिग्भ्यस्ताः क्रीत्वा विक्रीय च महता मूल्येन संवर्धितनिजविभवः सकुशलं वासरपुरं ततश्च विदामपुरं प्रत्यावर्तिषि। आगत्य च गृहं मल्लाभस्य दशममंशं धर्मकर्मसु विनियुज्य महता विभवेन सह ससुखं समयमयापयम्।"

दौड़कर वृक्ष को शाखाओं पर चढ़ गए। साथियों का अनुसरण करते हुए मैं वहाँ स्थित पत्थरों में से अनेक को एकत्रित कर उन्हें फेकने लगा। वे बन्दर किल-किल ध्वनि से और चित्र-विचित्र चेष्टाओं से अपना क्रोध प्रकट करते हुए प्रतिहिंसा की भावना से हमें लक्ष्य कर नारियल के फलों को फेकने लगे। इस प्रक्रिया से प्रकारांतर से मैंने उन अत्यन्त दुर्लभ नारियल के फलों से अपनी बोरियाँ भरकर शहर में आकर उनके विक्रय से प्रचुर धन अर्जित किया।

प्रचुर नारियल का संग्रह करनेवाले उन श्रेष्ठ वणिकों के साथ जहाज द्वारा मैंने वहाँ से प्रस्थान किया और मार्ग में पड़नेवाले कुछ द्वीपों पर उन व्यापारियों से उन सीपों को खरीदा जो समुद्रतल में गोता लगाकर मोतियों से प्रचुर सीपों को लाकर बेचते थे। मूल्य द्वारा बेचकर अपनी सम्पत्ति बढ़ाते हुए सकुशल वासरपुर तथा वहाँ से विदामपुर लौट आया। घर आकर अपने लाभ का दसवाँ हिस्सा धर्म-कार्य में खर्च करते हुए विशाल वैभव के साथ सुखपूर्वक समय बिताने लगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एवमुक्त्वा सिन्धुवादो हितवादाय विश्राणितदीनारशतोऽतिथिभिः समं गृहं प्रास्थापयत्।

परस्मिंश्च दिने सम्प्राप्तेषु तेषु पूर्ववद् भुक्तवत्सु सावधानं शृण्वत्सु स स्वां षष्ठीं सिन्धुयात्रां वर्णयितुमित्थमारभत।

षष्ठी सिन्धुयात्रा

वर्षमात्रं सुखोपभोगे प्रयाप्य भूयोऽपि दुर्दैवेन प्रेरितः साश्रुलोचनैर्बान्धवैर्निषिद्ध्यमानोऽपि षष्ठीं यात्रामुद्दिश्य गृहान्निरगाम्। प्रवहणाधिरूढः कञ्चन कालं सुखेन प्रचलतोऽस्मानेकदाऽकस्मात् पोताध्यक्षः सम्भ्रान्तः क्षिप्तशिरस्त्राण उल्लुञ्चितश्मश्रुः सन्ताडितशीर्षं आर्तनादैर्दिशः पूरयन्नस्माभिस्तत्कारणं पृष्टो दीर्घं निःश्वस्या-

---

यह कहकर सिन्धुवाद ने हितवाद को सौ दीनार देते हुए अतिथियों के साथ घर भेज दिया।

दूसरे दिन उनके आने पर और पूर्ववत् भोजन करने पर वे सावधान होकर सुनने लगे। उसने अपनी छठीं सिन्धुयात्रा इस प्रकार सुनानी आरम्भ की।

छठवीं सिन्धुयात्रा

केवल एक वर्ष आनन्द से बिताकर अश्रुपूर्ण नयनों से बन्धु-बान्धवों द्वारा रोके जाने पर भी दुर्दैव से प्रेरित होकर मैं पुनः छठी यात्रा करने के लिए घर से निकल पड़ा। जहाज पर सवार होने पर उसका अधिकारी कुछ समय सुखपूर्वक प्रवास करने के बाद हमलोगों से एक बार अकस्मात् घबड़ाकर शिरस्त्राण फेंककर दाढ़ी नोचते हुए सर फोड़ते हुए आर्तनादों द्वारा दिशाओं को गुञ्जित करने लगा। हमलोगों द्वारा उसका कारण पूछे जाने पर लम्बी साँस लेकर वह बोला—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वोचत्—'हन्त हताः स्मः। तीव्रेण सिन्धुरयेणोह्यमाना वयमचिरान्नंक्ष्यामः। केवलं परमेश्वरानुग्रह एवास्मांस्त्रातुं प्रभवति' इति। अथ वातबलेन त्रुटितासु पोतवसनरज्जुषु अवशतां गतं अस्मत्प्रवहणमेकस्मिन् शिलासङ्घाते निपत्य खण्डशोऽभवत्। एवमपि भक्ष्यपदार्थान् कानिचित् बहुमूल्यानि पण्यवस्तूनि च ससम्भ्रममुद्धृत्य तीरभुवमवतीर्णा अतिनिर्जनतया तस्य प्रदेशस्य जीवितनिराशाबाष्पाकुललोचना वयं भृशमाक्रन्दाम। गिरेरेकस्य पादमूले स्थिताश्च नानाभग्नप्रवहणावशेषान् नरास्थिसङ्घातान् उच्चावचपण्यवस्तुराशींश्चाभितो विकीर्णानपश्याम। सरितञ्चैकां सिन्धुप्रभवां द्वीपं तं परिवृत्य क्वचिद्विशालमुख्यां कन्दरायां विलीनामभिनवमौक्तिकमाणिक्यहीरकमणिमयं महीध्रं नयनहारिणीं तरुसन्दोहसुषमामदृष्टपूर्वां निरीक्ष्य विस्मयं प्राप्नुम।

"हाय मारे गए। भयंकर समुद्री तूफान में फँसने से हमलोग जल्दी ही नष्ट होंगे। केवल परमेश्वर की कृपा ही हमें बचा सकती है।"

अनन्तर ववण्डर के वेग से जहाज की रस्सियाँ टूटने पर बेकाबू होनेवाला हमारा जहाज एक चट्टान से टकरा कर चकनाचूर हो गया। ऐसी स्थिति में भी कुछ भक्ष्य पदार्थों को और कुछ बहुमूल्य विक्रेय वस्तुओं को जल्दी-जल्दी निकालकर किनारे उतरकर हमलोग उस प्रदेश के अत्यन्त निर्जन होने के कारण जीवन से निराश हो गए तथा अश्रुपूर्ण नयनों से खूब आक्रोश करने लगे। एक पहाड़ के नीचे खड़े होकर हमलोगों ने अनेक टूटे हुए जहाजों के भग्नावशेषों, मनुष्य की हड्डियों तथा अनेक प्रकार की श्रेष्ठ विक्रेय वस्तुओं को चारों ओर बिखरे हुए देखा। हमलोगों ने वहाँ एक ऐसी नदी को देखा जो समुद्र से उत्पन्न उस द्वीप की परिक्रमा कर विशाल मुखवाली कन्दरा में कहीं लुप्त हो गई थी। वहाँ अभिनव मोती और हीरों के पहाड़ को तथा नयनाह्लादिनी अदृष्टपूर्व वृक्षसमूह की सुषमा को देखकर हमलोग आश्चर्य करने लगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तत्र च द्वीपे भग्नहृदयेषु निश्चितनिधनेषु परस्परं समं विभाजितावशेषाशनजातेषु कञ्चित्कालमुषित्वा निरवशेषभक्ष्यतया एकैकशो नामशेषतां गतेषु निखिलेषु मत्सहचरेष्वत्यल्पावशेषाशन आत्मनोऽप्यचिराद् भाविनीं तामेवगतिमुत्प्रेक्षमाण एतद्यात्राक्लेशाङ्गीकरणेन मुहुरनुतप्यमानोऽहं दैवेन किञ्चिदाहितधैर्योऽवधानेन तां सिन्धूद्भूतां कन्दरायां निलीनां तटिनीं परिवीक्ष्य कन्दरान्ते क्वचिन्निर्गच्छन्तीं तां सम्भावयन् फलक एकस्मिन् सङ्गृहीतमाणिक्यस्फटिकमणिविसरमात्मानं दृढं बद्ध्वा परमेश्वरं ध्यायन् स्रोतस्विनीप्रवाहानुरोधेनावहम्।

कांश्चित् दिवसान् तिमिरावृतायां कन्दरायां क्वचित् सङ्कुचितप्रदेश उपरितनशिलास्वाहन्यमानशीर्षोऽतिमितं भोज्यं समये समयेऽश्नन् क्वचित् स्वपन् क्वचिज् जाग्रत् सन्ततमवहम्।

उस द्वीप पर हमलोगों का हृदय टूट चुका था। हमारी मृत्यु निश्चित थी। हमलोगों ने वहाँ अवशिष्ट भोजन-सामग्री परस्पर समानरूप से बाँट ली। कुछ समय बाद मेरे सम्पूर्ण साथी भोजन-सामग्री समाप्त होने के कारण एक-एक करके नामशेष हो गए। मेरे पास भी थोड़ा भोजन बच गया। मैं अपनी भी शीघ्र होनेवाली उसी दुर्गति की कल्पना करते हुए इस यात्रा के कष्ट को स्वीकार करने के लिए बार-बार पश्चात्ताप करने लगा। दैव ने मेरा धैर्य शेष रक्खा था। समुद्र से उत्पन्न उस नदी को गुफा में लुप्त देखकर, उसके अन्त में उसके निकासी का अनुमान लगाते हुए एक पटरे पर, माणिक्य-स्फटिक-मणि आदि की राशि को एकत्रित कर परमेश्वर का ध्यान करते हुए नदी के प्रवाह के अनुरूप बहने लगा।

कुछ दिनों तक बहते हुए अन्धेरे से भरी हुई उस गुफा में कहीं अत्यन्त संकुचित प्रदेश में ऊपर की चट्टानों पर मेरा सिर टकराता था। मैं समय-समय पर बहुत कम भोजन करता था। कभी सोता कभी जागता था इस प्रकार उस नदी में कुछ दिनों तक मैं निरन्तर बहता रहा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एकदा चैवं वहन् सुप्तप्रबुद्ध आत्मानमेकत्र समस्थल एकस्याः स्रवन्त्यास्तटोपकण्ठे संयतमदीयाश्रयफलके कालवर्णैः कैश्चित् पुरुषैः परिवृतमद्राक्षम्, उत्थाय च ताननमम् । तैश्च किञ्चिदुक्तोऽविदित-तद्भावस्तूष्णीं कञ्चित् कालं स्थितः स्वभाषायां विपत्समुत्तारणाय परमेश्वरं प्राशंसम् ।

तेषु च कृष्णपुरुषेषु विज्ञातमदीयभाष एको मत्प्रार्थनां श्रुत्वा समुपेत्यैवमवोचत्-'माऽस्मानिह निरीक्ष्य विस्मितो भूः । वयं किल गिरेः प्रवहन्त्यास्तटिन्या उदकं कुल्याभिर्विभज्य क्षेत्राणि स्वकीयानि संसेक्तुमनस इहागच्छाम । जलस्रोतसा साधं प्रवहत् त्वदाधारं फलकं विलोक्य विधृत्य बद्ध्वा च तीरप्रदेशे सुप्तस्य तव प्रबोध-कालं प्रतीक्षमाणा आस्म । दिष्ट्या त्वं महतः सङ्कटान्मुक्तः । साम्प्रतं स्ववृत्तान्तकथनेनानुगृहाणास्मान्' इति । अहं च भुक्त-

---

उसी प्रकार बहते हुए एक बार मैं सोये में जागा और अपने को सम-भूमि पर एक नदी के किनारे बँधे हुए अपने आश्रयफलक पर पड़े हुए देखा जो काले रंगों के पुरुषों से घिरा हुआ था । मैंने उठकर उन्हें प्रणाम किया । उन्होंने मुझसे कुछ कहा परन्तु मैं उनके अभिप्राय को न समझकर कुछ समय तक चुप रहा और अपनी भाषा में विपत्ति से छुटकारा पाने के लिए परमेश्वर की स्तुति करने लगा ।

उन काले पुरुषों में से एक ने मेरी भाषा तथा मेरी प्रार्थना समझकर और आगे बढ़कर इस प्रकार कहा—"हमें यहाँ देखकर तुम आश्चर्यचकित मत होना । हमलोग पहाड़ से बहनेवाली नदी के जल को नहरों में विभक्त कर अपने खेत सींचने की इच्छा से यहाँ आते हैं । जलप्रवाह के साथ बहनेवाले तुम्हारे आश्रयस्वरूप फलक को देखकर, उसे पकड़कर और बाँध-कर किनारे पर से तुम्हारे जागने के अवसर की प्रतीक्षा करते रहे । भाग्य से तुम भारी संकट से मुक्त हुए हो । इस समय अपना वृत्तांत कहकर हमें

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तद्वितीर्णकिञ्चिद्भोजनः स्वं वृत्तान्तमकथयम् ।

तेऽपि तदाकर्णनेनातिविस्मिता मदीयं साहसं सादरमभिष्टुत्य मां तत्रत्यं नृपतिमुपगन्तुं तं चात्मचित्रवृत्तान्तवर्णनेन विनोदयितुं भृशमन्वरुन्धन् । अङ्गीकृततत्प्रार्थनोऽहं सपदि समानीतं तुरङ्गममध्यारोपितः पार्श्वस्थितैः कैश्चित् प्रदर्श्यमानमार्गं इतरैश्च कैश्चित् स्कन्धाधिरोपितास्मत्सरत्ननिचयफलकैः अनुस्रियमाणोऽगच्छम् ।

तैश्च राजसदनं नीतः सिंहासनारूढं महाराजं वीक्ष्य जानुभ्यामवनौ निपत्य सविनयादरं दण्डप्रणाममकरवम् । स मां सप्रणयमुत्थाप्य पार्श्वं उपवेश्य मदभिधानं वसतिस्थानं तत्रागमनप्रकारमनेकसिन्धुयात्रावर्णनानि च मत्तः समाकर्ण्य प्रहृष्टो मद्यात्रावर्णनानि सौवर्णवर्णेषु विलेख्य स्वकीये पुस्तकालये सुरक्षितानि सङ्ग्रहोतु-

---

अनुगृहीत करो ।" मैंने उनके द्वारा दिया गया थोड़ा भोजन कर अपना वृत्तान्त कहा ।

उन्होंने भी सुनकर आश्चर्यचकित होते हुए मेरे साहस की आदरपूर्वक स्तुति कर मुझे वहाँ के राजा के पास जाने के लिए और अपना विचित्र वृत्तांत सुनाकर उसका मनोरञ्जन करने के लिए अत्यन्त आग्रह किया । उनकी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए मैं तत्काल लाये हुए घोड़े पर बैठते हुए चलने लगा । पार्श्ववर्ती कुछ लोग मुझे मार्ग दिखला रहे थे । और दूसरे लोग रत्नों को राशि के फलकों को कन्धे पर रखकर मेरा अनुसरण कर रहे थे ।

उनके द्वारा मैं राजप्रासाद में ले जाया गया । वहाँ राजा को सिंहासन पर आरूढ़ देखकर मैंने विनय और आदर के साथ घुटने टेककर प्रणाम किया । उसने मुझे प्रेमपूर्वक उठाकर अपने निकट बैठाकर और मुझसे मेरा नाम, निवास स्थान, आने का प्रकार और अनेक समुद्री यात्राओं के वर्णन सुनकर हर्षित होते हुए मेरे यात्रा-वर्णनों को सुवर्णाक्षरों में लिखवा कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मियेष। मया सहानीतानि तानि माणिक्यादीनि स्वरत्नकोशेऽपि सुदुर्लभान्यानर्घाणि वीक्ष्य भृशं परितुतोष।

तं तथा प्रहृष्टं निरीक्ष्य मया सविनयेन समर्प्यमाणं तं रत्ननिचयमस्वीकृत्य सोऽवदत्—"आर्य! सोऽयं रत्ननिचयस्त्वत्साहसपरितुष्टेन विधिना तुभ्यं प्रसादीकृतस्त्वयैवोपभोगयोग्यो नेतरेण। मया किलैषोऽभिनवोपहारैः परिवर्धनीयो न तनुतां नेयः" इति। अहं तस्यौदार्यं प्रशंसंस्तस्योत्तरोत्तरमभिवर्धमानामभिवृद्धिं सर्वतोभाविनीं समैहे।

अथ तेन मदर्थं प्रकल्पिते सपरिकरे सहपरिजने गृहे वसन् प्रत्यहमुपसेवितराजद्वारो नगरनिरीक्षणादिभिः समयं कञ्चिद् व्यत्यापयम्।

स द्वीपः किल विषुवरेखावस्थानेन समानदिननिशायामोऽचलो-

अपने पुस्तकालय में सुरक्षित रखने की इच्छा प्रकट की। मेरे साथ लाये हुए रत्नों को भी अत्यन्त दुर्लभ तथा बहुमूल्य देखकर वह अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ।

उसे इसप्रकार देखकर मैंने उस रत्नराशि को विनयपूर्वक उसे उपहार-स्वरूप समर्पित किया। उसको अस्वीकार कर उसने कहा—"महाशय! यह रत्नराशि तुम्हारे साहस से प्रसन्न विधाता ने तुम्हें भेंट की है। इसका उपभोग तुम ही कर सकते हो दूसरा नहीं। मुझे नूतन उपहारों से इसकी वृद्धि करनी चाहिए ह्रास नहीं।" मैंने उसके उदारता की प्रशंसा करते हुए उसकी उत्तरोत्तर होनेवाले सर्वांगीण उत्कर्ष की कामना की। पश्चात् मैंने उसके द्वारा मेरे लिए निर्मित घर में परिवार और सेवकों के साथ रहते हुए प्रतिदिन राजदरबार की सेवा करते हुए नगर निरीक्षण द्वारा कुछ समय बिताया।

उस द्वीप के विषुव रेखा (भूमध्य रेखा) के निकट होने के कारण दिन और रात्रि के प्रहर समान थे। उसकी ऐश्वर्यशालिनी राजधानी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पत्यकाया नयनहारिण्या मध्यमध्युषितया समृद्धया राजधान्या समलङ्कृतः पद्मरागादिमहर्घमणिमौक्तिकबहुलो धातुवठ्ठणत्कारिचित्रवर्णप्रस्तररत्नसम्भृतो वनश्रीसमाकृष्टनयनयुगो मां भृशं व्यनोदयत्।

अथैकदा सम्प्रार्थितेन भूपेनानुमतगृहगमनाय महान्तमर्थराशिं ततोऽधिगत्य प्रस्थिताय मे विदामपुराधीश्वराय श्रीहारीतमहाराजाय पत्रमेकं महर्घाजिनरत्नविलिखितमतिसुन्दरकुरुविन्दचषकं मौक्तिकोत्तमैः पूरितं सर्वरोगप्रशमनसमर्थं सर्पविशेषनिर्मोकमतिपृथून् करिदन्तान् कर्पूरराशिमनर्घरत्नभूषिताङ्गीमतिसुन्दरीं दासीं चैकां प्राभृतीकर्तुं समर्प्य महता स्नेहेन व्यसृजत्।

आगम्य च विदामपुरं पत्रेण सह तमुपहारराशिं हारीतनृपतये समर्प्य तस्य द्वीपभूपतेः समृद्धिमौदार्यं न्यायशीलतां

नयनाकर्षक पहाड़ी तराई में थी। उसमें पद्मराग आदि बहुमूल्य मौक्तिक प्रचुर मात्रा में थे। वह द्वीप धातुओं की तरह ठनठनाहट से युक्त रंग-बिरंगे रत्नों की चट्टानों से भरा हुआ था। उसकी वनश्री नयनों को आकृष्ट करती थी। उस द्वीप ने मेरा मन खूब बहलाया।

अनन्तर एक बार प्रार्थना करने पर राजा ने मुझे घर जाने की अनुमति दे दी और मैं वहाँ से विपुल धन-राशि पाकर निकल पड़ा। उस समय राजा ने मुझे विदामपुर के नरेश हारीत महाराज को एक पत्र दिया जो बहुमूल्य रत्नजटित चमड़े पर लिखा हुआ था, एक अत्यन्त सुन्दर लालमणि का प्याला जो उत्तम मोतियों से भरा हुआ था विशेष साँप की केंचुली जो सभी रोग दूर कर सकती थी, विशाल हाथी दाँत, कपूर-राशि और बहुमूल्य रत्नों से अलंकृत एक अत्यन्त सुन्दरी दासी को उपहार देने के लिए समर्पित कर अत्यन्त स्नेह से मुझे जाने की अनुमति दी।

विदामपुर आकर पत्र के साथ वह उपहार-राशि महाराज हारीत को समर्पित कर उस द्वीपाधिपति राजा के ऐश्वर्य, उदारता और न्यायशीलता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चोपवर्ण्य नितान्तं प्रसन्नान्तरात्तस्मादधिगतबहुद्रविणभरः स्वं गृहं प्रायाम् ।

एवमुक्त्वा सिन्धुवादो विरराम। हितवादोऽपि पूर्ववच्छतं दीनारान् सम्प्राप्य सन्तुष्टः सर्वैरतिथिभिः सह गृहं ययौ।

परेद्युश्च सम्प्राप्तेषु तेषु स एवं स्वां सप्तमीमन्तिमां च यात्रां समवर्णयत्—

सप्तमी सिन्धुयात्रा

गृहं प्रतिनिवृत्तः परिणतावस्थतामात्मनो विचार्य विश्रमितुकामो 'नेतः परं सिन्धुयात्रां प्रयास्यामी'ति निर्धार्य सुखेन गृह एव वस्तुं निरचिनवम् ।

एकस्मिंश्च दिने सुहृद्भिः सह सानन्दं स्थितोऽहं सहसा समागतेन राजाधिकारिणा 'देवो हारीतमहाराजस्त्वां दिदृक्षते,

---

का वर्णन कर अत्यन्त प्रसन्नचित्त से महाराज से प्रचुर धन-राशि प्राप्त कर मैं अपने घर आया ।

यह कहकर सिन्धुवाद चुप हो गया । हितवाद भी पहले की तरह सौ दीनारों को पाकर सन्तुष्ट होकर अतिथियों के साथ घर गया । दूसरे दिन इन लोगों के आने पर उसने अपनी सातवीं और अन्तिम यात्रा इस प्रकार सुनायी ।

सातवीं सिन्धुयात्रा

घर लौटकर अपनी ढलती अवस्था का विचारकर आराम करने की इच्छा से "अब मैं पुनः समुद्रोयात्रा नहीं करूँगा" यह संकल्प कर मैंने सुख से घर में ही रहने का निश्चय किया ।

एक दिन मैं मित्रों के साथ आनन्दपूर्वक बैठा हुआ था कि अकस्मात् राजकीय अधिकारी ने आकर कहा—"महाराज हारीत आपको देखना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

त्वरितं समागम्यताम्' इत्युक्तः सपदि गत्वा सविनयं कृतप्रमाणो महाराजहारीतेनोक्तः—'आर्य सिन्धुवाद! कस्मिंश्चिदावश्यके कर्मणि त्वां नियोजयितुमिच्छामि। त्वया किल इतः प्रस्थाय द्वीपाधिपतिं प्रेषितोपहारं त प्रत्युपहारा मयैतः प्रेष्यमाणाः सम्प्रापणीया' इति।

अहं त्वशनिपातेनेव तेन तद्वचसाऽभिहतस्तमवदम्—'देव! कः पुनर्देवादेशं विलङ्घयितुमीष्टे? किन्तु नानायात्राक्लेशपरिश्रान्तः परिणतवया नो जातु समुद्रयात्रां भूयो गन्तुं कृतसङ्कल्पोऽस्मि। इतः परं देवः प्रमाणम्' इत्युक्त्वा तमनेकात्मयात्रावृत्तान्तानश्रावयम्। आकर्ण्य च मद्वचः सोऽब्रवीत्—नूनं क्लेशबहुलाः समुद्रयात्राः। किन्तु मदर्थमेतत्कार्यं कृत्वा प्रत्यागम्यताम्। न भूयो भवन्तं क्लेशयिताऽस्मि' इति। एवं साग्रहमनुरुन्धतस्तस्याज्ञां

चाहते हैं, आप शीघ्र आयें"। मैंने तत्काल जाकर विनयपूर्वक उन्हें नमस्कार किया। महाराज हारीत ने मुझसे कहा—"आर्य सिन्धुवाद! एक आवश्यक काम में मैं तुम्हें नियुक्त करना चाहता हूँ। तुम्हें चाहिए कि उस द्वीपाधिपति राजा के पास मेरे द्वारा भेजे हुए उपहार को पहुँचाओ, जिसने मेरे पास उपहार भेजे हैं।"

मैंने वज्रपात के समान उनकी बात से आहत होकर उनसे कहा—"महाराज! आपकी आज्ञा का भला कौन उल्लंघन कर सकता है परन्तु अनेक यात्राओं की पीड़ा से मैं थक गया हूँ। अब मेरी अवस्था ढल रही है। और पुनः समुद्री यात्रा न करने का मैंने संकल्प किया है। इसके आगे आप मालिक हैं" यह कहकर मैंने उन्हें अपनी अनेक यात्राओं का वृत्तांत सुनाया। मेरी बात सुनकर उन्होंने कहा—"समुद्री यात्रायें निश्चितरूप से कष्टकारक होती हैं। किन्तु मेरे लिए आज यह कार्य कर लौट आइये। पुनः मैं आपको कष्ट नहीं दूँगा। इस प्रकार आग्रहपूर्वक अनुरोध करनेपर उनकी आज्ञा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'यथाज्ञापयति देव' इति मूर्ध्नाऽऽदाय सन्तुष्टात् तस्माल्लब्धयात्रौपयिकदीनारसहस्रो भूयो यात्रार्थं सन्नद्धोऽभवम्।

अथ गृहीत्वा तानि प्रदेयोपहारवस्तूनि राज्ञा च स्वहस्तलिखितं पत्रं वासरपुरमेत्य प्रवहणरूढोऽभवम्। निष्प्रत्यूहं च तं द्वीपमुपगम्य प्रधानाधिकारिणो दृष्ट्वा निवेदितस्वागमनोद्देश्यो यथासम्भवं त्वरितं नृपसन्दर्शनं कारयितुं न्यवेदयम्। तैश्च निवेदितागमनो राजानं समासाद्य तत्क्षणं मां प्रत्यभिज्ञाय प्रदर्शितप्रमदातिशयाय तस्मै तानि महार्घाणि हारीतनृपतिप्रेषितान्युपायनानि पत्रं चोपाहरम्। स च तानि सौहार्दरमणीयानि प्रसन्नचेताः सादरमङ्गीचकार।

ततोऽहं तमाभन्त्र्याविलम्बितं विदामपुरमधिगन्तुकामस्ततो भूयः समासादितभूरिविभवस्ततः प्रातिष्ठे। द्वित्राणि दिनानि स्वं

को "जैसी महाराज आज्ञा दें", इस प्रकार नतमस्तक होकर स्वीकार करते हुए प्रसन्न होने वाले राजा से यात्रा के लिए उपयुक्त एक हजार दीनार प्राप्त कर मैं फिर से यात्रा करने के लिए सन्नद्ध हो गया।

पश्चात् राजा के द्वारा अपने हाथ से लिखे हुए पत्र और देने योग्य उपहार-सामग्री को लेकर मैं वासरपुर पहुँचकर जहाज पर सवार हो गया और निर्विघ्नरूप से उस द्वीप में आकर मुख्य अधिकारियों से भेंटकर अपने आगमन का उद्देश्य निवेदित करते हुए यथासम्भव शीघ्र राजा से साक्षात्कार कराने के लिए उनसे प्रार्थना की। उनके द्वारा आगमन की सूचना देने पर मैं राजा के पास पहुँचा। उसने तत्काल मुझे पहचान कर अत्यन्त हर्ष प्रकट किया। मैंने उसे महाराज हारीत द्वारा प्रेषित बहुमूल्य उपहार समर्पित किया। उसने सहृदयता से प्रसन्नचित्त होकर आदरपूर्वक स्वीकार किया।

पश्चात् मैंने उससे बिदा लेकर शीघ्र विदामपुर पहुँचने के लिए इच्छुक होकर वहाँ से प्रचुर सम्पत्ति प्राप्तकर प्रस्थान किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मार्गमाक्रोमतामस्माकं पोतं सहसा दासविक्रयव्यवसायाः केचिद्वणिजोऽवरुद्ध्य, अस्मान् बन्दिनोऽकार्षुः। अस्मन्नेपथ्यं चावतार्य दासोचितवसनैरस्मानाच्छाद्य कञ्चिद् दूरवर्तिनं द्वीपं नीत्वा दासीभूतान् व्यक्रीणत।

अहं त्वेकेनाढ्येन वणिजा क्रीत्वा गृहं नीतो दत्तभोजनाच्छादनमात्रो वसन्नेकदा तेन पृष्टः—'अपि कञ्चिद् व्यवसायं वेत्सि?' इति। वृत्त्या वणिजं दासव्यवसायिभिः सर्वस्वहरणपूर्वकं मां विक्रीतं श्रुत्वा स भूयोऽपृच्छत्—'कञ्चिद्धनुर्बाणप्रयोगं शिक्षितवानसि?' इति। बाल्ये कृतैतदभ्यासं मन्मुखाद्विदित्वा दत्तधनुर्बाण आत्मनः पृष्ठभागे हस्तिपृष्ठे मां समुपवेश्य कियद्दूरे स्थितं गहनमेकमनयत्। तत्र च मामवतार्योत्तुङ्गं वनस्पतिमेकं प्रदर्श्यावोचत्—'आरोहैतं पादपम्। अत्र च स्थितोऽधः समापततो गजान् जहि।

दो-तीन दिन तक हमलोग चल रहे थे। इतने में अकस्मात् दासों का विक्रय करनेवाले कुछ व्यापारियों ने हमारा जहाज रोककर हमें बन्दी बना लिया और हमारे कपड़े उतारकर और हमें दासों के योग्य कपड़े पहनाकर कुछ दूर स्थित द्वीप में हमें ले जाकर बेच दिया।

मैं एक सम्पन्न व्यापारी द्वारा खरीदकर उसके घर ले जाया गया। वह मुझे केवल भोजन-वस्त्र देता था। उसके घर रहते हुए उसने मुझे एक बार पूछा—"क्या तुम कुछ व्यवसाय भी जानते हो? मैं जीविका के लिए वाणिज्य करता हूँ तथा दासों का व्यवसाय करनेवालों ने मुझे जबरदस्ती दास बनाकर बेचा है। मेरी यह कहानी सुनकर उसने फिर मुझसे पूछा—"क्या तुमने धनुष-बाण का प्रयोग करना सीखा है"? बचपन में किए गए इस अभ्यास को मेरे मुख से जानकर उसने मुझे धनुष-बाण दिया और मुझे अपने पीछे हाथी पर बैठाकर कुछ दूर पर स्थित एक जंगल में ले गया। वहाँ मुझे उतारकर एक ऊँचे वृक्ष को दिखाकर उसने कहा—"इस वृक्ष पर चढ़ो। यहाँ पर बैठकर नीचे आनेवाले हाथियों को मारो, यह

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वनमिदं तैरभितो व्याप्तम्। समाघातेन पतितमात्रे गजे मामागत्य निवेदय' इति। अथ स किञ्चिदशनजातं मह्यं वितीर्य नगरमयासीत्। अहं निखिलां रात्रिं वृक्षारूढोऽतिष्ठम्।

अथ प्रभात उदितमात्रे भगवति सवितरि बृहद्दन्तावलयूथं पुरः प्रादुरभूत्। सपदि च मया मुक्तैः सायकैरेकस्मिन्निपतिते, परेषु च भयेन विद्रुतेषु, वृक्षादवरुह्य तदिदं वृत्तं निशामयितुं स्वामिनमभ्युपागच्छम्। प्रशस्यमानश्च तेन सहैव काननं गत्वा गर्तमेकं खनित्वा तत्करिशवं तद्दन्तान् जिघृक्षतस्तत्पूतीभावं प्रतीक्षमाणस्य स्वामिन आदेशानुसारं न्यखनम्।

एवं मासद्वयं वनं गत्वा प्रत्यहं नवं नवं वृक्षमारूढो दन्तिनो निघ्ननन्नयापयम्। एकस्मिन् पुनर्दिवसे यथाभ्यस्तं स्वं पन्थानमगत्वा परश्शतान् दन्तिनो बृंहितैः सकलमेव तद्वनं पूरयतः पादाघातेनावनिमवनमयतो मदारूढं शाखिनं सर्वतः परिवृत्य मदभिमुखमुन्नामितैः शुण्डादण्डैर्मामाक्रष्टुं प्रयतमानान्निरीक्ष्य साध्व साक्रान्तस्य मम हस्ताभ्यां सशरं धनुरधोऽपतत्।

जंगल चारों ओर से उनके द्वारा भरा हुआ है। आघात से हाथी के गिरते ही मुझे आकर सूचना दो'' पश्चात् वह कुछ खाद्य-सामग्री मुझे देकर शहर चला गया। मैं पूरी रात पेड़ पर चढ़कर ही बैठा रहा।

प्रातः सूर्योदय होते ही सामने विशाल हाथियों का समूह प्रकट हुआ। तत्काल मेरे द्वारा छोड़े हुए बाणों से एक के गिरने पर और दूसरों के भय से भाग जाने पर मैं वृक्ष से उतरकर यह समाचार सुनाने मालिक के पास पहुँचा। उसने मेरी प्रशंसा की। मैंने उसीके साथ जंगल में जाकर हाथी के शव को गाड़ा और उसके दांतों को लेने के लिए उसके दुर्गन्ध रहित होने तक प्रतीक्षा करनेवाले स्वामी के आदेश के अनुसार गड्ढा खोद कर गाड़ दिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ तेषु बंहिष्ठः करीन्द्रः करेण मदधिरूढवृक्षमावेष्टय प्रसभं चालयन् समूलमुन्मूल्य भूमावपातयत् । तेन च सार्धं निपतितं मां शुण्डया गृहीत्वा स्कन्धयोरवस्थाप्य मृतप्रायं स्वयूथैरनुसृतः कञ्चन विजनप्रदेशं नीत्वाऽघः क्षित्वा क्वचिदयासीत् ।

सर्वमेतत् स्वप्नविलसितमिव विचिन्तयन्नहं कञ्चित्कालं प्रतीक्ष्य वीतगजशङ्क एकत्र गिरिप्रदेशे करिदन्तास्थिराशिसङ्कुले स्थितमात्मानमपश्यम् । तं च प्रदेशं तेषां श्मशानस्थानं दन्तलिप्सया भूयो गजहननान्मां निवारयितुमिव तैः प्रदर्शितं विलोक्य शनैस्ततः प्रतिनिवृत्त एकेनाह्ना एकया च निशया मत्स्वामिनोऽन्तिकं प्रत्यागमम् ।

इस प्रकार जंगल में जाकर प्रतिदिन नये पेड़ पर चढ़कर हाथियों को मारते हुए मैंने दो मास बिताए । पुनः एक दिन अपने अभ्यस्त मार्ग पर मेरी तरफ आनेवाले तथा गर्जना से सम्पूर्ण वन को प्रतिध्वनित करनेवाले और भूमि को कम्पित करनेवाले सैकड़ों हाथियों को मैंने देखा उन हाथियों ने चारों ओर से मेरे वृक्ष को घेर लिया और मेरी ओर उठाये सूँड़ों से वे मुझे खीचने का प्रयत्न करने लगे । उन्हें देखकर भयवश मेरे हाथों से धनुष-बाण नीचे गिर गए ।

पश्चात् उनमें से विशालतम गजराज ने जिस वृक्ष पर मैं बैठा हुआ था उसको सूँड़ से लपेटकर उसे हठात् हिलाते हुए जड़ के साथ उखाड़ कर जमीनपर गिरा दिया । उसके (पेड़) साथ गिरनेवाले मुझे सूँड़ से उठाकर कंधे पर रखकर अपने झुण्डों द्वारा अनुसृत होता हुआ मृतप्राय मुझे किसी निर्जन प्रदेश में ले जाकर और नीचे फेंककर वह कहीं चला गया ।

इस समस्त घटना को एक स्वप्न की तरह अनुभव करते हुए मैंने कुछ समय तक प्रतीक्षा कर हाथियों के भय से मुक्त हो हाँथी दाँत और हड्डियों से व्याप्त पहाड़ी प्रदेश में अपने को देखा । वह प्रदेश श्मशान भूमि थी जो उन्होंने हाँथी दाँत के लोभ में पड़कर हाथियों के मारने से बार-बार रोकने के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स तु मददर्शनेनोद्विग्नो मदन्वेषणेच्छया तत्काननं गत्वा दृष्ट-समुन्मूलितमदाश्रयपादपो मां करियूथामिषतां गतमुपरत मन्यमानः सहसा सकुशलं प्रत्यागतं विलोक्यानन्दनिर्भरोऽभवत्। श्रुताखिल-वृत्तश्च मया सह हस्तिनमारुह्य तं प्रदेशं गत्वा संगृहीतप्रचुरकरि-दन्तराशिर्नगरं प्रत्याजगाम।

अथासौ मामब्रवीत्—भद्र! जीवनसंशय आत्मानं निपात्य मह्यमेतममितविभवप्रदं दन्तावलदन्तनिधिमाविष्कुर्वता त्वया बहूप-कृतोऽस्मि। वहवः किलैतत्कर्मणि मया नियोजिता दासा एषां वन्यद्विपानामामिषत्वमगमन्। दिष्ट्या सुरक्षितजावितः प्रत्या-गतोऽसि। तदहं त्वां दास्याद्विमोचयामि। गृहाणैतत् पारि-तोषिकम्' इति।

लिए ही मानों उन्होंने मुझे दिखाई थी। उसे देखकर वहाँ से लौटते हुए एक दिन और एक रात में मैं अपने स्वामी के पास पहुँचा।

वह मुझे न देखकर उद्विग्न हो गया था और मुझे खोजने की इच्छा से उस जंगल में जाकर उसने जड़ से उखड़े हुए उस पेड़ को देख लिया था जिस पर मैं बैठा हुआ था। अतः उसने मुझे उन हाथियों के झुण्ड से मरा हुआ समझ लिया था। वह मुझे अकस्मात् सकुशल वापस आते हुए देख कर आनन्दित हो गया। मेरी पूरी कहानी सुनकर मेरे साथ हाँथी पर बैठकर उस स्थान में जाकर प्रचुर मात्रा में हाँथी दाँत एकत्रित कर वह शहर लौट आया।

अनन्तर उसने मुझसे कहा—"अपनी जान की बाजी लगाकर अपर-मित सम्पत्ति दिलानेवाले हाँथी दाँतों का खजाना मुझे देकर तुमने मेरे ऊपर बहुत उपकार किया है। मैंने इस काम के लिए बहुत से दासों को नियुक्त किया था। जो इन जंगली हाथियों के भोजन बन गए। भाग्य से तुम अपने प्राण बचाकर लौट आये हो। अतः मैं तुम्हें दासता से मुक्त कर रहा हूँ। और यह पारतोषिक भी दे रहा हूँ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तस्यैतां कृपां कृतज्ञतयाऽङ्गीकृत्य स्वदेशं प्रत्यावर्तितुं कृताभ्यर्थनं मां 'नन्वचिरात् कश्चिदन्तसंग्रहेक्षया समागतेषु पोतेषु त्वां विसृक्ष्यामी'त्यवोचत्। कञ्चित्कालं तेन प्ररूढप्रणयातिशयेन सह वसन् पोतागमं प्रतीक्षमाणः सानन्दमत्यवाहयम्।

अथागतेषु पोतेष्वेकं तेन विसृष्टभूरिद्विरददशनराशिर्लब्धापरिमित पारितोषिकः समारुह्य ततः प्रस्थितोऽभवम्। मार्गे आपतितेषु केषुचिद् द्वीपेषु बहुना मूल्येन तं करिदन्तनिचयं विक्रीय कृतबहुधनसंग्रहः सुखपूर्वकं विदामपुरं पुनः समासदम्।

महाराजहारीतनृपतिञ्च सद्य उपेत्यात्मवृत्तमश्रावयम्। मत्प्रत्यागमनविलम्बेन भृशमुद्विग्नोऽसौ नितरामपरूढप्रहर्षः करिवृत्तश्रवणेनोद्वेलकुतूहलाश्चर्यो मदीयाः सप्तसिन्धुयात्राः सुवर्णाक्षरेषु

उसकी कृपा को कृतज्ञतापूर्वक स्वीकार कर स्वदेश लौटने के लिए मेरे द्वारा प्रार्थना किए जाने पर उसने मुझसे कहा—"शीघ्र ही हाँथी दाँत लेने की इच्छा से आए हुए जहाजों पर मैं तुम्हें जाने की अनुमति दूँगा। कुछ समय प्रेमपूर्वक उसके साथ रहकर जहाज की प्रतीक्षा में आनन्दपूर्वक कुछ समय व्यतीत किया।

अनन्तर आए हुए जहाजों में से एक पर आरूढ़ होकर मैंने वहाँ से प्रस्थान किया। उसने मुझे प्रचुर हाँथी दाँत तथा अपरमित पारितोषिक दिये थे रास्ते में पड़नेवाले कुछ द्वीपों पर अधिक मूल्य से उन हाँथी दाँतों को वेचकर प्रचुर धन अर्जित कर मैं पुनः सुखपूर्वक विदामपुर पहुँचा।

और महाराज हारीत के पास तत्काल जाकर मैंने अपना वृत्तांत सुनाया। मेरे लौटने में देर होने के कारण वह अत्यन्त उद्विग्न थे मेरे लौटने से उसे अति हर्ष हुआ। तथा हाथियों की कहानी सुनने से वह आश्चर्यचकित हुआ। उसने मेरी सातों समुद्री यात्राओं को स्वर्णाक्षरों में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समालेख्य स्वरत्नकोशे निधातुमधिकारिवर्गं समादिश्य बहुभिः प्रसादातिशयैर्मां सम्भाव्य महताऽऽदरेण व्यसृजत्।

इत्येवं सिन्धुवादः सप्तसिन्धुयात्रावर्णनमुपसंहृत्य हितवादमुद्दिश्यावदत् —'भद्र हितवाद! कश्चित्त्वया कश्चित् सोढमदधिकक्लेशो जनः श्रुतपूर्वः? अपि भवानियतो महतः क्लेशाननुभवतो सम्प्रति शान्तिसुखोपभोगमन्याय्यं मन्यते?' इति।

स तु 'आर्य सिन्धुवाद! तथाविधान् यात्रापरिक्लेशाननुभूय समुपार्जितविभवो भवान् सम्प्रति विश्रामसुखोपभोगं सर्वथा कर्तुमर्हति। अहं पुनरात्मनो दीनावस्थया खेदितस्तथाऽनुचितं प्रालपम्। क्षमस्व, उपभुङ्क्ष्व चिरञ्च स्वपरिश्रमोपचितां श्रियम्' इत्यवदत्।

लिखवाकर और अधिकारियों को अपने रत्नकोष में रखने का आदेश देकर मेरे ऊपर बहुत कृपा करते हुए अत्यन्त आदर के साथ मुझे विदा किया।

यह कहकर सिन्धुवाद ने सातवीं समुद्री यात्रा वर्णन का उपसंहार करते हुए हितवाद से कहा—"मित्र हितवाद! क्या तुमने ऐसे किसी व्यक्ति के बारे में पहले सुना है। जिसने मुझसे अधिक कष्ट पाया हो। इतने बड़े कष्टों का अनुभव कर मैं जो इस समय शान्ति और सुख का उपभोग कर रहा हूँ क्या आप उसे अनुचित मानते हैं।" उसने कहा—"आर्य सिन्धुवाद! आपने इस प्रकार के यात्राओं के कष्टों का अनुभव कर धन अर्जित किया है आप सम्प्रति सर्वथा विश्राम और सुख का अनुभव कर सकते हैं। मैंने तो अपनी गरीबी के कारण खिन्न होकर इस प्रकार का अनुचित प्रलाप किया। आप मुझे क्षमा करें और अपने परिश्रम से अर्जित सम्पत्ति का चिरकाल उपभोग करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिन्धुवादस्तस्मै प्रत्यहमिव दीनारशतमतिसृज्य तमात्मनो दौवारिकपदे न्ययोजयत्।

एतत् सहस्ररजनीचरिताम्भोधिमन्थनात्।
लब्धमत्यद्भुतं सिन्धुवादवृत्तकथामृतम्॥
आन्ध्रेण कविना नाम्ना श्रीमल्लक्ष्मणशास्त्रिणा।
अर्थतः संस्कृते गद्येऽनूद्य सस्नेहमर्प्यते॥
दोषान् मनुष्यसुलभान् समुपेक्ष्य क्वचित्सतः।
आस्वादयन्तु रसिका एतद्रसममत्सराः॥

——*——

सिन्धुवाद ने उसे प्रतिदिन के समान सौ दीनार देकर अपने यहाँ द्वारपाल पद पर नियुक्त किया।

यह 'सिन्धुवादवृत्त' अत्यन्त अद्भुत कथानक 'सहस्ररजनी चरित' नामक (अरबी) कथाग्रंथरूपी समुद्रमन्थन से प्राप्त हुआ है।

आन्ध्र कवि श्रीमान् लक्ष्मण शास्त्री ने इसका भावात्मक संस्कृत गद्यानुवाद कर इसे (पाठकों को) स्नेहपूर्वक समर्पित किया है।

गुणग्राही सज्जनों से निवेदन है कि मनुष्यसुलभ दोषों की उपेक्षाकर इसमें सन्निहित रस का आस्वादन करें।

समाप्त

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

सन्धुवादवृत्तस्य विषमस्थलटिप्पणी

उपोद्घातः

'श्रीमद्विरामपुरपुरन्दरस्य श्रीहारीतमहापतेः आधिराज्ये वसन् हितवादो नाम कश्चन् भारवहनवृत्तिः अकिञ्चन एकस्मिन् निदाघदिवसे मार्गमेकं समाससाद इत्यन्वयः ।'

(पृष्ठ १) 'श्रीमद्विदामपुरपुरन्दरस्य= वैभवशालिविदामपुरभूपालस्य अत्र इन्द्रवाची पुरन्दरशब्दः नृपार्थे लाक्षणिकः रूपकमलङ्कारः । आधिराज्ये अधिको राजा अधिराजः 'राजाहः सखिभ्यष्टच्' इति समासान्तष्टच्प्रत्ययः । सार्वभौमो नरेश इत्यर्थः । तस्य भावः आधिराज्यम् = सार्वभौमराज्यम्, तस्मिन् । हितवादं विशिनष्टि 'भारवहनवृत्तिः' भारस्य वहनमेव वृत्तिः यस्य सः । अकिञ्चनः = निर्धनः । 'निदाघदिवसे' नितरां दह्यतेऽत्रेति निदाघः= ग्रीष्मः, 'ग्रीष्म ऊष्मकः निदाघ उष्णोपगम' इत्यमरः । स चासौ दिवसश्च निदाघदिवसः तस्मिन् ग्रीष्मदिवसे इत्यर्थः । परिश्रमातिशयक्लान्तघर्मसलिलार्द्रगात्रः-परिश्रमातिशयेन क्लान्तं घर्मसलिलैः आर्द्रं गात्रं यस्य सः इति । हितवाद विशेषणम् । मार्गं विशिनष्टि—'गन्धजलावसेकसम्भवामोदमेदुरीकृतासन्नवसुमतिपरिसरम्—गन्धजलानाम् = सुगन्धिसलिलानाम् अवसेकात्= सिञ्चनात् संभवः = उत्पत्तिः = यस्य एवम्भूतः यः आमोदः = सुगन्धिः तेन मेदुरीकृतः = व्याप्तः आसन्नः = समीपवर्ती वसुमत्याः = भूमेः परिसरः = पर्यन्तभूः यस्य तम् । 'पर्यन्तभूः परिसरः' इत्यमरः । समाससाद=प्राप । विशिश्रमिषुः = विश्रमितुमिच्छुः ।

(पृष्ठ २) हर्म्योत्तमस्य=उत्तमं हर्म्यं हर्म्योत्तमम्, तस्य । 'हर्म्यादि धनिनां वासः' इत्यमरः । 'पिकशुकसारिकामुखगणविरुतम्'—पिकाः = कोकिलाः

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

'कोकिलः पिक इत्यपि' इत्यमरः। पिकाः=शुकाः सारिकाः मुखानि=प्रधानानि यस्य एवम्भूतः यः खगानां=पक्षिणां गणः तस्य विरुतम्=कलरवम्। गृहस्वामिजिज्ञासाकुतूहलपरिगृहीतचेताः—गृहस्वामिनः जिज्ञासायाः कुतूहलेन परिगृहीतम् चेतः यस्य सः इति। हितवादविशेषणम्। 'सकलमहासिन्धुयात्राप्रथितयशसः—सकलाः=सम्पूर्णाः समसंख्याकाः महासिन्धूनां=महासागराणां याः यात्राः=प्रवासाः, ताभिः प्रथितं = प्रसिद्धं, यशः=कीर्तिः, यस्य तस्येति सिंधुवादविशेषणम्। उपजहसुः = उपहासंचक्रुः। शोचनीयतमाम्=अतिकष्टकारिणीम्।

(पृष्ठ ३) अक्लेशलेशमेव=विनापरिश्रममेव। आनन्दसम्पदोः परां काष्ठाम्। हर्षस्य = वैभवस्य च चरमाम् अवस्थाम्। दुर्भगेन = दुर्भाग्यसम्पन्नेन। रथ्यास्थः = मार्गस्थितः भार इत्यर्थः।

(पृष्ठ ४) समृद्धभोजनोत्सवप्रवृत्तभद्रजनम्—समृद्धाः = वैभवशालिनः भोजनोत्सवे प्रवृत्ताः भद्राः=शिष्टाः जनाः यस्मिंस्तत् इति भवनविशेषणम्। गभीरमधुराकारम्—गभीरः मधुरश्च आकारो यस्य तम्। आवक्षःस्थललम्बमानकूर्चोच्चयम्—आवक्षस्थलम् = वक्षस्थलमभिव्याप्य लम्बमानः = उच्चः दीर्घः कूर्चसञ्चयः=श्मश्रुराशिः, यस्य तम् इति उभे सिन्धुवादविशेषणे। परिवेषणसंरम्भव्यग्रपरःशतभृत्यवर्गम्—परिवेषणस्य संरम्भे = उद्योगे व्यग्रः = व्याकुलः यः परः शतः=शताधिकः भृत्यवर्गः तम्। ससाध्वसकम्पम्—साध्वसस्य = भयस्य कम्पेन सहितमिति क्रियाविशेषणम्।

(पृष्ठ ५) असह्यदुःखसन्तानसम्पाताः—असह्यानां = सोढुमशक्यानां, दुःखानां = कष्टानां, सम्पाताः = परम्पराः तेषां सम्पातः = आक्रमणं यासु ताः महासिन्धुयात्रा इत्यर्थः।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथमा सिन्धुयात्रा

एषोऽहं यौवनावतारे व्यग्रमानसोऽभवम् इत्यन्वयः। एषः=पुरोदृश्यमानः, अहं=सिन्धुवाद इत्यर्थः। सिन्धुवादं विशिनष्टि—हापितात्मपित्र्यसम्पदाधिकः भागः—पितुरियं पित्र्या हापितः = व्ययीकृतः पित्र्याया =पैतृक्याः; सम्पदः= सम्पत्तेः अधिकः भागः येन सः। अनुतप्यमानः=कृतपश्चात्तापः। सिन्धुयात्रायै प्राचलम् इत्यग्रेणान्वयः। असकृत्= वारं वारं। याथार्थ्यं=वास्तविकताम्। विभावयन्= विचारयन्। गृहतत्परिकरादि—गृहं तत्परिकराः= तत्समूहश्च आदौ यस्मिन् एवंभूतं वस्तुजातमित्यर्थः।

(पृष्ठ ६) सञ्चितकिञ्चिद्धननिचयः—सञ्चितं यत्किञ्चित् धनम्, तस्य निचयो = राशिः येन सः तेन धननिचयेन। क्रीतनानाविधपण्यगणः—क्रीतः नानाविधानां पण्यानां = विक्रेयवस्तूनां गणः= राशिः येन सः। सांयात्रिकैः=पोतवणिग्भिः, 'सांयात्रिकः पोतवणिक्' इत्यमरः। समुदितानां गमनं द्वीपान्तरगमनं वा संयात्रा। सा प्रयोजनमस्य। 'तदस्य प्रयोजनम्' इति ढञ्। समुद्रयात्राप्रवणमानसः—समुद्रयात्रायां प्रवणं मानसं यस्य सः। सिन्धुरोधस्थितम्—सिन्धोः = समुद्रस्य रोधसि=तटे स्थितम् इति वासरपुर विशेषणम्। अन्तरीपाणि = द्वीपानि। द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीपमित्यमरः। अह्नि = दिने। घस्रो दिनाहनीत्यमरः। अवरुरुक्षून् = अवरोढुमिच्छून्।

(पृष्ठ ७) अनुत्प्रेक्षणीयम्=अकल्पनीयम्। अनेकगव्यूतिपरिणाहः—अनेकाः गव्यूतयः परिणाहो यस्य सः। 'गव्यूतिः स्त्रीक्रोशयुगम्' इति। परिणाहो विशालता इति चामरः। असंख्यक्रोशयुगविशालतासम्पन्नः स महाग्राह आसीत् इत्यर्थः। पोतसम्प्राप्तये = यानपात्रं तु पोतः इत्यमरः। प्लवान्= लघुनौकाः।

(पृष्ठ ८) प्रत्यूषे=उषःकाले। दुरारोहरोधस्तटम्=प्रयाससाध्यारोहण-तटम्। इदमन्तरीपविशेषणम्। अत्र रोधस्तटशब्दयोःनदीकूलार्थकतया पर्याय-वाचित्वात् तटशब्दे भूम्यर्थे लाक्षणिकः। गभस्तिमालिनि—गभस्तीनां = किरणानां माला अस्यास्तीति गभास्तिमाली तस्मिन् सूर्ये। क्षुत्क्षामकण्ठः—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्षुधा क्षामः=कृशः कण्ठो यस्य सः। जग्ध्वा=भक्षयित्वा। शाद्वलं=तृणभूमिम्। स्थूणायां=स्तम्भे 'स्थूणास्तम्भोऽपि वेश्मनः' इत्यमरः। संयताम्=बद्धाम्। वडवाम्=अश्वाम्।

(पृष्ठ ९) श्रुतमुदन्तः— श्रुतः मम (सिंधुवादस्य) उदन्तः = वृत्तांतो येन सः। 'वातप्रवृत्तिर्वृत्तान्त उदन्तः स्यात्' इत्यमरः। गह्वरम्=गुहाम् अहमिव तेऽपि=यथाहं तेषां संदर्शनेन विस्मितः तथैव तेऽपि मां विलोक्य विस्मितास्तस्थुरित्यर्थः। निर्जनोद्देशे = मनुष्यरहितस्थाने। प्रतिहायनं = प्रतिवर्षम्। सैन्धवेन = समुद्रोद्भवेन। वाजिना = अश्वेन। उपयान्ति = प्राप्नुवन्ति।

(पृष्ठ १०) दिष्ट्य=भाग्येन उपरतः=मृतः विद्रावितः=कारितपलायनः। अन्येद्युः=अन्यस्मिन् दिवसे। अन्यशब्दात् एद्युस् प्रत्ययः। द्रविणविसरेण=धनराशिना। सार्थवाहैः=वणिग्जनैः 'वैदेहकः सार्थवाहो नैगमो वणिजो वणिक्' इत्यमरः। प्रतिजिगमिषया—प्रतिगन्तुमिच्छा प्रतिजिगमिषा तया = प्रतिनिवर्तनेच्छया। उपचितपरिचयः—उपचितः = वृद्धिनीतः परिचयो येन सोऽहं सिन्धुवाद इत्यर्थः।

(पृष्ठ ११) प्रत्यहं=प्रतिदिनम्। अयापयम्=अक्षपयम्। अनेहसि=काले 'कालोदिष्टोऽप्यनेहापि' इत्यमरः। अवतारितपोतावरोधनकीलेषु-अवतारितानि पोतावरोधनाय कीलानि यैः तेषु। पोतवाहेषु = समुद्रयानानां नियामकेषु, 'नियामकाः पोतवाहाः' इत्यमरः। समुद्गकान् = सम्पुटकान्, 'समुद्गकः सम्पुटकः' इत्यमरः।

(पृष्ठ १२) अधिरूढपूर्वस्य—पूर्वं अधिरूढः अधिरूढपूर्वः तस्य सिन्धुवादस्येत्यर्थः। रिक्थहरः—रिक्थं हरतीति रिक्थहरः = दायग्राही। पुत्रादिः। वसु = धनम्। अलीकपरता = असत्यनिष्ठा।

(पृष्ठ १३) सोल्लुण्ठम्=सोपहासम्। भूतार्थं=घटितं वास्तविकं वृत्तम्। प्रत्यभिजानन् = परिचिन्नन् प्रतिभयाम्—प्रतिगतं भयं अस्याः ताम् = भयावहाम्। प्रत्याचख्यौ = निषेधितवान् भूयः = पुनः पण्यविनिमयेन—तुल्यद्रव्यदानद्वारा द्रव्यान्तरग्रहणं विनिमयः तेन। संगृहीतचन्दनकर्पूर-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मरिचमुखतत्रत्यवस्तुनिचयः— चन्दनं कर्पूरंमरिचञ्च मुखं प्रधानं यस्य सः चन्दनकर्पूरमरिचमुखः। संगृहीतः चन्दनकर्पूरमरिचमुखः तत्रत्यः = मिहिर-महीपतेद्वीपोद्भवः वस्तुनिचयो येन सोऽहं सिन्धुवाद इत्यर्थः। वर्त्मनि=मार्गे एत्य=आगत्य।

(पृष्ठ १४) समुपार्जितलक्षणाधिकदीनारः—समुपार्जिताः लक्षाधिकाः दीनाराः येन सः। दीनारः तन्नामकसुवर्णमुद्राविशेषः।

द्वितीया सिन्धुयात्रा

(पृष्ठ १५) यात्रायै निरगमम् इत्यन्वयः। प्रथमयात्रोत्तरम्=प्रथम-सिन्धुयात्राया अनन्तरम् निरुद्यमावस्थानेन—निरुद्यमं=उद्योगरहितं यत् अव-स्थानं=वासः तेन। द्वीपं विशिनष्टि—महीरुहैः=वृक्षैः समाच्छन्नं=कृतसंच्छा-दनम्। अशनजातम् = भोज्यसामग्रीम्।

(पृष्ठ १६) अनुप्रपन्नः = सम्प्राप्तः अवसितजीविताशः—अवसिता=समाप्ता जीवितस्य = जीवनस्य आशाः = अभिलाषा यस्य सोऽहं सिन्धुवाद इत्यर्थः। आरात्=समीपे, 'आराद् दूरसमीपयोः' इत्यमरः। अवदातं=धवलम् बुभुत्सुः=द्रोद्धुमिच्छुः। तत्सकाशं=तस्य वस्तुनः समीपम्। उपासरम्=अहं उपसृतवान्।

(पृष्ठ १७) भास्वति=सूर्ये। दुर्दिन इव=मेघाच्छन्नदिवस इव। अति-महापरिणाहं=विशालतमम्। निरधारयम्=अहं निश्चितवान्। विटपिस्कन्ध-विशङ्कटनखपञ्जरः—विटपिनां=वृक्षाणां, स्कन्धाः = शाखाः इव विशङ्कटो नखपञ्जरो यस्य। 'विशङ्कटं पृथु बृहद् विशालम्' इत्यमरः। सः= पूर्वोक्तः। महाशकुन्तः=विशालपक्षी। उत्पतिष्यतः=उड्डयनं करिष्यतः, निशीथिनी=रात्रिम्। समुह्यमानः = धार्यमाणः।

(पृष्ठ १८) आशीविषम्=अजगरम्। दन्तावलनिगरणपर्याप्तायाभिमुख-कन्दराम्—दन्तावलाः=हस्तिनः 'दन्ती दन्तावलो हस्ती'त्यमरः। तेषां निगरा-णायाऽपि पर्याप्तानि=सावकाशानि, आयामानि=विस्तृतानि मुखानि कन्दरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इव येषां तान् इति अजगरविशेषणम् उपमालङ्कारः। साध्वसाधीनः=भयपरवशः। पूर्वोपवर्णिततत्सहजवैरिपतत्रिभयविह्वलाः—पूर्वं उपवर्णिताः तेषां = अजगराणां सहजवैरिणः = अकृत्रिमशत्रवः ये पतत्रिणः = गरुडपक्षिणः तेषां भयेन विह्वलाः = व्याकुलाः इति अजगर-विशेषणम्। निगूढा=गुप्ताः।

(पृष्ठ १९) देवखातम्=गुहाम्, 'देवखात विलेगुहा' इत्यमरः। आशीविषफूत्कारजनितसाध्वसोद्वेगः—आशीविषाणां=सर्पाणां, फूत्कारैः जनितौ= उत्पन्नौ साध्वसं = भयम्, उद्वेगः = व्याकुलता च यस्य स इति सिन्धुवादविशेषणम्। दिनकृति = सूर्ये, कालसर्पेषु = अजगरेषु अनुदितोत्साहलेशः = निरुत्साहः अभितः=सर्वतः।

(पृष्ठ २) उपत्यकायां=पर्वतस्य आसन्नभूमौ 'उपत्यकाऽद्रेरासन्नाभूमिः' इत्यमरः। कुलायान्=नीडान्। विद्राव्य=उड्डयनं कारयित्वा। स्थविष्ठः= अतिशयेन स्थूलः। समेताः=समागताः। मद्धैर्यसाहसाध्यवसायान्—मम= सिन्धुवादस्य धैर्यं=साहसम्, अध्यवसायं=उद्योगञ्च।

(पृष्ठ २१) सम्भावितः=सत्कृतः। क्षपाम्=रात्रिम्। अतिवाह्य=व्यतीत्य। घोणाग्रवर्तिपृथुशृङ्गबलात्—घोणाग्रवर्त्ति=नासिकाग्रे स्थितम्, 'घोणा नासा च नासिका' इत्यमरः। यत् पृथु=विशालम् शृङ्गम् तस्य बलात्=सामर्थ्यात्। करीन्द्रविदारणक्षेपणसमर्थैः—करीन्द्राणां = गजराजानां विदारणे = उत्पाटने क्षेपणे च समर्थैः, गण्डकैः=गेंडा इति ख्यातैः। खड्गिभिः 'गण्डके खड्गखड्गिनौ' इत्यमरः।

●

तृतीया सिन्धुयात्रा

(पृष्ठ २२) विस्मृतयात्राद्वयक्लेशभरः—विस्मृतः यात्रयोः द्वयस्य क्लेशभरः येन सः (सिन्धुवादः)। अविगणितसिन्धुयात्रासुलभकष्टातिशयसम्भवः—अविगणितः सिन्धुयात्रयोः सुलभः कष्टातिशयस्य सम्भवः येन सः (सिन्धुवादः)। इभ्यैः = धनिभिः, 'इभ्य आढ्यो धनी स्वामी'त्यमरः। अन्तरान्तरा = मध्ये मध्ये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(पृष्ठ २३) भीष्मः=भयङ्करः। प्रभञ्जनः=वात्याचक्रम्। नियतेः=भाग्यस्य आसन्नानि = समीपस्थितानि। कचाचितशरीरैः=लोमपूर्णदेहैः। निशम्य = श्रुत्वा। घोराकृतिं=भयङ्कराकारम्। वन्यमानुषव्रजम्=अरण्यवासिजनसमूहम्। अनुपदं=पश्चात्। त्वरया=वेगेन। दीर्घलोहितलोमसंच्छन्ननिखिलतनुम्—दीर्घैः लोहितैः=रक्तैश्च लोमभिः=तनूरुहैः संच्छन्ना=आच्छादिता निखिला=सम्पूर्णा तनुः=शरीरं यस्य तम्। पर्यवेष्टयन्=परिवारितवन्तः।

(पृष्ठ २४) तच्छन्दानुरोधेन—तेषां=वन्यमानुषाणां छन्दानुरोधेन=अभिप्रायानुरोधेन, 'अभिप्रायच्छन्द आशयः' इत्यमरः। आयतबाह्याङ्गणप्रदेशं—आयतः=विस्तृतः, बाह्यः अङ्गणप्रदेशः यस्य तम् इति त्रीणि प्रासादविशेषणानि। गिरिकूटोपमम्=पर्वतशिखरसदृशम्। मांसश्रपणाय=मांसं पाचयितुम्। आलेख्योल्लिखिता इव=चित्रचित्रिता इव। साध्वसावलुप्तधृतयः—साध्वसेन=भयेन अवलुप्ता=नष्टा धृतिः=धैर्यम् येषां ते। वेपथुस्खलच्चरणाः—वेपथुना=कम्पेन 'अथ वेपथुः कम्पः' इत्यमरः। स्खलन्तः=पतन्तः चरणाः = पादाः येषां ते=वयं सार्थवाहाः।

(पृष्ठ २५) चण्डदीधितौ—चण्डाः दीधितयः किरणाः यस्य तस्मिन्=सूर्ये तालोच्छ्रयं=तालवृक्षवत् उन्नतम् इत्युपमा। भालस्थलज्वलदेकलोहितचक्षुषम्—भालस्थले=ललाटप्रदेशे, ज्वलत्=दीप्यमानं एकं लोहितं=रक्तं चक्षुः=नेत्रं यस्यतम्। व्यायतदंष्ट्रम् व्यायता=दीर्घा दंष्ट्रा यस्य तम्। तुरङ्गमायतमुखम्—तुरङ्गवत्=अश्ववत्, आयतं=दीर्घं,मुखं=वदन यस्य तम्। इत्युपमा। आवक्षःस्थलप्रलम्बमानाधरम्—आवक्षःस्थलं = वक्षस्थलमभिव्याप्य, प्रलम्बमानः अधरः यस्य तम् दन्तावलश्रवसम् दन्तावलस्येव=गजस्येव श्रवसी= कर्णौ यस्य तम् इत्युपमा। कङ्कनिशितनखाग्रम्-कङ्कस्येव=तन्नामकपक्षिविशेषस्येव, निशिताः=तीक्ष्णाः नखाग्राः यस्य तम् इत्युपमा। परुषतरम्=अत्यन्त कर्कशं इति पुरुषविशेषणानि। साकूतम् = साभिप्रायं, निर्वर्णयन्=निरीक्षणं कुर्वन्। शौनिक इव मेषशावकमित्युपमा। शूना = प्राणिवधस्थानं प्रयोजनमस्येति। शौनिकः = वधिकः। कुन्तेन = भल्लेन सपक्षबाणविद्धं कृत्वा, सपत्राकृत्य।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैश्वानरम् = अग्निम् । शूलीकृत्य = लौहादिकीलकेन वेधनं कृत्वा जघास = भक्षयामास ।

(पृष्ठ २६) भीतिविहस्तान्–भीत्या = भयेन, विहस्तान्=व्याकुलान् 'विहस्त व्याकुलौ समौ' इत्यमरः । निवर्हणाय=मारणाय कर्मण्यं=कर्मयोग्यम् प्रत्यावर्तामहि=परावर्तिताः स्मः । कवलीकृत्य=ग्रासं विधाय भक्षयित्वेत्यर्थः अशेत=निद्रां चकार । अन्धतामिस्रपातबिभीषिकया–तमिस्रेव तामिस्रम् = अन्धकारपरम्परा । अन्धयतीति अन्धम् अन्धंतामिस्रं यत्र तत् अन्धतामिस्रम्= तन्नामा नरक विशेषः ।

(पृष्ठ २७) गूढं=गुप्तम् तदुपयोगौपयिकम्—तेषां = काष्ठफलकानां उपयोगाय = प्रयोगाय, औपायिकम् = उपयुक्तम् पुरुषादहतकस्य = अधमस्य नरभक्षकस्य, सम्भाव्य=अनुपालयन्तः=प्रतीक्षां कुर्वाणाः । पर्यकल्पयाम= अरचयाम । जग्ध्वा–भक्षयित्वा ।

(पृष्ठ २८) भृशम् = अत्यन्तम् । तुद्यमानः=पीड्यमानः । वन्ध्यश्रमः= निष्फलपरिश्रमः । सिन्धुरोधोनिगूहितं = समुद्रतटे गुप्तरूपेण विन्यस्तम् । क्षेपणीभ्यां = नौकाचालनदण्डाभ्यां ।

(पृष्ठ २९) तरसा = वेगेन । अस्यन्त = क्षिपन्तः । न्यगिलत् = कवलीचकार । मृद्वीकाः = द्राक्षाफलानि ।

(पृष्ठ ३०) नराशनात् = मनुष्यभक्षिपुरुषात् । तत्स्थजनावधानम्— तत्र तिष्ठन्तीति तत्स्थाः = प्रवहणस्थिताः ये जनाः तेषामवधानम् ।

(पृष्ठ ३१) विशीर्णं = गलितम् । मन्नेपथ्यं—मम = सिन्धुवादस्य वसनम् । वाणिज्यया = व्यापारेण द्रविणं = धनम् प्रस्थातुकामः = प्रस्थातुं कामयत इति । आरूढपूर्वस्य–पूर्वं आरूढः आरूढपूर्वः, तस्य । तद्दायादेभ्यः– दायं = विभाजनीयं धनम् आददते = गृह्णन्ति ये ते दायादाः = पुत्रादयः उत्तराधिकारिणः तस्य वणिक्च्छ्रेष्ठस्य ये दायादाः तेभ्यः ।

(पृष्ठ ३२) अपसृतं = पलायितम् । महिष्ठान् = स्थूलान् । कमठान्=

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कच्छपान् समुपार्जितापरिमितवसुविसरः—समुपार्जितः अपरिमितः वसुविसरः = धनराशिः येन सोऽहं सिन्धुवाद इत्यर्थः ।

—*—

चतुर्थी सिन्धुयात्रा

(पृष्ठ ३३) व्युत्थितसमुद्रयात्रोत्कटोत्साहः—विशेषेण उत्थितः समुद्रयात्रायाः उत्कटः उत्साहो यस्य सोऽहं सिन्धुवाद इत्यर्थः । उच्चावचानि = नानाप्रकाराणि 'उच्चावचं नैकभेद'मित्यमरः । 'वस्तु' विशेषणमिदम् ।

(पृष्ठ ३४) पौरस्त्यान्तरीपान् = पुरो भवाः पौरस्त्याः अन्तः मध्ये गता आपो येषां ते अन्तरीपाः पौरस्त्याः—पूर्वदिक्भवाः ये अन्तरीपाः = द्वीपाः 'द्वीपोऽस्त्रियामन्तरीप'मित्यमरः । प्रायाम् = अहं सिन्धुवादः प्रयाणं कृतवान् । समुह्यमानः = धार्यमाणः । प्रस्रवणाम्भः = उत्सजलम् ।

(पृष्ठ ३५) अनायिषि = नीतः । अभुञ्जत=अभक्षयन् अभ्यवाहरम्=अभक्षयम । पुरुषादापसदाः = नीचाः मनुष्यभक्षिणः । अकामयन्त=इच्छन्तिस्म । आमिषताम् = भोज्यताम् ।

(पृष्ठ ३६) आसत्तिं = सन्निधिम् ।

(पृष्ठ ३७) अधिकृतान्=अधिकारिणोजनान् । प्रत्यहं = प्रतिदिनम् । अपर्याणान् = पल्ययनरहितान् अवल्गान्=मुखरज्जुरहितान् अपादग्रहणीकान्= पादारोहणरहितान् ।

(पृष्ठ ३८) प्रदर्शितादर्शः—प्रदर्शिताः आदर्शाः = प्रतिकृतयः येन सोहम् = सिन्धुवाद इत्यन्वयः ।

(पृष्ठ ३९) प्रकृतयः = पौरश्रेणयः 'प्रकृतयः पौराणां श्रेणयोऽपि चे'त्यमरः । प्रत्याख्येयं = निषेधितव्यम् कृतदारपरिग्रहम्—कृतः विहितः दाराणां = भार्यायाः 'भार्या जायाऽथ पुंभूम्नि दाराः'इत्यमरः । परिग्रहः = स्वीकारो येन तम् । विवाहितमित्यर्थः । प्रत्यादेष्टुम् = निराकर्तुम् । अपसरणावरं = निर्गमनवेलाम् ।

(पृष्ठ ४०) उपरतया = मृतया । समुदाचारः = देशाचारः । ईदृश-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नृशंसाचारश्रवणसञ्जातसाध्वसे—ईदृशः नृशंसः = क्रूरः 'नृशंसो घातकः क्रूरः' इत्यमरः। यः आचारः तस्य श्रवणेन सञ्जातं साध्वसं = भयं यस्य तस्मिन्। मयि = सिन्धुवादे। शिखरिणः = पर्वतस्य।

(पृष्ठ ४१) उपत्यकाम् = नीचैरासन्नभूमिम् 'उपत्यकाऽद्रेरासन्नाभूमि'रित्यमरः। तदनु = तत्पश्चात्। अयासिषुः = गतवन्तः। दलतीव= विदीर्यत इव।

(पृष्ठ ४२) यदि देवीं अतिजीवेयम् = यदि देव्या अनन्तरं जीवेयम् मम पूर्वं यदि पत्नी म्रियेत। आमयेन=रोगेण, 'उपतापरोगव्याधिगदामयाः' इत्यमरः। दिष्टान्तं = मृत्युम् 'दिष्टान्तो प्रलयोऽत्यः अन्तो नाशो द्वयोर्मृत्युः' इत्यमरः।

(पृष्ठ ४३) शोकार्तरावभरितदिशावकाशः—शोकार्तरावैः = दुःखभयाक्रोशध्वनिभिः, भरिताः = पूरिताः, दिशानां, (अयं भागुरिसम्मतआबन्तप्रयोगः) अवकाशाः=स्थानानि येन सोऽहं सिन्धुवादः। पितृसदनम्= श्मशानम्। अनीये=नीतः। गुहां विशिनष्टि—निरन्तरविकीर्णशवसहस्रपूतिगन्धाम् - निरन्तरं= व्यवधानरहितं विकीर्णानां = प्रक्षिप्तानां शवसहस्राणां पूतिगन्धः = दुर्गन्धः, यस्यां ताम्। आसन्नमरणकतिपयजीवितनिखातजनमन्दनिःश्वासश्रवणसन्दारितहृदयाम्—आसन्नमरणाः = मृतप्रायाः कतिपये जीविताः = प्राणवन्तः निखाताः = भूमिसात्कृताः ये जनाः = मानवाः तेषां मन्दनिःश्वासस्य श्रवणेन सन्दारितम् = भेदितम् हृदयं यया ताम्। अनुत्सृष्टजीविताशः = न उत्सृष्टाः अनुत्सृष्टाः = अपरित्यक्ताः जीवितस्य आशा येन सोऽहम् पाथेयकम् = मार्गभोज्यान्नम्।

(पृष्ठ ४४) संस्थितं = मृतम्। 'न नृशंसहृदयः तथापि जीवितस्नेहेन नृशंसहृदयीकृतः' इति अभूततद्भावे च्वि प्रत्ययः। शिलाघातम्—शिलायाः आघातः यस्यां क्रियायाम् इति क्रियाविशेषणम्। तत्पाथेयापहरणायत्तजीवितः- तेषां मया निहितानां स्त्री-पुरुषाणां पाथेयानामपहरणेन आयत्तं= स्वाधीनं जीवितं यस्य सोऽहम्। अपसरदिव = निर्गच्छिदिव। ध्वान्तेन =

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्धकारेण। अनुपलक्ष्यमाणविशेषम्—अनुपलक्ष्यमाणः = न प्रतीयमानः विशेषो रूपादिर्यस्य तत् वस्तु।

(पृष्ठ ४५) अवाक्शिराः = मस्तकमधःकृत्वा। जलौकसं = जल-निवासिनं प्राणिनम्। निरधारयम्=अहं निर्णीतवान्। गृहान्=निजसदनम्, 'गृहाः पुंसि च भूम्न्येव' इत्यमरः।

—o—

पंचमी सिन्धुयात्रा

(पृष्ठ ४६) सिन्धुयात्रासाहसांगीकारात्—सिन्धुयात्रायाः = समुद्र-यात्रायाः साहसस्य अंगीकारात् = स्वीकारात्। भृतके = भाटकेनोपभोग्ये 'पोते' इत्यस्य विशेषणम्। सञ्चितवाणिज्योपयोगिवस्तुनिकरः—सञ्चितः= एकत्रीकृतः वाणिज्यस्य = व्यापारस्य उपयोगिनां वस्तूनां निकरः = समूहः येन।

(पृष्ठ ४७) चञ्चुपुटोद्घाटितमुखान्तरविनिर्गच्छन्नवशावकम्—चञ्चुपुटाभ्यां उद्घाटितं यत् मुखं तस्य अन्तरात् = मध्यात् विनि-र्गच्छन् = निष्क्रामन्, नवः शावकः यस्मिंस्तत्। अण्डजाण्डम्—अण्ड-जस्य = पक्षिणः अण्डम्। विशीर्णशुष्कपर्णसमेधिते—विशीर्णैः = विकीर्णैः शुष्कैः पर्णैः = पत्रैः समेधिते = प्रज्वलिते। अनले = अग्नौ। तेषु = मत्सह-चरेषु। अवसिताभ्यवहारेषु—अवसितः = समाप्तः अभ्यवहारः = भोजनं येषां एवंभूतेषु सत्सु। नभसि = आकाशे। विज्ञातैतच्छकुन्तानुभावः—विज्ञातः एतयोः = पूर्वोक्तयोः शकुन्तयोः=पक्षिणोः शावकस्य मातापित्रोः अनुभावः= आशयः येन स इति पोताध्यक्षः इत्यस्य विशेषणम्। अन्ववन्नात् = आग्रहं कृतवान्।

(पृष्ठ ४८) अपर्याप्तोपवेशनावकाशम्—अपर्याप्तः= अत्यन्तं परिमितः उपवेशनाय अवकाशः=स्थानम् यत्र तत् इति फलकविशेषणम्। शलाटुभिः= अपक्वैः 'आम्रे फले शलाटुः स्यादि'त्यमरः। इदं फलविशेषणम्। प्रास्रवणम्—प्रस्रवणस्य इदं प्रास्रवणम् = जलप्रवाहादिकम्। एकाक्यवस्थानभयपरवश-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तया—एकाकि यत् अवस्थानं, तस्य भयेन या परवशता = पराधीनता तया। विच्छिन्नप्रगाढनिद्रासुखः—विच्छिन्नं प्रगाढं निद्रासुखं यस्य सः।

(पृष्ठ ४९) गभस्तिमालिनी—गभस्तीनां = किरणानां माला = पंक्तिः अस्यास्तीति गभस्तिमाली = सूर्यः तस्मिन्। काष्ठासु = दिक्षु, 'दिशस्तु ककुभः काष्ठाः' इत्यमरः। प्राणमम् = अहं प्रणामं कृतवान्। फलावचिचीषया—अवाचिनोतुमिच्छा अवचिचीषा, फलानां अवचिचीषा = फलचयनेच्छया। स्थविरं = वृद्धं। उपासदम् = अहं प्राप्तवान्। ईरितः = प्रेरितः।

(पृष्ठ ५०) आर्षभाजिनकर्कशचर्मावृताभ्याम्—ऋषभस्येदं आर्षभं = वृषभसम्बन्धि, 'ऋषभो वृषभो वृषः' इत्यमरः। एवंभूतं यत् अजिनम् (चर्म) तद्वत् कर्कशं यत् चर्म तेन आवृताभ्याम् इति पादविशेषणम्। उपमालंकारः। प्रणुद्यमानः = प्रेर्यमाणः पशुमिव चलितुम् माम् इति शेषः। आयततमाम् = अत्यन्तविशालां। तुम्बीम्। संशोष्य = मार्जयित्वा।

(पृष्ठ ५१) विलोकितमदवस्थापरिवर्तनेन—विलोकितं मम = सिन्धुवादस्य अवस्थायां परिवर्तनं येन तेन। तेन = पूर्वोक्तेन। जरता = वृद्धेन। अधिशिलम्—शिलायां अव्ययीभावः। तरसा=वेगेन। पेयमधुरजलसंजिघृक्षया—संगृहीतुं इच्छा संजिघृक्षा, पेयस्य मधुरस्य जलस्य या संजिघृक्षा तया।

(पृष्ठ ५२) प्रस्तरमयगृहावलीसंकुलम्—प्रस्तरमयानि = पाषाणनिर्मितानि यानि गृहाणि तेषां आवलीभिः—पंक्तिभिः संकुलं = व्याप्तम्। पत्तनं = नगरम्। गोणीं = शाणीपर्यायं, धान्याधारवस्त्रविशेषणम्, 'बोरा' इति भाषायाम्) अभ्रंकषैः = गगनचुम्बिभिः। अतिश्लक्ष्णतया = अतिचिक्कणतया। दुरारोहस्कन्धैः—दुरारोहशाखाभिः इति नारिकेलतरुविशेषणानि। समासीदाम = वयं प्राप्ताः। प्लवंगमान् = वानरान्।

(पृष्ठ ५३) प्रत्याजिघांसया = प्रतिहन्तुमिच्छया। प्रत्यावर्तिषि=अहं प्रतिनिवृत्तः।

—*—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठी सिन्धुयात्रा

(पृष्ठ ५४) पोताध्यक्षं विशिनष्टि—सम्भ्रान्तः = सन्त्रस्तः । क्षिप्त-शिरस्त्राणः—क्षिप्तं शिरस्त्राणं येन सः । उल्लुञ्चितश्मश्रुः—उल्लुञ्चितम्= उत्पाटितं श्मश्रु येन सः ।

(पृष्ठ ५५) सिन्धुरयेण=सिन्धुवेगेन (समुद्री तूफान से) । ऊह्यमानाः= धार्यमाणाः । विशालमुख्यां—विशालं मुखं यस्याः तस्यां । कन्दरायां = गुहायाम् । महीध्रं=पर्वतम् 'महीध्रे शिखरिक्ष्माभृदाहार्यधरपर्वताः'इत्यमरः ।

(पृष्ठ ५६) उत्प्रेक्षमाणः = सम्भावयन् । तटिनीं = नदीम् । उपरितन-शिलास्वाहन्यमानशीर्षः = गुहाया ऊर्ध्वभागे वर्तमानाभिः शिलाभिस्ताडित-शीर्ष इत्यर्थः ।

(पृष्ठ ५७) स्रवन्त्याः = नद्याः । संयतमदीयाश्रयफलके—संयतं मदीयं आश्रयफलकं यत्र तस्मिन् । तटोपकण्ठे = तीरनिकटे । कुल्याभिः=वारिप्रणा-लिकाभिः । 'कुल्यावारिप्रणालिके'ति धरणिः ।

(पृष्ठ ५८) अभिष्टुत्य = अभिनन्द्य । अन्वरुन्धन् = अनुरोधं कृत-वन्तः । तुरङ्गमम् = अश्वम् ।

(पृष्ठ ५९) तनुतां=स्वल्पताम् । समैहे=अहमभिलषितवान् । व्यत्या-पयम्=अक्षपयम् । विषुवरेखा=भूमध्यरेखा । यस्यां रात्रिन्दिवं समः कालः ।

(पृष्ठ ६०) कुरुविन्दचषकं = पद्मरागमणिनिर्मितं पानपात्रम् । करि-दन्तान् = गजदन्तान् । प्राभृतीकर्तुम्=उपहारीकर्तुम् । प्राभृतः = उपहारः । प्राभृतं तु प्रदेशनम् । उपायनमुपग्राह्यमुपहारः'इत्यमरः ।

—०—

सप्तमी सिन्धुयात्रा

(पृष्ठ ६१) परिणतावस्थताम्—परिणता अवस्था परिणतावस्था तां = वृद्धावस्था मित्यर्थः । निरचिनवम् = अहं निश्चयं कृतवान् । दिदृक्षते= द्रष्टुमिच्छति ।

(पृष्ठ ६२) अशनिपातेनेव तेन तद्वचसे'त्यत्र उत्प्रेक्षा । ईष्टे = सक्षमो भवति । क्लेशयितास्मि =पीडयिष्यामि ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(पृष्ठ ६३) एत्य=आगत्य । निष्प्रेत्यूहम्=प्रत्यूहो विघ्नः । विघ्नोन्तरायः प्रत्यूह' इत्यमरः । निर्विघ्नमित्यर्थः । प्रातिष्ठे = अहं प्रस्थानं कृतवान् ।

(पृष्ठ ६४) अस्मन्नेपथ्यम् = अस्माकं वेषम्, 'आकल्पवेषौ नेपथ्य' मित्यमरः । व्यक्रीणत = विक्रीतवन्तः । आढ्येन = धनिना, 'इभ्य आढ्यो स्वामी'त्यमरः । गहनम् = वनम् । उत्तुङ्गम् = उन्नतम् । वनस्पतिं=वृक्षम् । पादपं = वृक्षम् । जहि = मारय ।

(पृष्ठ ६५) बृहद्दन्तावलयूथम्—बृहतां = विशालानां दन्तावलानां= हस्तिनां यूथम्=समूहं । पुरः=अग्रे । सायकैः=बाणैः । विद्रुतेषु=पलायितेषु । निशामयितुं=श्रावयितुम् । काननम्=अरण्यम् । जिघृक्षतः=ग्रहीतुमिच्छतः । तत्पूतीभावं=दुर्गन्धवत्तया शीर्यमाणम् । 'पूतिगन्धस्तु दुर्गन्धः' इत्यमरः । दन्तिनः = गजान् । बृंहितैः = गर्जनैः । बृंहितं करिगर्जितमित्यमरः । मदारूढं—मया (सिन्धुवादेन) कृतारोहणम् । शाखिनं=वृक्षम् ।

(पृष्ठ६६) बंहिष्ठः=अतिशयेन बहुलः पुष्टः । 'प्रियस्थिर' (६-४-५७) इति साधुः । करेण=शुण्डया । प्रसभं=हठात् । 'गजहननान्मां निवारयितुमिवे'त्यत्र फलोत्प्रेक्षा । अह्ना=दिवसेन । अन्तिकं=समीपम् । प्रत्यागमम्=अहं प्रतिनिवृत्तवान् ।

(पृष्ठ ६७) दृष्टसमुन्मूलितमदाश्रयपादपः—दृष्टसमुन्मूलितः = सम्यगुत्पाटितः च मम = सिन्धुवादस्य आश्रयपादपः=आश्रयवृक्षः येन सः इति आढ्यवणिक्विशेषणम् । करियूथामिषतां—करियूथस्य = गजसमूहस्य आमिषताम् = भोज्यताम् । उपरतम् = मृतम् । दन्तावलदन्तनिर्घं = गजदन्तकोषम् । वन्यद्विपानां=आरण्यकगजानां ।

(पृष्ठ ६८) विसृक्ष्यामि=विसर्जनं करिष्यामि । पोतागमम्=प्रवहणस्य आगमनम् । विसृष्टभूरिद्विरददशनराशि.—विसृष्टः=समर्पितः, भूरिः=प्रचुरः, द्विरददशनानां=गजदन्तानां राशिः येन सः ।

(६९) निधातुं=स्थापयितुम् । सम्भाव्य=सत्कृत्य । स्वपरिश्रमोपचितां—स्वस्य परिश्रमेण । उपचितां=वृद्धाम् ।

(पृष्ठ ७०) प्रत्यहमिव=प्रतिदिनवत् । दौवारिकपदे=द्वारपालपदे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

...विश्वविद्यालय, लख...

...क्षा अधिसूचना

...की सूचना हेतु एतद् द्वारा निम्न...
...जा रहा है।

प्रश्नपत्रोंकी पुनपरीक्षाएं जिनमें अक्टूबर-...
...ओंकी अवधिमें व्यवधान पड़ चुके हैं, वि...
...री, १९७९ को कैनिंग हालमें केवल उन के...
...ए जहांकी परीक्षाओंमें व्यवधान पड़ चुके हैं, स...
२. उन अभ्यर्थियोंकी पुनर्परीक्षाएं, जो पारीमें ...
प्रश्नपत्रोंमें उपस्थित न हो सके; ११; १२ ए...
को केवल कैनिंग कालेज सेण्टरमें सम्पन्न होंगे

निम्नलिखित एल. एल. बी. प्रथम वर्ष,
प्रश्नपत्रोंकी परीक्षाओंकी तिथियां परिवर्ति...

प्रश्न-पत्र	पूर्व घोषित तिथि
१. एवीडेन्स एण्ड क्रिमिनल प्रोसीजर २. ला आफ क्राइम्स् एण्ड क्रिमिनल प्रोसीजर (प्राचीन पाठ्यक्रम)	१९–१–७९
ल. बी. इक्विटी मार्गेजेज आदि	२०–१–७९
ला आफ टार्ट्स	५–२–७९
इण्टर नेशनल ला	७–२–७९

...प्रातः ९ बजसे मध्याह्न १२
...कार्यक्रमानुसार प्रातः ८–...

...जनवरीको पूर्व अधि...
...एं अब २१; २८ ज...
...बजसे मध्या...

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज्ञातव्य है कि पंजाब नेशनल बैंक अधिकतम १५०० रुपये तक ऋण देता है जो अधिकांश ऋण लेनेवाले निर्धनोंकी दृष्टिमें गाय-भैंस खरीदने हेतु पर्याप्त नहीं है। उपर्युक्त अवसरपर सुना गया कि वे इतना कम ऋण लेकर क्या करेंगे? बैंकोंकी इस नीतिकोये निर्धन लोग असहयोगपूर्ण नीतिकी संज्ञा दे रहे हैं। इस अनुमंडलमें यह कार्यक्रम बहुत धीमा है।

मुजफ्फरपुर-पहलेजा यात्री बसमें लूट

(हमारे संवाददाताके)

मुजफ्फरपुर, १ ह्वं जनवरी। पथ परिवहन निगमकी मुजफ्फरपुर से पहलेजाघाट आ रही बसको लुटेरोंके दलने तुरकी ग्रामके निकट तमंचेका भय दिखाकर लूट लिया। लगभग तीसहजार रुपयेकी सम्पत्ति लूटे जानेकी खबर है।

लुटे यात्रियोंमें विधान परिषद के सदस्य श्री कृष्णचन्द्र चौधरी, प्रदेश युवक कांग्रेसके अध्यक्ष श्री अशोककुमार और नेपाल के एक अभियंता शामिल हैं।

शिक्षण संस्थानोंमें पुलिस तैनात

आरा, १० जनवरी। शिक्षण-संस्थानोंमें व्याप्त तनावकी स्थिति को देखते हुए सदर अनुमंडल पदाधिकारी श्री अनिलकुमार सिनहा ने महाविद्यालयोंमें दंडाधिकारी और पुलिसको प्रतिनियुक्त किया है। आ.स.

किया जायगा। यह [illegible] मामलेकी अंतिम अपीलतक होती रहेगी। मुकदमा लड़नेवाले आदिवासीकी इच्छापर या उनकी इच्छा नहीं व्यक्त करनेपर [illegible] और अनुभवी वकील नियुक्तकर मुकदमोंकी पैरवी करायी जायेगी तथा उन्हें अधिकाधिक प्रतिदिन २०) की दरसे फीस दी जायगी। साथ ही मुकदमोंकी पैरवीमें लगनेवाले अन्य खर्च भी दिये जायेंगे। परन्तु मुकदमा लड़नेवाले आदिवासीकी राशि नगद नहीं देकर उनकी ओरसे पैरवी करते समय खर्च किया जायगा। खर्चका लेखा जिला कल्याण पदाधिकारी तथा अनुमंडल कल्याण पदाधिकारीके कार्यालयमें रखा जायगा।

इस योजनान्तर्गत २,५०० आदिवासी लाभान्वित होंगे जिनमें से रांची तथा सिंहभूमि जिलोंमें क्रमशः साढ़े सात सौ और साढ़े सात सौ संथाल परगनामें ६०० तथा पलामू जिलेमें ४०० होंगे।

बाढ़ नियन्त्रण योजनाकी ८७० करोड़की योजना

(पटना कार्यालय)

पटना, १० जनवरी। राज्य सरकारने ८७० करोड़ रुपयेकी लागतसे "बाढ़ नियंत्रण योजना" तैयार की है।

उपर्युक्त सूचना देते हुए [illegible] राज्यमन्त्री श्री गजेन्द्रप्रसाद हिमांशु ने सोमवारको विधानसभामें बताया कि इस योजनाके अन्तर्गत [illegible] के निर्माण और बाढ़-पीड़ित अंचलों में नालेकी सफाई की जायगी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh